

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

زَا لِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الْمَا بِ (آل عمران- १३)

ये सपटुनिया की जुंढगी के सामान है,  
और अल्लाह के पास तो पहोत ही अरुध ठीकाना है.

# मोमिन का किंमती सरमाया

हिस्सा - १

धरमी, दीनी और धरलाही धरशादात,  
मौजूदा दौर के मिजअ के मुताबिक,  
धमान, यकीन और अहैसानी  
के इथत पैदा करनेका  
किंमती सरमाया

h मुरतिअह

(मप.) शम्सुल हक हाशीम  
यांग- ३८८ ४२१.  
जुल्ला- आसंघ. (गुजरात)

મોમિનકા કિંમતી સરમાયા-૧

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

زَالِكِ مَنَاعِ الْخَبْوَةِ الدُّنْيَا وَاللّٰهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الْمَآبِ (ال عمران- 13)

ये सभ दुनिया की छुटगी के सामान है.  
और अल्लाह के पास तो जहोत ही अच्छा हीकाना है.

# મોમિન કા કિંમતી સરમાયા

## हिस्सा - १

ઇલમી, દીની ઓર ઇસ્લાહી ઇશારાત,  
મૌજુદા દૌર કે મિજાઝ કે મુતાબિક,  
ઇમાન, યકીન ઓર અહેસાની  
કે ફીયત પેદા કરનેકા  
કિંમતી સરમાયા

\* ગુરત્તિબ \*

(મવ.) શમ્સુલ હક હાશીમ

ચાંગા-૩૮૮ ૪૨૧.

જુલ્લા- આણંદ. (ગુજરાત)

મોમિન કા કિંમતી સરમાયા હિસ્સા-૧

- મુરત્તિબ : મવ. શમ્સુલહક હાશીમ  
ઈશાઅત : અબ્બલ  
સકલોત (ગેજ) : ૧૭૯  
હદિયા :  
ટાઈપ સેટીંગ : ઈમેજ ગ્રાફિક્સ, આણંદ.

-:મીલનેકા પતા:-

મવ, શમ્સુલ હક હાશીમ  
મું-પો. ચાંગા-૩૮૮૪૨૧,  
જી. આણંદ(ગુજરાત)  
ફોન: ૯૯૨૫૫ ૪૨૩૨૦

किताब अेकनजर में

- (१) धमान और धस्लाम
- (२) धल्मे दीन
- (३) दीनी महारिस
- (४) भयअत और भिलाश्त
- (५) दीनी ह्अवत
- (६) नेक आमाल
- (७) यंह वसीयतें  
~~(८) सवाल - ज्वाभ~~
- (८) सवाल - ज्वाभ
- (९) अल्लाह का जिह
- (१०) हुआ
- (११) तौभा और धस्तिगक्षर
- (१२) हज्ज और उमरह
- (१३) सभर

## \* ध्वनतसलल (अरुडरुड) \*

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُولِكَ  
 وَصَلِّ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ  
 وَالْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ (ابن حبان)

उन सलल धीनी अडडललकी  
 डलडडत डें ँे अलुललड तअललल डे डुकडुु  
 डु डललललने और नडुडे उडुडु सैथधुनी  
 डललरत डुडुडडड सलुललुललडु अलडलडु  
 वसलुलडुकी डलडलडत और उरुवअे  
 डसललडुकी डैरवुडुडु डें अडनी और  
 तडलड अुललडे अलडड (अल.) डु  
 नललतडु डडुन डरते डे.

नुुध :- डुतलड डें डुुस डे अलुलल डु डस तरड डुडे.  
 डलसलल :- (स.अ.व.) सलुललुललडु अलडलडु वसलुलडु  
 (रधु.) रधुडुलुललडु अलुडु वरडु अलुडु.  
 (अल.) अलडलडुसललडु.  
 (र.अ.) रडडतुलुललडु अलडलडु.

-: કેહરિસ્ત :-

<b>(૧) ઈમાન ઓર ઈસ્લામ.....</b>	<b>૧૭</b>
- અરકાને ઈમાન.....	૧૭
- મુનોફિક.....	૧૭
- ઈમાન કે અલકામ.....	૧૭
- ઈમાન કે બાકી રહેને કી તદબીરે.....	૧૮
- ઈમાન ઓર ઈસ્લામ.....	૧૯
- ઈમાન કી હકીકત.....	૨૨
- ઈમાન કી અલામત.....	૨૪
- ઈમાન પર કાયમ રહેના.....	૨૫
- ખ્યાલ ઓર વસવસો કા અંતિબાર નહી.....	૨૬
- નજાત કે લીધે ઈમાન શર્ત હે.....	૨૬
- ઈમાનતમે લીખી હુદ ઈબારત.....	૨૬
<b>(૨) ઈલ્મે દીન.....</b>	<b>૨૮</b>
- ઈલ્મ કા નફા.....	૨૮
- ઈલ્મ બહોત બડી દૌલત હે.....	૨૮
- ઈલ્મ કા શોક.....	૨૯
- ઈલ્મ મકસદે હયાત.....	૨૯
- કિતાબોંકા એક નયા બદલ કોમ્પ્યુટર.....	૨૯
- ઈલ્મ સમેટ લીયા જાયેગા.....	૩૧
- સિફ ઈલ્મ ફઝીલત કી ચીઝ નહી.....	૩૨
- ઈલ્મ કી રૂહ.....	૩૪
- કામ કે તલબા.....	૩૬
- એક સદી પહેલે કી તહરીર.....	૩૭
- આલીમે દીન કી ફઝીલત.....	૩૮
- ઉલ્માએ રબ્બાની.....	૩૮
- ઉલ્મા કે અલ્કાબ.....	૩૮
- બુઝુર્ગોંકા ઈલ્મે દીન હાસિલ કરના.....	૩૯
- હાફિઝ કા મરતબા.....	૪૦
- ઈમામ કુદરી (૨.અ.).....	૪૦
- ઉલ્માએ દીન કા દુનિયાસે ઉઠ જના.....	૪૨
- મન્સબે ઈમામત.....	૪૩
- ઈમામત કે તકાઝે.....	૪૭

-: इहेरिस्त :-

(३)	दीनी महारिस.....	४८
-	महारिस की असल इल.....	४८
-	निसाबे तावीममें तब्दीवी का कजीया.....	५०
-	हुन्यवी और टेकनीकब तावीम की जरूरत.....	५३
-	हुन्यवी तावीम की आमेजीश.....	५५
-	सध्वाय लाउस.....	५६
-	पुप्ता उम्र.....	५८
-	दीनी हुन्यवी तावीम का इर्क.....	५८
-	दीनी तावीमी छंदारों की कीर्सेमें.....	६१
-	मस्ब उ देवबंद.....	६२
-	उल्माअे देवबंद की दीनी बिहमतें.....	६३
(४)	अयअत और जिलाइत.....	६४
-	शेअे का भीव भीवे तो.....	६५
-	इानी इिल्लाह बाकी बिल्वाह.....	६५
-	तसव्वुइ के चार सिलसीवे.....	६६
-	तसव्वुइ क्या छै?.....	६६
-	तसव्वुइ का इयद.....	६८
-	अयअत के सिलसीवे मे लिहायत और मश्वरे.....	६८
-	छंशाहाते सुइया अे किराम.....	७०
(५)	दीनी हअवत.....	७३
-	उसुवे तब्वीग.....	७३
-	अम्मेदारी.....	७३
-	हअवत-व-तब्वीग.....	७४
-	हअवत और उस्के इजाअंवल.....	७५
-	आहाले हअवत.....	७६
-	नसीफा का गसर.....	७७
-	दअ्य पुद्दा पररत.....	७८
-	गंदगत का मयदान.....	८०
-	उम्मत का गम.....	८१
-	पुराछंसे रोकना.....	८२
-	हअवत की डिकर.....	८८
-	मुलाकात का इयद.....	८९
-	हअवतका नइा न छोने के अस्बाब.....	८९

—: इहरिस्त :-

-	गेर आविम क्री तकरीर.....	८२
-	बंगला देशमें साजे़ीश.....	८३
-	ऐश का आपरी अंजम.....	८३
(६)	<b>नेक आमाव.....</b>	<b>८४</b>
-	नेक आमाव क्री तौकीक.....	८४
-	आमाव का अंजम.....	८४
-	नेक आमाव में ब्रह्मी करना.....	८०
-	गनीमत समझे.....	८७
-	कमाले ईमान के लीये अमल क्री बरूरत.....	८७
-	खिदायत के चिराग.....	८८
-	सडाभा (२.दी.) क्री पड़ेयान.....	८८
-	ईबाहत.....	८८
-	ईस्लाह क्री फ़िकर.....	१०२
-	ईस्लामी अहकाम.....	१०२
-	अल्लाह वाले.....	१०३
-	दीनी गिरावट.....	१०३
-	फ़िके आपिरत का नफ़ा.....	१०५
-	दीन के नाम पर दुनिया.....	१०५
-	ग़क़वतका अंजम.....	१०६
-	पुदा क्री तंभील.....	१०७
-	पांच अहम आमाव.....	१०८
-	शयतान के पंहरल दुश्मन.....	१०८
-	कोताही का अंजम.....	१११
-	रात क्री तन्हाईयां.....	१११
-	नमाजे़ ईस्तिस्काअ.....	११२
-	नमाज़में मस्नुन क़िराअत.....	११४
-	नमाज़ क्री पुबे़ीयां.....	११४
-	तअहीले अरकान.....	११४
-	ईस्तिप्पारह.....	११५
-	सब से ज़यादा ताक़त वर चीज़.....	११६
-	कुर्आन मज्जद से बगाव.....	११६
-	कुर्आन मज्जद क्री तिलावत क्री मुअमत.....	११७
-	ग़क़वत क्री निंद.....	११७
-	नुरानी वक़त.....	१२०

-: डेहरिस्त :-

(७) यंह वसीयतें.....	१२०
- अब्बाह तआवा की वसीयत.....	१२०
- नबीये करीम (स.अ.व.) की वसीयत.....	१२०
- उजरत अबुबक (र.दी.) की वसीयत.....	१२१
- उजरत उमर (र.दी.) की वसीयत.....	१२२
- उजरत उस्मानगनी (र.दी.) की वसीयत.....	१२२
- उजरतअली (र.दी.) की वसीयत.....	१२२
- उजरत एमाम अबु हनीफ़ह (र.दी.) की वसीयत.....	१२३
(८) सवाल जवाब.....	१३०
(८) अब्बाह का जिक्र.....	१३२
- अब्बाहसान उर वक़त मतबुअ ह्ये.....	१३३
- कारोबारमें मशगुल आदमी बी वकी बन सकताह्ये.....	१३४
- शयतान का अबह.....	१३५
- दुनिया की बका.....	१३५
- जिक्रके इजाएव.....	१३६
- खंएबी को गनीमत समझे.....	१३८
- सुब्ब शाम तस्बीह पढेना.....	१३८
- सबसे अस्था जिक्र.....	१४०
- इलानी बिमारीयों का एवाज.....	१४०
(१०) दुआ.....	१४२
- दुआ मोमिन का उथियार.....	१४२
- दुआ का सलारो.....	१४५
- दुआ से गइलत.....	१४५
- गलत दुआ.....	१४६
- ये दुआ बी करते रहे.....	१४७
- सप्त मौजू पर अजान देना.....	१४७
- बेसेनी के वक़त की दुआ.....	१४८
परमुन जिक्र और दुआया की किताब.....	१४८
(११) तोबा और एरिस्तंगार.....	१४८
- तोबा-ओ-नशुब.....	१५०
- तोबा की लकीकत.....	१५१
- तोबा की तौदीक.....	१५२
- एहीसे कुदसी.....	१५२

-: इहरिस्त :-

- आदमी का इम्तिहान.....	१५३
- तोबा के बाद.....	१५४
- नकरत करना हराम है.....	१५५
<b>(१२) हज्ज और उमरह.....</b>	<b>१५५</b>
- हज्ज के अर्थवत्वाह.....	१५५
- हज्ज के मकबुल.....	१५६
- हज्ज में लापरवाही.....	१५७
- हज्ज में जइलत से रोकना.....	१६०
- नकली हज्ज.....	१६१
- बडा उमरह.....	१६२
- गैरों को काबामें अने से रोकना.....	१६३
- पान अे काबा की निगरानी.....	१६४
<b>(१३) सअर.....</b>	<b>१६६</b>
- सअर का मतलब.....	१६६
- सअर अेक ईबाहत.....	१६७
- बडा बहवा आभिरत में.....	१६७
- सअर की तावीम.....	१६८
- सअर जरूरी.....	१६८
- दुनिया इम्तिहान की जग्या है.....	१७०
- मुश्कील के बाद आसानी.....	१७१
- बे सअरी बे अरकती.....	१७२
- तंगी का हल.....	१७३
- आभोशी की ताकत.....	१७४
- अरदाश्त का शायदा.....	१७४
- अमन का शायदा.....	१७५
- बीवी के सताने पर सअर का अअर.....	१७६
- बिमारीमें सअर का सवाब.....	१७६
- फोनेवाला पाता है.....	१७७
- मोमिन का मामला.....	१७८

--: छंशटि गिरामी :-

पिरिअल्लाह ररामि ररलीप

हामिंयू व मूसलियनू

दौरै हामि र ये प्रीटांग और हलैकटोविक  
मिडीया का दौरै ह, रेठाना धाम, अमलक  
और आमाकके पराण कके वाली और  
गुमराती इलाने वाली जेशुआर और छप  
रती हं और शायेय हो रलीहं.

एम हावातमें धान, धान की रिक्षाग  
के लिके धान मजामान की रक्षाया व  
तपलोग की मार अरमिच्छा ह और हस  
असह के लेरी नजर र ईके कथन, मुएरम  
मपसाना शम्सुल एक मंगल सारके (मी. म)  
ने हह मुपतासई किनायोके हह एकर  
सईएग का मुतालअह करके और लकी  
मरेनतसे ये मजाम और तपील किनाय  
भोमिन का किमती सरमाया तीन रिस्केमे

मुरतल इरमाह ह और किनाय की  
अरमिच्छा और एडाहय्य रिस्के नाम  
ही से पाबिह ह

आल्लर तयाला एकरा मपलान  
मुरतरम ही मरेनत की कुल इरमाय

-: ઇશદિ ગિરામી :-

સૌર ઉનકે લકમે સ્વકુએ મરિયર  
બનાયે સૌર સિગતા ચાંકો ઉમકે પાલકો કો  
તૌદીક સ્થળા દુરમા કર દમાવા, અમલાથી  
સૌર અમલા મિંદગી કે સિયે મુખાપાન સૌર  
મુકીર સાબિત દુરમાયે - આજાગ ચા રબલ  
ચાલમન

મલકર કમલક લમલમ  
લકકે દુલ મુકિર સુ  
ખાદમે લલમ; મરિયર, મંબુર  
ખાદમે દુગાવા : દામુલ લમુન કુદા ચરમા  
૧૨, મુન વેળ  
૧૫, મુખા. વલ્લા ૧૪૨૭ લિવર

-: ઇશદિ ગિરામી :-

**--: सय्यार्ध :-**

दुनियामें क्रोध आदमी अपनी गलती नहीं मानता. आदमी को मालूम नहीं कि एक वकत क्यामतका आनेवाला है. उस वकत वो अपनी गलती मानने पर मजबूर होगा. याहे वो जमानसे ये न कहे के मैं गलती पर था. भुद उसके आज उसके खिलाफ गवाही देंगे. और वो उनको रोक नहीं सकेगा.

**--: याद रखीये :-**

मैं किसी हालमें भुदकी पकड से बाहर नहीं. यही अहसास आदमीकी ईस्लाह की जन है. ईस्के जगैर कोई लकीकी ईस्लाह मुम्कीन नहीं.

भोमिन ईंसानोंके दरम्यान जुंङगी गुजरता है. मगर उसकी तवज्जुह भुद की तरफ लगी रहेती है. वो ज़हीरमें दुन्यवी कार्मोंमें मशगुल दीआर्ध देता है. मगर उसका हील और हिभाग इहानी सतह पर सरगर्भ रहेता है. वो दुनियामें औसा ईंसान जन जाता है जो आभिरत में जसेरा लीये हुये हो.

## किताब को कैसे पढ़ें ?

याद रखीये ! मुसलमान की नियत बख्त ली जयादा अलमीयत रफती है. विडाआ पढ़ने से पहले ये नियत करवें के इस किताब को इस वीये पढ़ रडा हुं के अल्लाह तआला भुंऊसे राजी हो जये और ईन्शाअल्लाह उस पर अमल करने की पुरी कोशीश करूंगा, इस नियत से आप पढ़ेंगे तो अल्लाह तआला अमल की तौकीफ जरूर अता इरमाएंगे. जिस बात पर अमल करना मुश्कील होगा. आपकी नेक नियत और तलब की बरकत से उस पर अमल करना आसान इरमाएंगे. और जल्ना वकत पढ़ने में भर्य होगा ईबादत में शुमार होगा. बुजुर्गाने दीन ने कुछ नसीखते वीजी है. जे यहां वीजी जाती है.

१. किताब पढ़नेसे पहले ये दुआ जरूर करवें के या अल्लाह इस किताब को मेरी हिदायत का जरीया बना वें.
२. अपने हिल हिमाग और आंभों के परहों को भोल वीजये.
३. किताब पढ़ने के वीये जैसा वकत नीकावा जये जे उल्जनों या परेशानीयों से घीरा हुआ न हो. कभी जैसा होता है के उल्जन सवारधी कीसी और वजल से, और बुंभन महेसुस होती है किताब के मजमून से.
४. पहले तौबा, ईस्तीफ़ार जरूर करवें ता के हील पर जे गुनाहों का गुबार छाया हुआ है वो दूर हो जये.
५. किताब के मुताबे के वकत अक कलम साथ रखें और जिन बातों में खुद को कोताही करनेवाला महेसुस करें उस पर निशान लगा दें और उसको बारबार पढ़ें. और उसकी ईस्वाह के वीये जुब दुआओं मांगें और अमल करने की कोशीष ली करें.
६. किताब पढ़ने की दखवत दूसरों को ली दे. और किताब में जे ईमानी तरककी, अफ्लाक की बखेतरी और सिफ़ाते अवलीया (रह.) से बोध बात मिले तो इन जुबुयों और सिफ़ात की तरफ़ दूसरे भाईयों की और अपने घर वालों को तवज्जुह दीवायें.

जिन बुजुर्गों की किताबों की मददसे हायदा उठाकर ये मजमून तैयार कीये है उन्के लक में और इस किताब को तैयार करने में ली कीसी तरल शरीक होने वाले मददगारों के वीये खुशूसी तौर पर दुआओं का खेदतिमाम करना.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ. وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ.

### अपनी बात :-

मुसलमान वो कौम है जिसकी ज़हगी परलेजगारी, पुशखाली, काम्यानी और धज्जत आबइ सिई और सिई डुजुर नबीये करीम (स.अ.व.) के लाये डुवे दीन में है. जब तक ये दीन कामिल तौर पर धस उम्मत में बाकी रखा ये कौम धज्जत आबइ से जींदा रही, डार्कीम रही. और उसकी शानों शौकत दुनियाबरमें डैली डुध थी. इस दीन से उसने अपने प्यारे नबी (स.अ.व.) की तालीमात को डल्का समजा और उससे मुंड डीरीया उसी दीन से उसका जवाल शुइ डो गया. अब दोबारा उस डालतको वापस लानेके लीये सिवाय धसके कोध चारा नडों के धस पर मडेनत डो. के ये उम्मत अपने प्यारे नबी (स.अ.व.)की तालीमात को डर मामलेमें आगे रज्ज कर यलें.

डर कौम की तरककी के कुछ अरबाज डोते है. उनमें ये ली है के वो अपने डडों को या ज्जके डार्थों में ये पलती है या परवरीश पाती है उनकी ज़हगीयों में वो पाकीजा पुबीयां डेपती है. ज्जसे उनकी तरककी डुध. तो कौम ली ज्जइर उनकी पुबीयों के असर को कबुल करती है और ये पुबीयां उनके लीये धस्वाडकी तामीर में पडेली धंट का काम देती है. और ये पुबीयों लरा धस्वाडी माडौल का पडेला सबक धरके महरसे में पढाया जाता है और गेडी वो महरशा है ज्जकी पडेली तरज्जीगतका सडेर मा-के सरपर आता है.

ललडाजा ये महरशा (माँ-की गोड) अगर धमानकी लडेरों से आबाड डो, अण्वाक और कीरदार का ड्वदार दरपत डो और अपने प्यारे नबी (स.अ.व.) की सुन्नतों से आरास्ता डो तो डीर क्या मुशकील है के उसकी गोड में पलने वाला डरअंड दीन व धमान का पाबंद और अण्वाक से आरास्ता न डने.

अडकर के दील में अक अरसे से ये धरादा डो रखा था के कोध ऐसी कितान ज्जमें उम्मत की काम्यानी और धज्जत आबइ डालिल

કરને કા કામ્યાબ નુસ્ખા તફસીલ સે લીખા ગયા હો. લિહાઝા અલ્લાહ કે ભરીસે પર કિતાબોં કે મુતાલા કે ઝરીયે ઈલ્મી મજમીન અજબોગરીબ નુક્તે જમા કરના શુરૂ કીયે. જો એક કિતાબ કી શકલ મેં તૈયાર હો ગયા ઓર મોમિન કા કિમતી સરમાયા હિસ્સા-૧, ૨, ૩ કે નામ સે આપકી ખિદમત મેં પેશ કીયા જ રહા હે.

હકીકત મેં બંદે કી હૈસિયત ઈસ કિતાબ કી તાલીફ મેં તરજુમાન કી હે. બંદાને અપની તરફસે કુછ નહીં લીખા ઓર ન ઈસ કાબિલ હે અલબત્તા સિફ વોહી બાતે લીખી હે જીસ્કી સનદ કુઆનમજીદ, હદીસે પાક, ઓર તસવ્વુફ કી મુસ્તનદ કિતાબોં યા મશાઈખે કિરામ કે અકવાલ સે હી.

ઈસ્કે બાવજુદ કોઈ બાત યા કોઈ જુમ્લા અહેલે ઈલ્મ યા અહેલે કલમ પર ગીરાં ગુજરે ઓર ઉસ્કી તાવીલ ભી ન હો સકતી હો તો બરાહે કરમ ઈતિલાઅ ફરમા દે. બંદા અહેસાનમંદ હોગા.

અલ્લાહ તઆલા સે ઉમ્મીદ હે યે કિતાબ હર તબકે કે મુસલમાનો ઓર ખાસ કરકે દીન કે આશિક મિજાઝ દોસ્તોં કે લીયે મુફીદ હોગી. જીન હઝરાત કો ઈસ કિતાબ સે નફા હો વો અહકર કે લીયે ઓર ઉસ્કે વાલંદેન ઓર ઉસ્કે ઉસ્તાઝોં ઓર બુજુર્ગોં કો અપની દુઆઓ મેં જરૂર યાદ ફરમાવે. વરસલામ.

અહકર: શમ્સુલહક હાશીમ.

યાંગા-જી.આગુંદ-ગુજરાત

૧, મોહરમ-૧૪૨૪ હીજરી.

# (१) ईमान और ईस्लाम

## अरकाने ईमान :-

ईमान के दो रूकन है.

- (१) ईकरार बिल्वीसान :- यानी दीनके अलकाम जे मुज्मल और मुक़रसल तीर पर लमतक पहुँचे है उनका ज़बान से ईकरार करे.
- (२) तस्दीक भीलकल्म :- यानी ईमान की दोनो क़िस्में ईमाने मुज्मल और ईमाने मुक़रसल की दील से तस्दीक करे. दील से उसको माने और यकीन करे. अगर कोई छुपकर ईकरार करवे ज़स्को कोई दूसरा न सुने तो भी ज़ईज है. पुदा के नज़दीक वो मोमिन है.

## मुनाफ़िक :-

और वो शम्स ज़रने दीलसे ईमाने मुज्मल और ईमाने मुक़रसल की तस्दीक न की. इकत ज़बानसे ईकरार कर लीया तो वो लोगो के नज़दीक ज़दीरमें मोमिन है और अल्लाह तआला के नज़दीक वो शम्स काडीर है. ज़स्को शरीअतमें मुनाफ़िक केलते है.

मुनाफ़िक अगर जे दुनियामें ईमान ज़दीर परदे आपने आपको गोमिन समजवे लेकिन आग़िरतमें उनके लीये ली लंमेशा की दोज़ाब है और हर्दनाक अज़ाब है.

कुआनमज्जद में है - बेशक मुनाफ़िकीन दोज़ाब के सबसे नीचेके तब्केमें लोंगे.

(सुरअे निसाअ-१४५)

## ईमान के अहकाम :-

जे शम्स ईमान लाया हो उसके लीये ईमान के सात लुकम है. (उनको लुकके मोमिनभी क़ैल सकते है) पांच का तअल्लुक दुनियासे है और दो का आग़िरत से है.

## दुनिया के पांच ये है :-

- (१) उसको शरई लुकमके सिवा क़त्व न करे.
- (२) उसको शरई लुकमके सिवा क़ैद न करे.
- (३) उसका माल ना लुक न भाया ज़ये.
- (४) उसको तकलीफ़ न दी ज़ये.

(५) उस पर बुरा गुमान जर्हज न लोगा जबतक बुराई जर्हूर न हो जये.

**दो आभिरत के ये हैं :-**

(१) मोमिन कायमी होऊभी न लोगा. अगर ये उसने कित्नेही गुनाहो कबीरा कीये हो. (शिक के अलावा) अगर शिक कीये जगैर और गुनाहो से तोबा कीये जगैर मरा हो तो कीसी न कीसी वकत जन्नतमें जयेगा.

(२) नेकी और बदी का वजन कीया जयेगा. उसकी (नेकीया) भारी होगी वो काम्याम लोगा और उस पर अल्लाहतआला का इजल और करम लोगा. उसको जगैर खिसाब किताबके जन्नतमें दाखिल करेगें और उसकी बदीया जयादा होगी वो गुनाहोकी सजा लुगतकर जन्नतमें जयेगा.

मोमिन गुनाहगार को अल्लाहतआला याहो तो जगैर अजाबके मडल अपने इजलो करमसे या दुजुर (स.अ.व.) की शिक्षात या हुसरे नबीयां और वलीयांकी शिक्षात से बखश हे और जन्नतमें दाखिल करदे और याहो तो गुनाहोकी मिक्दार अजाब करके डीर जल्दीही जन्नतमें दाखिल करदे. मोमिनको ना उम्मीद नही होना याहीये नसाके अभी उपर बयान हुवा के वो मालिक है याहो तो कबीरा-गुनाह कोभी बखश हे. अल्लाह तआलाका ईशाद है. "अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद नही."

(सुरओ जुमर-५३)

और जेभौक भी न रहेना याहीये क्युंके वो मालिक है याहो तो सगीरा गुनाह परभी अजाब हे. ईसीवीये दुजुर (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया :- "ईमान भौक और उम्मीदके इरमान है."

ईमानको दीव और ऊबानसे हुबुल करना उसकी लकीकत है और उम्र भरमें ओक मरतबा ईमान लाना और उसपर मरते वकत तक कायम रहेना इर्ज है. उसके बाद ईमानकी दोहराते रहेना सुन्नत है.

**ईमानके जाडी रेहने की तदबीरे :-**

(१) ईमान का शुक बजलाना :- क्युंके ये अल्लाहका बहोतबडा इजल है.

(२) भौके ऊवाल :- यानी ये भौक रभे के कही ये दौलत जती न रहे.

(३) माण्डुके पुढा पर वृल्म न करना.

धन बातों पर अमल करने से धिमान बाकी रहता है.

### धिमान और धिस्लाम :-

धिमान और धिस्लाम एक ही चीज है. शरीरतमें अस्को मोमिन के लते है अस्को मुसलमान भी के लते है. या लें लुगत के अतिबार से दोनों में इर्क होता लो. तरदीके कल्मको धिमान "अस् अमाव और धिमायत करने को" धिस्लाम के लते है.

गुना लें कबीरा करने से धिमान न लीं जता और काश्िर भी न लीं लोता. उसपर धिमानके सब अलकाम जरी लीं गे. लैसा के :- अस्के मरनेके बाद अस्की नमाजे ननाजा पढना, मुसलमानोंके कब्रस्तानमें दफन करना. अस्के मालमें विरासत जरी करना वगेर ल.

अगर गुना ल गार मोमिनको गरगरा यानी सकरात से पेल लें यानी (मरते वकत इरिशते देभने से पेल लें) तौबा की तौडीक लंसिल लो जये तौ नजतकी लडी उम्मीद है.

धिमान गुनगुनाता मरतबा धिमान गुइरयात से कम न लीं. धिमान धिनामा लींमें कल्मअे शललत - अशुदु अल्लाईलाल धिल्लल्ला लु वअशलदु अन्न मोलंमदन अलुदु वर सु ली लुं.

सअये दी लसे के लना काडी है. अस ! अस्ने ये कल वो मोमिन लुवा.

(नेअमते धिमान-पर)

### धिमान :-

कल्मअे तेयलल **سَمِعْتُ** जे दुनिया के तमाम बातिल मअलुदों की नडी के लीये तय कीया लें. ये नइसकी सफाई और पाडीजगी के लके में ललत इयदेमंद और मुनासिल है. अकाबिरे तरीकत ने नइसकी सफाई के लीये धिस कल्मअे तेयलल को धिज्तिपार किया लें. नल लीं नइस सरकशी में आये और अलद तौं लो तौ धिस कल्मल की तकरार (बार बार पढने ) से तरदीदें धिमान करना या लीये.

लुजुर (स.अ.व.) ने धिशाद इरमाया. **سَمِعْتُ** के लकर धिमान ताजा कर लीया करो. लके धिस कल्मा को बार बार पढना दरवकत नइरी है. धिस लीये के नइसे अम्मार ल बराबर अलारात

(शरारत) पर उतरता रहता है.

वहीस शरीर में ईस कल्मा की इकीलत में आया है के अगर तमाम आस्मान और तमाम जमीन अक पल्ले में रामे जय और ईस कल्मा को दूसरे पल्ले में तो यकीनन कल्मा वाला पल्ला जुंक जायेगा.

(तजल्लीयाते रब्बानी-१-७०)

### पुदा वंद तआला :-

पुदा अक दे पुदा अकली और अबही वकीकत है, वो सब कुछ है. हर चीज पुदासे है. पुदा कीसी चीजसे नहीं. पुदा हर चीजका पालिक भी है और वोही तमाम आलम का इन्तिजाम करनेवाला है.

अल्लाह तआला का ईशार्ह है :-

पुदा के सिवा कोई मअजूद नहीं, वो जिंदा है सबका धामने वाला. उरका न जय जाती है न निन्द जाती है. उरीया है जे कुछ आसमानों में है और जे कुछ जमीन में है. कौन है ? जे ईस्के पास उसकी ईज्जतके जगैर शिफारिश करे. वो जनता है जे कुछ उसके आगे है और जे कुछ उसके पीछे है. और ईन्सान अल्लाहके ईल्म में से कीसी चीजका ईलाता नहीं कर सकते, मगर अल्लाह इच्छता अता करना चाहे. उरीकी लुफ्त आसमानोंमें और जमीन पर छापी हुई है. वो थकता नहीं उनके धामने से और वोही है जुलुद मरतबे वाला. (सुरअे अकरस-२५४)

अल्लाह तआला का ईशार्ह है :-

कडो के वो अल्लाह अक है. अल्लाह जे नियाज है, उसकी कोई औवाह नहीं और न वो कीसीकी औवाह है. और कोई उसके बराबर का नहीं. (सुरअे ईज्वास-१)

मौजूदा दुनियामें पुदा जैबकी डालतमें है. आगिरतकी दुनियामें वो अपनी तमाम कुव्वतों के साथ सामने आ जायेगा. उसी वकत तमाम ईन्सान पुदाके सामने जुक जायेंगे. मगर उस वकत उनका जुकना उनके काम नहीं आयेगा. पुदाके सामने जुकना वो पसंद है जे हेमने से पहले मौजूदा दुनियामें ही आगिरतमें पुदा को हेम लेने के बाद जुकना कीसीकी कुछ शयदा देने वाला नहीं. (अखारिसावा-४/१९९७)

## ईस्लाम :-

ईस्लामके माअना ईताअतके है। मजलबे ईस्लामका नाम ईस्लाम ईसवीये रभा गया के ईस्की बुन्याद पुदाकी ईताअत पर है। ईस्लाम वाला वो है, जे अपनी सोयको पुदा के ताबे करवे। जे अपने मामलात पुदा की ताबेदारी में चलाने लगे।

ईस्लाम पुरी काईनात का दीन है। क्युंके सारी काईनात और उस्की तमाम चीजें पुदा के मुकरर कीये लुअे कार्नुनके मुताबिक चल रही है।

यही मामला ईन्सान से भी यादा गया है। ईन्सानको भी ईसी तरह पुदा का इरमाबरदार बनकर अपनी छंढगी बनस करना है। जिस तरह काईनात मुकम्मल तौर पर पुदा की इरमाबरदार बनी हुई है। ईर्क सिई ये है के काईनात मजबुरी के तौर पर पुदाकी पाबंदी कर रही है, और ईन्सानसे ये यादा जाता है के वो आजादाना तौर पर अपने आपको पुदाके लुकमोंका पाबंद बनावे।

आदमी जब ईस्लाम ईम्तियार करता है तो सबसे पहिले उस्की सोय ईस्लामके मुताबिक लो जाती है। उस्के बाद उस्की ज्वालीश, उस्के नज्ज्बात, उस्की दील यरपीयां, उस्के तअल्लुकात, उस्की मोलज्ज्बत, नइरत, सब पुदाकी ईताअतके रंग में रंग जाते है।

ईर आदमीकी रोजानाकी छंढगी पुदाकी मरज्ज्के मुताबिक लो जाती है। लोग्गोंके साथ उस्का सुलुक और उस्का वेन-देन ईस्लामके तकाजेमें ढल जाता है। वो अंदर से बाहर तक अेक इरमाबरदार ईन्सान बन जाता है।

ईन्सान पुदा का बंदा है। ईन्सानके वीये दुरइस्त तरीका सिई ये है के वो दुनियामें पुदाका बंदा बन कर रहे। ईसी बंढगी वाली छंढगीका दूसरा नाम ईस्लाम है। ईस्लामी छंढगी पुदाकी बंढगी और उस्की मरज्ज्वाली छंढगी है।

गेर ईस्लामी छंढगी ये है के आदमी सरकश बन जाये और पुदासे आजाद लोकर छंढगी गुजरे। ईस्के मुकाबलेमें ईस्लाम ये है के आदमी इरमाबरदार लो और पुदाकी वफादारी वाली छंढगी गुजरे। यही लोग पुदाकी रलमतोंमें खिस्सादार बनाये जायेंगे।

## ઈમાન કી હકીકત :-

દુનિયાકે તમામ મઝહબો મેં ઈસ્લામકા ઈમ્તિયાઝ ઓર ઉસ્કા રૂકનેઆઝમ અકીદએ તૌહીદ હે કે સિફ અલ્લાહ તઆલાકી જાત કો એક ઓર અકેલા જાનને કા નામ તૌહીદ નહીં બલકે અલ્લાહકો તમામ સિક્ષાતમેં યક્તા ઓર બેમિસાલ માનને ઓર ઉસ્કે સિવા કીસી મખ્લુકકો ઈન સિક્ષાત કે માલમેં ઉસ્કા શરીક ન સમજને કો તૌહીદ કેહતે હે.

અલ્લાહ તઆલાકી સિક્ષાતે કમાલ :-

(૧) હયાત (૨) ઈલ્મ (૩) કુદરત (૪) સુનના (૫) દેખના (૬) ઈરાદા (૭) ચાહના (૮) પેદા કરના (૯) રોજી દેના વગેરહ..

વો ઈન સિક્ષાતોમેં એસા કામિલ હે કે ઈસ્કે સિવા કોઈ મખ્લુક કીસી સિક્ષાતમેં ઉસ્કે બરાબર નહીં હો સકતી. ફીર ઈન તમામ સિક્ષાતોમેં દો સિક્ષાતે સબસે કમાદા પુખ્તાઝ (અનોખી) હે.

(૧) ઈલ્મ (૨) કુદરત.

ઉસ્કા ઈલ્મ તમામ મૌજૂદ ઓર ગેર મૌજૂદ, જાહીર ઓર છુપા હુવા બડે ઓર છોટે હર ઝરેં પર કાબુ રખતા હે.

ઈસી તરહ ઉસ્કી કુદરત ભી તમામ મૌજૂદા ઓર ગેર મૌજૂદા જાહીર-ગાઈબ ઓર છોટેબડે હર ઝરેં પર પુરી તરહ કાબુ રખતી હે.

મતલબ કે તમામ કાઈનાતોં કી તમામ ચીઝેં ઉસ્કે ઈલ્મ ઓર કુદરતમેં પુરી તરહ કાબુ મેં હે કોઈ ઝરેં ભી ખુદા વંદ તઆલા કે ઈલ્મ ઓર કુદરતસે બાહર નહીં.

ઓર યે દો સિક્ષાતે એસી હે કે અગર ઈન્સાન અલ્લાહ તઆલા કી ઈન દો સિક્ષાતો પર કામિલ યકીન ઓર પુરા ધ્યાન રખે તો ઉસસે કોઈ ગુનાહ નહીં હો સકતા. કયું કે અગર ઈન્સાનકો અપને હર અમલ ઓર કોલ પર ઓર હર કદમ પર યે ધ્યાન નરીખ હો જાયે કે એક બાબર દસ્ત ઈલ્મવાલા ઓર પુરી કુદરતવાલા મુન્બે હર વક્ત દેખ રહા હે ઓર મેરે જાહીર ઓર દીલ કે ઈરાદોસે ભી વાકીફ હે. તો યે ધ્યાન કભી ઉસ્કા કદમ નાફરમાનીકી તરફ નહીં ઉઠને દેગા. સુરએ અન્-આમકી આયત-૬૦ મેં ઉસ્કી તફસીલ દેખી જાસકતી હે.

(મ.કુ. ૩/૩૪૪)

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

ઈસ કલ્મેકો બહોતસે નાદાન લોગ કલ્મએ કૃપ્ત સમજતે હે. હાલાકે હકીકતમેં યે કલ્મએ ઈજ્ઝ (આજ્ઞી) હે. યે કલ્મા ખુદાકી ખુદાઈ યા રસુલ કી રિસાલત કા સિફ્ ઈકરાર હી નહીં. બલ્કે અપની હૈસિયત કાબી ઈસ્મે ઈકરાર હે.

ગોયા બંદા જબ ઈસ કલ્મેકો અપની જબાનસે અદા કરતા હૈ તો વો યેબી ઈકરાર કરતા હે કે ખુદા તું હી ખુદા હૈ. મૈ ખુદા નહીં હુ ઓર હઝરત મોહંમદ (સ.અ.વ.) અલ્લાહકે રસુલ હે. મુજે રસુલકી હૈસિયત હાસિલ નહી. તોહીદ ઓર રિસાલતકે ઈકરારકે સાથ અપની અબ્દીયત કા ઈકરાર જબતક ઉસ્મેં શામિલ ન હો ઉસ્કો પુરે માઅનોમેં કલ્મએ શહાદત કી અદાયગી નહીં કહા જ સકતા.

હુઝુરે અકરમ (સ.અ.વ.) ને તોહીદકી જો હકીકત બયાનકી, ઉસ્કા હાસિલ યે હે કે અલ્લાહ તઆલાકે સિવા સબ ઉસ્કી મખ્લુક ઓર કમજોર બંદે હે. કીસીમેં કોઈ તાકત નહીં હે. ચાહે વો રૂહાની તાકત હો ચાહે વો ચીઝોકી તાકત હો ઓહદે કી તાકત હો. હુકુમત કી તાકત હો. ક્વૌઝકી તાકત હો. સાબન્સ કી તાકત હો. ટેકનોલોજી કી તાકત હો, તાઅદાદ કી તાકત હો, કીસીમે કુછ નહીં ધરા હૈ. સબ અલ્લાહકે સામને કમજોર ઓર બેબસ હૈ. અલ્લાહ તઆલાજો ચાહતા હે વહી હોતા હૈ. અગરવો ન ચાહે તો કુછ નહી હોતા. ચાહે દુનિયાકી તમામ તાકતે મીલ જાયે. હદીસે કુદસીકા ઈશાદ હે.

يَا عَبْدِي أَنْتَ تَرِيدُ وَآنَا أَرِيدُ وَلَا يَكُونُ إِلَّا مَا أَرِيدُ

અલ્લાહ તઆલાને ફરમાયા :- બંદે તું ચાહતા હે ઓર મેં ચાહતા હું મગર વહી હોતા હે જો મેં ચાહતા હું.

સચ્ચા ઈસ્લામી મિજ્ઞઝ યે હૈ કે હમારી નિગાહ હર મામલેમેં સિફ્ અલ્લાહ તઆલાકી તરફ જતી હો. ઉસીસે ઉમ્મીદ હો, ઉસીકા ડર હો, ઉસીસે દુઆ હો ઓર ઉસ્કી મોહબ્બત તમામ મોહબ્બતોં પર ઓર ઉસ્કા તઅલ્લુક તમામ તઅલ્લુક પર ગાલિબ હો.

ખુદા પર અકીદા ઈન્સાનકો બુલંદ હિમ્મતવાલા બનાતા હૈ. જબબી ઉસ પર કોઈ મુશ્કીલ આતી હૈ. ઉસ્કા યે યકીન ઉસ્કે લીયે સહારા બનજતા

હે કે મૈને જીસ હસ્તીકો અપના ખુદા બનાયા હે વો હરયીઝસે ઉપર હે. વો તમામ તાકતોસે ઝયાદ તાકતવર હે. ઈસ તરહ ખુદાકા અકીદા ઈન્સાનકો હરબાર નયા અઝમ (ઈરાદા) દેતા હે. વો નયે હોસ્લે ઔર હિમ્મત કે સાથ જીંદગીકી કોશીષમે દાખિલ હો જાતા હે. યહાં તક કે આખિર ફાર વો ખુદા કી તૌફીક સે કામ્યાબ હો જાતા હે.

(અલ રિસાલા-૧/૨૦૦૨/૪૬)

### ઈમાન કી અલામત :-

નાબીગેફરીમ (સ.અ.વ.) એ ઈમાન કી અલામત દરયાકત કી ગઈ કે હમ કીસ તરહ મેહસુસ કરલે કે હમે દૌલતે ઈનામ નસીબ હે ?

ઈશાદ ફરમાયા :- જબ તુમહારી નેકીયાં તુમકો ખુશ કરદે ઔર ગુનાહ તુમકો રંજદા કરદે. તો બસ તુમ મોમિન હો.

જહીર હે યે સવાલ હર ઉસ મુસલમાન કો પેશ આતા હે. જીસ્ને દીલ કે યકીન કે સાથ ઈસ્લામ કુબુલ કર લીયા હે ઔર ઈસ્લામ પર કાઈમભી હે. ચુંકે ઈમાન કલબસે તઅલ્લુક રખતા હે ઔર કલબ એક છુપી હુઈ ચીઝ હે. ઈસલીયે ઈમાન કુબુલ કરને કે બાદ ઉસ્કી કેફિયત કા મુશાહીદા નહીં હોતા કે ઉસ્મે કયા તબ્દીલી હુઈ હે. ઈસલીયે કુદરતી તૌર પર યે સવાલ પેદા હોતા હે કે ઈમાન કી મેહસુસ અલામત કયા હે ? તાકે હમ કીસી ભી વકત મેહસુસ કરલે.

નાબીયે કરીમ (સ.અ.વ.) ને ઉસ્કી નિહાયત પાકીઝા અલામત બયાન ફરમાઈ.

ઈશાદ ફરમાયા. કોઈ ભી નેક અમલ કરને કે બાદ દીલમે ખુશી મેહસુસ હો ઔર દીલ મુત્મઈન ઔર પુર સુકુન હો જાયે ઈસી તરહ ગુનાહ કરને પર દીલ રંજદા હો જાયે તો સમજલો ઈમાન દીલમે મજબુત હે ઔર ઝીદાભી હે.

ઉસ્કે ખિલાફ અગર નેકી કરનેસે ખુશી ન હો ઔર ગુનાહ કરનેસે દીલમે તંગી ન હો તો સમજા જાયેગા કે ઈમાનકા નુર બુજ ચુકા હે. ઉસ્મે હયાત બાકી નહી રહી ગોયા દીલ મુદા હો ગયા હે - યે વીન્ટાની (જનનેકી) કેફિયત હર મુસલમાન મેહસુસ કરતા હે. ઈસ્મે કીસી દલીલ ઔર હુજૂત કી જરૂરત નહીં પડતી. આદમી અપને ઈમાનકા ફેસ્લા

पुष्ट करले के नुरे ईमान है ? और है तो कीस कहर है ? बंद लम्होमें कामीबुल ईमान और नाकीसुल ईमानका नतीजा मालुम हो जाता है.

(इरामीने रसुल (स.व.अ.) ८४)

ईन्सानी दुनियाका समन्वय तब्का अगर रलीसली ईन्सानियतकी डिक्काजत यादता है और अस्बाब और पैटके यककर से निकल कर (जहाँ उसकी लावत मशीन के यककर जैसे या बैन्चरो की तरह बह से बहतर होती जा रही है) दुनिया और आपिरतकी बलाएँ यादता है और बंशेकी गुलामीसे नीकलकर अष्टाकी बंदगी और उसकी पुशनुदी यादते है तो बिवा तकल्लुक अर्ब है के उन्का गुमशुदा सरमाया यही दीने ईस्लाम और शरीअते मोहंमद (स.व.अ.) है जे उन्की दर वक्त की दर किसमकी जरूरतोंकी पुबी के साथ पुरी सकता है. उन्की तमाम बिमारीयोंका ईलाज और बंदगी के पचीदा मसार्फको सुलजा सकता है.

आज ईस्लाम तमाम दानिशवरो की और उन्के जरीये तमाम आलम के ईन्सानोंकी रंग और नसलकी सतह से जुबंद होकर ये दमवत देता है के वो उसकी तरफ लोट आये और ईस्लाम के अकार्छ और उसके आडकाम को ईम्नियार करें. उन्के अंदर उन्के बीये दुनियामें राडत और आपिरतमें नजात का सामान है और यौददसो सालसे दर किसमकी रट्टी बहल और कमीबेशी से पाक है.

ईन्सान अगर अपने जमीर की आवाज को दबाने की कोशीष न करे और अपनी अकल के ईस्वीं पर तपजुलु करे तो अकल और दील उसकी रेडनुमाई करे और अपना आपरी ईस्वा करें के :-

एक तआवा को उसके नामों और सिद्धत के साथ मानना सबसे अहम इरीजा है, उसकी "वली" पर अमल करना, उसकी ईबाहत और ईतागत करना, और उसकी बेछु लुई शरीअत की कामिल पेरवी करना निहायत जरूरी है. (अकीद अे भोमिन - ४६)

**ईमान पर कायम रहेना :-**

उजरत युक्कियान बिन अबदुल्लाह (र.दी) इरमाते है के मैने अर्ज कीया यारसुलुल्लाह (स.अ.व.) मुजको ईस्लाम की कोई जैसे (जमेअ) बात बता दीछये के आपके बताने के बाद ईर मुजे कीसी दुसर से पुछने

की जरूरत बाकी न रहे. आप (स.अ.व.) ने ईश्राफ़ि इरमाया. तुम कड़ो के मैं अल्लाह तआला पर ईमान लाया, ईर ईस बात पर कायम रहो.

(मुस्लिम शरीफ़)

यानी अव्यव तो दीवसे अल्लाह की आत और शिक्षात पर ईमान लाओ, ईर अल्लाह तआला और रसुलुल्लाह (स.अ.व.) के अलकाम पर अमल करो और ये ईमान वकती नहो. अलके पुफ्तगी के साथ उस पर कायम रहो.

(मजाहीरे इक)

**प्याल और वसवसों का ऐअतिबार नहीं. :-**

इजरत अल्लु डुरैरह (र.दी.) इरमाते है के खंद सहाबा (र.दी.) रसुलुल्लाह (स.अ.व.) की फिदमतमें हाजूर हुअे और अर्ज कीया के हमारे दीवोंमें जैसे प्यावात आते है के उनको ज़बान पर लाना हम बुरा समजते है. रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने इरमाइत इरमाया - क्या वाकई तुम ईन प्यावात को ज़बान पर लाना बुरा समजते हो ? अर्ज किया छु डा आप (स.अ.व.) ने ईश्राफ़ि इरमाया - यही तो ईमान है.

(मुस्लिम शरीफ़)

यानी जब ये वसवसे और प्यावात तुम्हे ईन्ता परेशान करते है के उनपर यकीन रचना तो इरकी बात उनको ज़बान पर लाना भी तुम्हे गवारा नहीं तो ये इमाले ईमान की निशानी है. (ईमाम नववी र.अ.)

**नज्मत के लीये ईमान शर्त है :-**

इजरत अबिर भीन अब्दुल्लाह (र.दी.) से रिवायत है के मैंने रसुलुल्लाह (स.अ.व.) को ये ईश्राफ़ि इरमाते हुअे सुना : जे शप्स अल्लाह तआलासे ईस डालमें मीले के उसके साथ कीसीको शरीक न ठेहराता हो. वो जन्नतमें दाखिल होगी, और जे शप्स अल्लाह तआलासे ईस डालमें मीले के वो उसके साथ कीसीको शरीक ठेहराता हो वो दौज़म में दाखिल होगा.

(मुस्लिम शरीफ़)

**जन्नतमें लीपी हुई ईजात :-**

इजरत अनस (र.दी.) से रिवायत है के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने ईश्राफ़ि इरमाया : मैं जन्नतमें दाखिल हुवा तो मैंने जन्नतके दोनों तरफ़

ત્રીન સતરે સોને કે પાનીસે લીખી હુઈ દેખી.

પહેલી સતર :-  $مَا قَدَّمْنَا وَجَدْنَا وَمَا أَكَلْنَا رَبِحْنَا وَمَا خَلَفْنَا خَسِرْنَا$

આલ્લાહકે સિવા કાઈ પ્રોત્તબુદ નહીં જીર હકરત મુહમદ

(સ.અ.વ.) અલ્લાહકે રસુલ હે.

દુસરી સતર :-  $مَا قَدَّمْنَا وَجَدْنَا وَمَا أَكَلْنَا رَبِحْنَا وَمَا خَلَفْنَا خَسِرْنَا$

જે હમને આગે ભેજ દીયા (સદકા વગેરહ) ઉસ્કા

સવાબ હમકો મીલ ગયા, ઓર જે હમને દુનિયામે

ખા-પી લીયા ઉસ્કા હમને નફા ઉઠા લીયા, ઓર

જે કુછ હમ છોડ કર આયે ઉસ્મે હમે નુકશાન હુવા.

ત્રીસરી સતર :-  $أُمَّةٌ مُّذْتَبِئَةٌ وَرَبُّ غَفُورٌ$

ઉમ્મત ગુનાહગાર હે અંર રબ બખ્શને વાલા હે.

(અલ જામે ઉસ્સગીર - ૧/૬૪૫)

(મુન્તાખબ અહાદીસ)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

## (૨) ઈલ્મે દીન

અલ્લાહ તઆલા કી ખુશનુદી હાસિલ કરને કે લીયે અલ્લાહ તઆલા કે હુકમોં કો હુજુર (સ.અ.વ.) કે તરીકે પર પુરા કરને કી ગર્જ સે અલ્લાહવાલા ઈલ્મ હાસિલ કરના.

યાની ઈસ બાતકી તેહકીક કરના કે અલ્લાહ તઆલા મુઝસે ઈસ હાલમેં કયા ચાહતે હે ?.

**ઈશદિ ખુદાવંદી હૈ :-**

હમને તુમ લોગોંમેં એક રસુલ ભેજ જો તુમહીમે સે હે. વો તુમકો હમારી આયાત પઢપઢ કર સુનાતે હે. તુમકો નફસકી ગંદકીસે પાક કરતે હે. તુમકો કુઆનિ કરીમ કી તાલીમ દેતે હે ઓર હિકમત કી અચ્છી બાતે બતાતે હે. જાન્કી તુમકો ખબર નથી. (સુરએ બકરહ - ૧૫૧) હદીસ મેં હૈ

હઝરત ઉસ્માન બીન અફફાન (ર.દી.) સે રિવાયત હે કે રસુલે અકરમ (સ.અ.વ.) ને ઈશદિ ફરમાયા - તુમમે સબસે બેહતર વો શખ્સ હે જો કુઆનિ શરીફ સીખે ઓર સીખાયે. (તિમીઝી)

**ઈલ્મ કા નફા :-**

હઝરત જાબિર (ર.દી.) સે રિવાયત હે કે નબીયે કરીમ (સ.અ.વ.) ને ઈશદિ ફરમાયા - ઈલ્મ દો તરહ કા હોતા હે.

(૧) ઈલ્મ વો હે જો દીલમેં ઉતર જાયે વોહી નાફેઅ (નફાવાલા) હે.  
(૨) વો ઈલ્મ હે જો સિફ જબાન પર હો માગી અગલા ઓર ઈન્શારસો ખાલી હો. તો વો અલ્લાહ કી તરફસે ઈન્સાન કે ખિલાફ (ઉસ્કે મુજરીમ હોને કી) દલીલ હે. યાની યે ઈલ્મ ઈલ્લામ દેગા કે જાનને કે બા વુજુદ અમલ કયું નહીં ક્રિયા? (તરગીબ)

**ઈલ્મ બહોત બડી દોલત હૈ :-**

ઈલ્મ સબસે બડી દોલત હે. જો લાંગ ઈલ્મકી અહમિયત જાન લે ઉન્કો તમામ દુનિયાકી સદારત હૈચ (બેકાર) માર્બુમ હોગી.

ઈલ્મ હર મામલેમેં કાર આમદ હે. વો હર મૈદાનમેં કામ્યાબીકી સીડી

हे. एलमसे आदमी को वो बरीरत भूलती हे के बातों को गेडराईसे समल सके. एलम ऐसा सिकका हे जससे आप दुनियाकी डर यीज परीद सके हे. एलम डर कीसमकी तरककीका राज हे. अक आदमी के वीये बी ओर पुरी कोम के वीये बी. जस्के पास एलम हो उसके पास गोया डर यीज मौजूद हे.

बेशक एलम एन्सान का सबसे किंमती सरमाया हे. एलम मामुवी एन्सानको गेरमामुवी एन्सान बना देता हे. एलम डर कीसम की एन्सानी तरककीका अक यकीनी जरीया हे.

### एलम का शोक :-

डजरत अब्दुल्लाह एब्ने मुबारक (र.अ.) से पूछा गया के अगर अल्लाह तआला आपको एतिलाअ दे के आज शामको आपकी वक़त हो जयेगी तो आप क्या करेंगे ? आपने इरमाया एलम दासील कइंगा.  
(तन्बीहु ल गाइवीन-२/४७२)

### एलम मकसदे हयात :-

जलीलुल कदर सलाबी डजरत मज्माल बिन जवब (र.ही.) की जवब वक़त का वक़त करीब आया. तो आपने अपनी बांहीसे पुछा क्या सुब्ब हो गइ ? बांहीने कहा नहीं कीर आपने थोड़ी देरके बाद बांहीसे पुछा क्या सुब्ब हो गइ ? उसने कहा हा, अब सुब्ब हो गइ.

आपने इरमाया :- एस सुब्ब से जस्मे मुजे जलन्नम की तरक ले जया जये अल्लाहकी पनाह याडता हुं. अय मौत तेरा आना मुबारक ! अय मेरे पास झका और तंगदस्ती के आलम में आनेवाले तेरा आना मुबारक !

अय अल्लाह ! आप जनते हे के मैं दुनियामें नेडरे जरी करने और बागात लगाने के वीये जंदा रेडना नहीं याडता था. बल्के मेरी ज्वालीशथी के मैं लंबी रातोंमें मेडनत मुजलिद कइं- द्योपडेर के वक़त प्यास की सज्ती भरदाशत कइं - और एलमके डलकोंमें उल्माके सामने द्यो जानुं भेंडूं.  
(अल एलम वइजलेडी)

### किताबों का अक नया बदल कोम्प्युटर :-

आज कोम्प्युटर के निजामने तमाम उलुमकी जइरतोंका बदल पैदा

कर दीया है. कुआन मज्जह मुकम्मल और उसका तरजुमा और मुफ्तवीड  
 उदीसोंके मज्जमुअे ईन्टर नेट लायब्रेरी पर सारी दुनिया के वीये मौजूद  
 है. आपके पास फोन और कोम्प्युटर है तो कुआन या उदीस का बटन  
 दबाईये और थंढ मीनटमें पुरे कुआन मज्जहके मज्जमीन और उदीसों पर  
 नजरहोडा सकते है. आप थोडी देरमें कोम्प्युटर पर तडकीक कर सकते है के  
 इवां आयतकी तडसीर बयजवीने क्या की है? ज्वाबैन और ईब्ने कसीरने  
 क्या की है ? आपको अरबी-अंग्रेज आना च्याहीअे.

लेकिन ईस बात का अंदाजा हर अकलमंढ शप्स लगा सकता है के  
 आज उम जहरीमें ईल्म के सिलसिले में बडोत तरककी कर रहे है. लेकिन  
 अगर गौर करे तो ये तरककी सिर्फ वसाईल (यीअों) में हो रही है. ईल्ममें  
 नहीं. ईल्म हासिल करने के वसाईल ईस दौरमें ईल्ने जयादा हो गये है के  
 प्रीछले मोदल सो सालमें उसकी मिसाल नहीं भीवती.

अगर तबाअत (प्रिन्टींग) के अमतिबार से दृषे तो उदीस, इंकड,  
 तडसीर और दूसरे इन की किताबें ईल्नी मार्केटमें आ गई है के उसकी  
 गीनती मुश्कील है.

और किताबों से जयादा ताकतवर वसीला कोम्प्युटरमें ईस्तिमाल  
 होनेवाली (C.D.) सीडीयां है. जे साईज और कीमत में बडोत मामुवी  
 होने के बावुजूद बडोतसारी बडी बडी किताबों को शामिल होती है  
 और ईससे जयादा और जल्दी काम ईन्टरनेट का निजाम है. जे लाभों  
 किताबों की लायब्रेरीयां अपने अंदर वीये लुअे है.

ईस वीये आज कोम्प्युटर और ईन्टरनेट दोनों का ईस्तिमाल तेजीसे  
 बढ़ता जा रहा है और ईल्म हांसील करनेका पुराना तरीका (बुजुगों से  
 और किताबों के मुताबासे) छुटता जा रहा है.

अलकर का मकका मुकर्रमल में अेक साहीबे ईल्म के घर जाना लुआ तो  
 दृषाके मुताबे की अकसर किताबें अलमारीयों से निकली लुई थी. वजल  
 पुछने पर उन्होंने ज्वाब दीया के मैं कोम्प्युटर ले आया लुं और उदीस,  
 इंकड, तडसीर वगेरड की किताबें अब सीडीयोंमें आ गई है. मैं ईससे  
 काम चला लेता लुं अब मुनरे ईन किताबोंकी जरूरत नहीं. (बालाजा गेन  
 कमरा भावी करने के वीये ईन्ती किताबें तडसीम करदी.

ઈન વસાઈલ કો ઈલ્મી તરકકી કા ઝરીયા સમજા જાતા હે. લેકીન અગર સંજ્ઞાથીસે સોચા જાયે તો ઈન્કે ઝરીયે ઈલ્મ કો તીન તરહ સે નુકશાન પહુંચ રહા હે.

(૧) જબ કોમ્પ્યુટર યા ઈન્ટરનેટ ખોલકર બેઠતા હે તો વો અપના કીમતી વક્ત ઉન્કે બેકાર ઓર બે ફાયદા પ્રોગ્રામો કો સમજને ઓર ઉન્સે લુન્ક અંદોઝ હોનેમ્ બરબાદ કર દેતા હે.

(૨) ઈન વસાઈલ કો ઈસ્તિમાલ કરનેવાલા શખ્સ કીરી તફરીવી ઈલ્મી બહસકો ઝેહનમ્ મેહફુઝ કરને કી કોશીશ નહીં કરતા. કયુંકે વો સમજતા હે કે જબ જરૂરત પેશ આયેગી બટન દબાકર પુરી બહસ દેખલી જાયેગી. જહીર હે કે ઈલ્મ તો વો હે. જે ઝેહનમ્ મેહફુઝ હો. સીડીયો ઓર ઈન્ટરનેટ મ્ મૌજુદ માલુમાત પર ઈલ્મકા મહફુઝ હોના સાદીક નહી આતા.

(૩) સહી માઅનામ્ ઈલ્મ વો હે. હુસ્કા અમલ કે સાથ જોડ હે ઓર અમલ કા જઝબા સાહીબે નિસ્બત ઉસ્તાદો કે સામને ઘુંટને ટેકકર શાગિદી ઈજ્તિયાર કરને સે પેદા હોતા હે.

ઈન નયે વસાઈલ મ્ અમલ કા જઝબા પેદા કરનેવાલી કોઈ ચીઝ નહીં બલકે બદ અમલીયો કી એકસે એક હરકતે ઉન્મ્ મૌજુદ હે.

યાદ રહે ! યે ખાતે આમ હાલાત કો સામને રખકર કહી ગઈ હે. યે કોઈ કાયદા ફુલ્લીયહ કે તૌર પર નહીં. યકીનન ઉન્કા ઈસ્તિમાલ કરને વાલે બહોતસે હઝરાત ઉપર બયાન ક્રિયે ગયે અસર સે મેહફુઝબી હોંગે.

### ઈલ્મ સમેટ લીયા જાયેગા :-

ઈશદિ નબવી (સ. અ. વ.) હે. અલામાતે કયામતમ્ સે ઈલ્મ કી કમી ઓર જહાલાત કી ઝયાદતી કા હોના હે. (બુખારી શરીફ-૧૮)

ઈલ્મેદીન મુસલમાનો કે હર તબકેમ્સે બરી તેઝીકે સાથ કમ હોતા જ રહા હે. અવામ તો દરકિનાર - ખવાસ તક નમાઝ-રોઝે કે જરૂરી મસાઈલ સે વાકીફ નહીં હે. જે આલિમે દીન દુનિયા સે જ રહા હે. ઉસ્કી જગા કોઈ પુર કરને વાલા નહીં.

હઝરત અબ્દુલ્લાહ ઈબને અમ્ર (ર.દી.) સે રિવાયત હે કે હુઝુર (સ. અ. વ.) ને ઈશદિ ફરમાયા.

બેશક અલ્લાહતઆલા ઈલ્મકો ઈસ તરહ નહીં ઉઠાયેગે કે એકદમ

अंदोंसे उस्को निकाव बे. अल्के एल्म को उठायेगे उल्माको उठाने के साथ  
जैसा के हमारे एंस दौरमें हो रहा है.

(मजाडिडल उलूम - ८/२००३/२२)

### सिई एल्म इमीलत की यीज नहीं :-

उजरत मौलाना मुकती मुहंमद शही (र.अ.) इरमाया करते थे के  
अगर एल्मको "दानिस्तन" यानी सिई ज्ञान लेना कीसी इमीलतका  
मेअयार होता तो एंवलीस सबसे अइजल होता. एंसकीये के उस्के पास  
एल्मकी कोई कमी नहीं थी. एल्म उस्के पास अछोत था. एस्का अंदाजा  
एंस बातसें किया ज सकता है. अगरये ये बात जयादा मजबुत नहीं  
लेकीन मशहुर अछोत है के एंवलीस एंमाम राजी जैसे दानिशवर आलिम  
और कुलसईकी को दूनियासे जते वकत अपनी दलीलों की बुन्याद पर शिकरत  
दे गया. एंस वीये अगर जाली एल्म को देभा जये तो उजरते अंबिया  
(अ.व.) के बाद शायद एंवलीस से जयादा एल्म कीसीके पास नहीं था.

देभीये ! आज्जली अमरिका और केनेडामें एल्मे तइसीर, एल्मे उदीस  
और एल्मे डिकल वगेरल के जैसे शनावर (जानने वाले) मौजूद है के  
उन्की तइरीरों में जैसे उवाले मौजूद है के हमारे अछोतसे उल्माने जैसे  
उवाले देभेभी नहीं होंगे. लेकीन वो एल्म कीस काम का ? जे एंन्सानको  
एंमान की दौलत अता न करे. उस्की मिसाल उस मेडरुम आदमी से  
ही ज सकती है जे सुब्दसे शाम तक कीसी दरीयाके पानीमें गोते लगाये  
लेकिन उस्का लोठ भी तर न लो. जस एल्म के पीछे एंशक, मोलुब्बत,  
तकवा, अमल, उम्मतका दई और दीलमें डिकरे आभिरत न हो वो एल्म  
कीरी कामका नहीं. जैसा एल्म कित्ने दबाता नहीं कित्ने जगाता है.  
मौलाना इमी (र.अ.) इरमाते है.

एल्म को अगर अपने जस्म पर एंस्तिमाव करो तो वो सांप है  
और अगर दीवके साथ एंस्तिमाव करो यानी दीव पर असर करता हो  
और अल्वाउतआवाका उर दीलमें हो तो वो एल्म एंन्सान के वीये  
दूनिया और आभिरतमें अछेतरिन दोस्त साबित होता है.

सही उदीसमें है के अक मरतबा जुजुर (स.अ.व.) ने सलाबा (र.दी.)  
से एंशाद इरमाया के अनकरीब वो जमाना आने वाला है के तुम पर

दुन्यवी भजानोंके दरवाजे भोल दीये जायेंगे. यहाँ तक के तुम अपने धरों को रंग नगद यजने लगोगे नैगा के अपनूदलाय शरीर को सज्या जना है. (गानी धरों की गुनसुरती और नकशो निगार के धंधो में लग जाओगे) सदाभा (२.टी.) ने अर्ज किया उस वक्त हम अपने दीन पर कायम रहेंगे ? आप (स.अ.व.) ने इरमाया है ! तुम मुसलमान ही होंगे. इस पर सदाभा (२.टी.) ने इरमाया के हीर हम उस दीन आज से जयादा अच्छी डालतमें होंगे. लुजुर (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया नहीं, बल्के तुम लोग आज उस दीनके मुकाबलेमें जयादा बेडतर डालमें हो.

(तिबरानी-२८१/८)

ईस डहीस से मावूम हुवाके लुजुर (स.अ.व.) की नजरमें उम्मतकी बेडतरी माव, दौलत और ऐशो आरामके जयादा डोनेमें नहीं. बल्के उम्मतकी इलाह और काम्याबी की असल अलामत दीनदारी और डिकरे आभिरत है. इसका सबसे आ'वा नमूना सदाभा (२.टी.) की छंदगीयो में पाया जाता है.

आप (स.अ.व.) के ईशाद का साइ मतलब है के दुनिया किन्तीही तरककी करवे और अस्बाब की त्तरमार हो जाये लेकिन ये यीअं उम्मते मुहंमदीयल का असल सरमाया नहीं है. बल्के उसके किमती सरमाया दीन व ईमान और शरीअत से लगाव है. अगर दीन व ईमान की मज्जुती के साथ दुन्यवी तरककी डालिव है तो बेशक मुबारक बाहीके काबिल है. अगर दीन से दुरी डोने की डालतमें दुनिया की मशुली है तो ये कोई इप्र या काम्याबी की यीअ नहीं.

अइसोस! आज ईस डहीसके पिवाइ हमने तमाम तरककीयोका दारो मदार दुन्यवी अस्बाबे राडत को डालिव करनेमें समज लीया है.

उल्माओ दीन की नजर दीन और आभिरत की काम्याबी पर है. जब के नदीद तबके को सिई दुन्यवी छंदगीकी डिकर है.

उल्मा का कडेना है ये के नदीद उलुमको डोसिव करना ईस्वामी माडोल और तेडजीब के दायरेमें रेडकर डोना याडीये. जब के नदीद तबकेका अमल ये है के मुसलमान सय्या मुसलमान बने न बने. मगर उलुमे नदीदा का माडीर नइर हो जाये. उनडे उसके दीन व ईमान और

અકીદે કો બરબાદી પર ઝર્રા બરાબર ભી ગમ નહીં હોતા ઓર ઉલ્માકી નજરમેં સબસે બડા મસ્અલા ઉલુમે જદીદા સે મેહરૂમી નહીં બલકે દીન વ ઈમાન ઓર ઈસ્લામી અખ્લાક કા દેવાલીયા પન હે. જે મુસ્લિમ સમાજમેં તેઝીસે ફેલ રહા હે.

ઈસ લીયે મૌજુદા દૌરમેં ઈસ બાતકી સખ્ત જરૂરત હે કે મુસલમાનોકે ઈન્તિઝામમેં ચલનેવાલે દુન્યવી તાલીમી ઈદારે કે માહોલ કો ઈસ્લામી રંગ મેં ઢાલનેકી કોશીશ કી જાયે ઓર અપને ઈદારોં કો સિફ કારોબારી કંપનીકા દર્જ દેને કે બજામેં ઈસ્લામી અખ્લાક કે ફેલનેકા ગેહવારા બનાયા જાયે.

ઓર યે બાત યાદ રખીયે ! કે મુલસમાન તાલિબે ઈલ્મ કે દીનદાર બનકર ઉલુમે જદીદા હાસિલ કરનેસે ઉસ્કી રોઝીમેં કોઈ કમી હરગીઝ નહી આયેગી. મલકે મુમ્કીન હે કે ઉસ્કી દીનદારી - ઈમાનદારી ઓર શરાફત કી બુન્યાદ પર દુસરોં સે ઝયાદા રોઝીકા ઈન્તિઝામ હો જાયે. જૈસાકે તજુરબા ઓર મુશાહિદા ઈસ બાત કા ગવાહ હે.

(નિદાએ શાહી - ૯/૨૦૦૦/૩)

હઝરત યાનવી (ર.અ.) ને ફરમાયા કે આબ્કલ દીનકી તાલીમ સે બેહતર કોઈ ખિદમત નહીં - ખુદાવંદે આલમ જીસ્કો ઈલ્મ દે તો ઉસ્કે લીયે ઈસસે બેહતર ઓર કોઈ મશગલા નહીં. ઈસ્કી આબ્કલ સખ્ત જરૂરત હે, ઓર ફઝીલતભી ઉસ્કી ઈસ કદર હે કે શાયદહી કીસી દુસરે અમલ્ કી હો. જબ તક તાલીમ કા સિલસિલા ચલાયા જાયેગા. કયામત તક નામ એ આમાલ્ મેં સવાબ બઢતા જાયેગા - ( શર્ત યે હે કે યે તાલીમેદીન ઈખ્લાસ કે સાથ ઓર સવાબુકી નિચ્ચત સે હો - સિફ તન્ખવાહ મક્સુદ નહીં)

(અલફુરકાન-૧/૧૯૮૧/૨૮)

### ઈલ્મ કી રૂઠ :-

યાદરખના ચાહીયે કે સિફ મજામીન બયાન કરના ઓર નાયાબ ઉલુમ કી બારીશ કર દેના. લતીફે ઓર કિસ્સોં કે ઝરીયે સુનને વાલોં કે દીલોં કા મોહ લેના ઓર ઉન્હે વાહ ! વાહ કરને પર મજબુર કર દેના કોઈ બડી બાત નહીં. બડી બાત યે હે કે હમારા તઅલ્લુક ઈબાદત ઓર અમલ કી બીના પર અલ્લાહ તઆલાસે ઈત્ના મજબુત હો કે ઉસ્કી તરફસે તાસીર

और लिक्मत के दरवाजे भुल जाये और हमारी जंतसे अल्लाह तआला दीन की धंशाअत और लिक्मत का काम लेवे. धंसवीये बडी किंकर से धंस अलम नुकते की तरफ ध्यान देने की जरूरत है.

आज हमारे पास उलुम और मालुमात का अंभार है लेकिन धलमकी इल नही है. धंसवीये शयदाभी नही होता. धंस्वाड की तलरीक धंन्केरादी, धंन्तिमाधं दरतरड जरूरी है. धंन तलरीकोंकी काम्याबी के वीये जे शर्त जरूरी है के दीन के फादिम उल्माये किराम. द्यवत का काम करनेवाले डजरत की तअल्लुक अल्लाह तआला की जंत के साथ मज्बुत हो अमल और धंभादत से वेस डोकर वो मेदाने अमलमें आये तो उम्मीद है के धंस किन्ने इसाद के दौरमें उन्की कोशीये रंग लाये और लिदायतकी किआ साजगार होगी. (धंन्शा अल्लाह)

शैभुल धंस्वाम डजरत मौलाना दुसैन अलमद मदनी (र.अ.) के दर्से डदीसामे भेठनेवाले बताते है के जस वकत आप मस्नद पर तशरीफ हरमा डोते तो इडानियत का ओक सेलाब डोता था के अल्फाज उस केकियतको बयान करने से आज्ज है. ये तासीर उन अकाबिर के कुव्वते अमल और मुजलिहे की थी. (निदाये शाही-३/२०००/प)

(२) दीनी मदरिस से जैसे साहिबे किरदार और इरिशता बुजुर्ग पैदा दुजे जन्डोंने सडाभा (र.दी.) और ताभेधन के जमाने की याद ताजा कर दी. उन्की बुजुर्गी और दीनदारी और अमलके धंप्वासको देभकर मद्रसाके वो मुलाजीम जे फादिमपेशा डोते थे और जन्का धलमसे कोधं फास तअल्लुक नही था. परडेजगार, अल्लाहसे डरने वाले और तडजबुद गुजर और नवाकिलके पाबंद, बल्के साहीबे निस्बत डोज्या करते थे.

(३) मद्रसाके तल्मा पुरे तौर पर तो बाडरकी फराब डीजा और गंटे माडोलसे मेडकुल नही रेल सकते लेकिन जन्ता वो अपने की मेडकुल कर सकते हो जरूर करें, ताविबे धलमी का ये दौर जंद्गीका सबसे किंमती दौर है. उस्को बरबाद करने की तवाही जंद्गीबर नहीं हो सकती. ये वो कोताली है जस्की सजा दूनिया व आफिरतमें लुगतनी पडेगी. धंसवीये अजीज तल्मासे ये अर्ज है के अपने किंमती वक्त की कहर करे. अपने

उस्तादोंकी नसीहतों पर अमल करे. भेशक तुम लोगोंको न जुनेद और शिक्वी भीलेंगे न डाकिले धंभने उजर और न अल्लामा अयनी. हमली जैसे उस्तादोंसे झयदा उठाना है. जल्ना झयदा उठाना हो उठालो. ये दौर डकीकत में दीनमें गडवतका दौर है लेकिन आमाव की तासीर अबली वही है. जे पड़ेले जमाने में थी. मलेनत, धंभ्लास, मुतावा के अबली वही नतीजे धंभशा अल्लाह भीलेंगे. जे पड़ेले जमाने में भीवते थे. तालिबे धंभमीमें जे जैसे बन जाता है. जंघगी भरवो वैसा ही रेखता है. जे कौतालीयां उस वकत रेख जाती है वो बाकी ही रेखती है.

भौजुदा दौर के बुजुर्गोंमें से जससे मुनासीबत हो उनकी जिदमतमें थोड़े दीनों के लीये डाजररी दीया करे. साथमें दीनी पाकिआत और डालातका मुतावाली आपके मकसदमें मददगार डोगा.

(अलकुरकान-१/२००३/७)

### डाम के तल्बा :-

डमारानाम तालिबे धंभ वव अमल था. (मगर मुप्तसर सिई तालिबे धंभ भोला जाता है.) लेकिन डम अमल को मकसुद नही समजते डालांके तालिबे धंभमीही से आमावमें मशगुल होने का अलतिमाम मद्रसे वालोंको करना याहीये. आज उस्ताद तल्बाकी तरबियत और धंभस्वाले नइसकी डिकर नहीं करते. सिई उन्के रेखने की और रोटीयों की डिकर होती है. शकवो सुरत तालिबे धंभ जैसे है और डूड और डकीकत गाईभ ! यानी तअल्लुक मअल्लाह और उर और धंभेबाअे सुन्नत, उस्तादोंका अदभ और धंभराम सब अतम. डीर स्ट्राईक और भगावत नहीं डोगी तो और क्या डोगा ?

तल्बा डमारी भेती है. डम उन्के दीवोमें अल्लाहसे तअल्लुक और धंभेबाअे सुन्नतके दरप्त न लगायेंगे तो दुसरे जंगली काटेदार दरप्त नौकलेंगे, डीर रोना पडता है के आज इलां तालिबे धंभमने उस्तादको गालीदी. इलाने इलांकी पीटाई की.

आह ! धंभ तज्भेबाअे किरामको तो सोडिसद अवलियाअे किराम डोना याहीअे था. और जे भे अमल और भे उसुव तालिबे धंभमीको उन्हे डौरन निकाल देना याखिये था. दरप्त की जे शाभ पराभ हो

बागवान की ड्युटी और ज़म्मेदारी है के उसे काट कर ड़ेक दे. मकसुद न तल्गाकी तगदाद दे न ईमारत. कायके अगर अंदगी नीकले तो गुल गुला (पुम) भयाहेंगे. (मल्कुज भीलाना शास अबरारइल लक (दा. भ.)

### એક સદી પહેલે કી એક તહરીર :-

બડી જરૂરત ઈસ બાતકી હૈ કે એક જમાઅત ઉલ્મા કી દુનિયાકે હાલાત ઓર વાકેઆતસે ભી ખબરદાર હો. ઉસ્કો માલુમ હોકે જીસ સલતનત (સરકાર) મેં વો જંદગી બસર કરતી હૈ ઉસ્કે ઉસુલ કયા હૈ ? ઉસ્કા ઈસ હુકુમતસે કીસ કિસમકા તઅલ્વુક હૈ. મુસલમાનોં કી દુન્યવી હાલત કયા હૈ. ? ઉન્કો કયા કયા જરૂરતેં દરપેશ હૈ. ? સરકાર કે ઈન્તિઝામ મેં જો તબ્દીલીયા હોતી રેહતી હૈ. ઉન્સે મુસલમાનોંકી હાલત પર કયા અસર પડતા હૈ ? વગેરહ.

મુલ્કમેં ઉલ્મા કા અસર જો કમ હોતા જ રહા હૈ. ઉસ્કી એક બડી વજહ યે હૈ કે આમ તોર પર યે ખ્યાલ ફૈલતા જ રહા હૈ કે ઉલ્મા હુજરોં (કમરોં) મેં મુઅતકિફ હૈ. ઓર ઉન્કો દુનિયાકે હાલાતકી બિલકુલ ખબર નહીં. ઈસલીયે દુન્યવી મામલોં મેં ઉન્કી હિદાયત ઓર ઉન્કા ઈર્શાદ બિલકુલ ના કાબિલે ઈલ્તીફાત હૈ.

બેશક જો ઉલ્મા દુનિયાસે હાથ ધો બેઠે હૈ ઓર ઉન્કો કસરતે ઈબાદત ઓર ઝિક ફિક્કી વજહસે અપની ઓરતોં ઓર બચ્ચોં કી જરૂરીયાતકી તરફ ભી તવજ્જુહ નહીં. અસ્હાબે સુફફાસે ઉન્કો તશબીહ (મિસાલ) દી જસકતી હૈ. લેકીન યે બાત જહીર હૈ કે તમામ સહાબા (ર. દી.) અસ્હાબે સુફફા નહી યે ઓર ન હો સકતે યે.

બેશક અસ્હાબે સુફફા કી તરહ એક ગિરોહ (જમાઅત) હંમેશા કોમમેં મોજુદ રેહના ચાહીયે. લેકીન ઉસ્કે સાથ નિહાયત જરૂરી હૈ કે એક બડી જમાઅત એસી ભી મોજુદ હો. જો જનકારી ઓર ખબરોં ઓર ઈન્તિઝામ ઓર તદબીર ઓર એહતિયાત ઓર મસ્લીહત મેં હઝરત ઉમર (ર. દી.) હઝરત અમ્રબીન આસ (ર. દી.) ઓર ખાલિદબીન વલીદ (ર. દી.) ઓર અબુ ઉબૈદહ (ર. દી.) કે નકશે કદમ પર હો.

(મોલાના મોહંમદઅલી મુંગેરી (ર. અ.))

## आलीमे दीन की इज़ीलत :-

उज़रत एब्ने अब्बास (र.दी.) इरमाते है के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने एश्राफ़ इरमाया : अेक आलीमे दीन शयतान पर उज़ार आबीदोंसे ज़यादा सज़्त है. (तिमीज़ी)

उदीस शरीफ़का मतलब ये है के शयतान के वीये अेक उज़ार आबीदों को धोका देना आसान है. पुरे दीन की समज् रफ़ने वाले अेक आलीमोंको धोका देना मुश्कील है. (मुन्तफ़अ अउदादीस)

## उल्माओ रब्बानी :-

उज़रत अब्दुल्लाह एब्ने अब्बास (र.दी.) इरमाते है के तुम्हे यादीये के रब्बानी लुक्मा-उल्मा-कुक़ा बनो. सखी/पुपारीमें लइज़े रब्बानी की तइसीर ये इरमाए के ज़े शफ़्स दअवत और तब्वीग और तालीममें तरबियतके उसुल को ज़्यादा रफ़ पर पड़ेले आसान आसान जाते बताये. ज़ब लोग उस्के आदी हो ज़ये तो हीर दुसरे अउकाम मतवाये. वो आलिमे रब्बानी है.

आजकल ज़े फ़ीअज और तब्वीगका असर कम होता है उस्की बडी वजह ये है के आम तौर पर काम करने वाले एन उंसोवों और आदाब की रियायत नहीं करते, बंजी तकरीरे वक़्त जे वक़्त नसीहत. मुफ़ातब के डालातको मालुम कीये बग़ैर उस्को कीसी कामपर मजबूर करना उन्की आदत बन गई है.

## उल्मा के अउदाब :-

आजकल आलीम उस्को क़ा ज़ता है. ज़स्के नाम के साथ कासमी, नदवी, मज़ाहरी, वगेरह निस्बती लइज़ लगा हुआ है.

डालांके आलीम होने के वीये मद्रससिसे एल्म हासिल करने की शर्त है. मगर ये शर्त दुस्त नहीं के नामके साथ कासमी, या नदवी ज़ेसा कोए लइज़ लगाओ. नामके साथ एंस किसमके लइज़ लगाना अकाबिरे उल्माकी रियायत नहीं.

मिसाल के तौर पर मौलाना मेहमुदुल हसन (र.अ.) मौलाना हुसैन अहमद मदनी (र.अ.) मौलाना अज्जाल अली (र.अ.) मौलाना अन्वर शाह काश्मीरी (र.अ.) मौलाना अशरफ़ अली यानवी (र.अ.).

मौलाना शब्बीर अलमद उस्मानी(र.अ.) मौलाना शिब्ली नुअमानी.(र.अ.) जैसे मशहूर उजरात जे माने लुअे आलीम थे. मगर उन्हीं ने अपने नामुके साथ ऐसा कोई लक़्क नही लगाया.

(अलरिसावा-१०/१८८८/४६)

### बुजुर्गों का एल्मेदीन हासिल करना :-

अेक जमाने में मुसलमान के घरमें पेदा होनेवाला हर बच्चा कुर्आन मज्हदी तावीम हासिल करता था. उलाव-उराम के ज़री मसाईल सीपता था और उसके बाद दून्यवी कामों में मशगुल होता था और दून्यवी मशगुली के साथ साथ अपना तअल्लुक उल्माअे किराम से रपता था. एंसवीये बादशाहों और अमीरों के घरों में कुर्आन और उदीसे पढने की आवाजे सुनाई देतीथी. सुलतान मलमुद गजनवी (र.अ.) सुलतान नासिइदीन (र.अ.) और औरंगजेब आलमगीर (र.अ.) से कौन वाकीफ़ नही. इन बादशाहोंमें ये सिद्ध थी के जुद आलिमथे और उल्माके कदरदान थे. अपने हाथसे कुर्आन मज्हदी की किताबत कीया करते थे और अपना तअल्लुक अपने वक्त के बुजुर्गों से रपते थे.

उजरात अफ्तार काकी (र.अ.) का जब एन्तिकाल लुवा और नमाजे जनाजा के वीये लोग जमा लुअे तो अेक बुजुर्ग ने सबको बेठनेको कडा और कुरमाया उजरातने एन्तिकालसे पेडले ये वसीअत वीअ कर दी छे के जब मेरा जनाजा तैयार हो जये तो नमाजे जनाजा पढाने वाले के वीये मेरी ये शर्त अयान कर देना जस शप्समें ये जुसुसीयत मौजूद हो वो मेरी नमाजे जनाजा पढाये.

- (१) तमाम ज़ंद्गीमें अगैर वुंजुके आस्मान न देणा हो.
- (२) पुरी ज़ंद्गीमें कीसी गेरमहरमको हाथ न लगाया हो.
- (३) कबी तकबीरे उला न छुटी हो.
- (४) असर की यार सुन्नतें न छुटी हो.
- (५) शायद तउज्जुद की शर्त हो.

जब ये शर्त सुनाई गई तो पुरे मजमा में सन्नाटा छा गया. उल्मा और बुजुर्गोंकी काफ़ी तअदाद मौजूद थी. मगर एमामतके वीये कोई आगे नही बढ रहा था. काफ़ी देर हो गई. लोगोंकी परेशानी बढने

લગી ઓર રોનેકી આવાઝે આને લગી. તો ઉસ વકતકા બાદશાહ સુલ્તાન શમ્સુદીન અલ્તમસ રોતે હુએ આગે બઢે ઓર યે કેહતે ઈમામત કરાઈ. અયશેખ ! આજ આપને મુંઝે રૂસ્વા કરા દીયા. મેરા રાઝ ખુલ ગયા યે હાલ થા ઉસ વકત કે માહોલ કા.....!

દીલ્હી કી શાહી મસ્જીદ જબ તૈયાર હો ગઈ તો રમઝાન કી પહેલી તરાવીહ ખુદ શાહજહાંને પઢાઈ. ઉસ દૌરમે ઈસ્લામી મદારિસકે લીયે જગીરે વકફ થી. ઉલ્મા ઓર તલ્કબા શાનસે રેહતે યે. બાદશાહો ઓર અમીરો કે દરબારમે ઉલ્માકા એક ખાસ મકામ થા. અવામમે ભી ઉલ્મા કો બે પનાહ ઈઝઝત્તેસે દેખા જતા થા. બડે ઘરોમે ઓર શરીફ ખાનદાનોમે અપને મામલોકો ઉલ્મા કે મશવરોસે નિપટાયે જતે યે. તિજરત ઓર લેન-દેન કે મસાઈલ ઉલ્માસે પુછે જતે યે.

મલ્કુઝાત મૌલાના મહંમદ અલી જલંધરી (ર.અ.)

### હાફીઝ કા મરતબા :-

ગરીબ મુસલમાનો કો હકીર નજરે સે ન દેખો. ખુદા જાને કૌન ઉનમેસે અલ્લાહતઆલા કે યહાં મકબુલ હૈ. હુઝુર (સ.અ.વ.) ઈર્શાદ ફરમાતે હૈ કે કુઆન મજીદકે હાફીઝ કો જે કુઆન મજીદકી તિલાવત કરતા થા ઓર ઉસ પર અમલ કરતા થા. જન્નતકી નીચી સતહ પર ખડા કીયા જાયેગા ઓર અલ્લાહતઆલા ફરમાયેગા કે અય મેરે બંદે ! તું જીસ તરહ દુનિયામે પઢતાથા પઢાતા જ ઓર જન્નતકી સીડીયો પર ચઢતા ચલાજા. કુઆન મજીદમે ૨૧૦૦૦ એકીસ હજાર આયતે હૈ. આપ અંદાઝ લગાઈયે કીસ કદર બુલંદી ઈસ હાફીઝકો અલ્લાહ તઆલા કે યહાં નસીબ હોગી.

હુઝુર (સ.અ.વ.) ફરમાતે હૈ કે જે હાફીઝ કુઆન મજીદ પર અમલ કરતા હૈ ઉસ્કો અલ્લાહ તઆલા ઈખ્તિયાર દેગા કે તું અપને રિશ્તેદારોમે સે દસ આદમીયો કો જે દોઝખ મે દાખિલ હો ગયે હૈ શિકારીશ કર હમ ઉન્કો દોઝખસે નિકાલ કર જન્નતમે દાખિલ કરેંગે.

(નિદાએ - શાહી - ૧૦/૧૯૯૩/૧૨)

### ઈમામ કુદુરી (ર.અ.)

પાંચવી સદીકે શરૂમે બગદાદકી સરજમીનમે હન્ફી ઉલ્માએ કિરામમે ઓરી શખ્તીયતે આક્રતાબો માલતાબ બનકર નમુદાર હુઈ ઉન હજરાતમે

સે એક જીન્કા ઈસ્મે ગિરામી અહમદ ઓર એહલે ઈલ્મકે દરમ્યાન “ઈમામ કુદુરી” કે નામ સે યાદ કિયે જાતે હે.

“તારીખે બગદાદ” કે મુસન્નીફ અલ્લામા અબુબક અહમદબીન અલી (ર.અ.) સાહીબે “ખતીબે બગદાદી” ઈમામ કુદુરી કે શાગિદ હે.

ઈમામ કુદુરી (ર.અ.) બડે ફકીહ ઓર સદુક (સાફદીલ) થે ઓર ફિકહ મેં અપની હોશિયાર ઓર અકલમંદી ઓર હાફેજા મેં તારીફ કે કાબિલ લોગોંમે થે. તહરીર બહોત ઉમદા થી. તિલાવતે કુર્આન કા દાઈમી મામુલ થા.

આપને મસાઈલે ફિકહ મેં “મુખ્તસરૂલ કુદુરી” કે નામસે એક કિતાબ લીખી હે. જીસ્મેં તકરીબન બારહ હજાર મસાઈલકો બીસોં કિતાબોંસે યુનકર દર્જ ફરમાયા હે. યે કિતાબ એક અજમ શાહકાર હે. જીસે કુદરતને બડી અઝમત અતા ફરમાઈ હે.

મૌલાના અન્જર શાહ કાશ્મીરી (ર.અ.) ફરમાતે હે કે

“કુદુરી” દેગ બનાકર બેચતે રહે. લેકિન ફિકહ મેં જો કિતાબ લીખ કર છોડ દી. વો અબ ભી મદારિસ કા કિંમતી સરમાયા હે. યે અજમ કિતાબ હર દૌરમેં પઢી ઓર પઢાઈ જાતી હે.

અલ્લામા તાશકુબ્રા ફરમાતે હે કે યે બાત માલુમ રેહની ચાહીયે કે કિતાબ “મુખ્તસરૂલ કુદુરી” ઉન કિતાબોં મે સે હે જીસ્કો ઉલ્માએ કિરામને મુતબરક જાના હે. યહાં તક કે તાઉન (ખ્લેગ) ઓર મુશ્કીલાત કે વકત ઈસ કિતાબકો પઢકર આઝમાયા હે. કે ઈન્કે પઢને સે મુશ્કીલાત દુર હો ગઈ.

(મિફતાહુસ્સઆદત-૨/૨૫૪)

ઈસ કિતાબકી તાસીર ઓર અઝમતકો સમજને કે લીયે અલ્લામા અયની હન્ફી (ર.અ.) કા યે બયાન હે કે.

મેં ને એક બડે મોહતરમ ઉસ્તાઝ કો યે કેહતે હુએ સુનાકે ઈમામ કુદુરી (ર.અ.) જબ અપની કિતાબ “મુખ્તસરૂલ કુદુરી” કી તસ્નીફ સે ફારિગ હુએ તો આપ હજબ કે લીયે તશરીફ લે ગયે ઓર અપની કિતાબ ભી સાથ લેતે ગયે. જબ તવાફસે મૌકા મીલા તો અલ્લાહતઆલાસે દુઆ યાંગી કે ઈલાહી અગર મુઝસે ઈસ કિતાબમેં કોઈ ગન્તી યા બુલયુક હુઈ હો તો મુઝે ઈસપર મુતલેઅ (ખબરદાર) ફરમા.

उस्के बाद आपने किताबको अक्वव से आभिर तक अेक अेक वरक भोल कर देभा तो सिई पांय या छे नगलोंसे मज्जुन मीटा हुआ था.

(बिनाया शई छिदायड/४/१२७)

हिंदुस्तानमें अेक दौर अैसा गुजरा छे के हसे निजामी के पुनुहमें आने से पहले “मुफ्तसइल कुदुरी” का पढलेना कमाव की चीज और धर्मियाज था उल्मा और मशाईय उस्के बाद हस्तारे इजीवत धनायत इरमाते थे.

उज्जरत निजामुदीन अवलिया (२.ड.) ने ये किताब अपने जमाने के अडे आलिमे दीन उज्जरत मौलाना अलाउद्दीन (२.अ.) से पढीथी. किताब भत्म होने पर मौलाना (२.अ.) ने प्वाज उज्जरत निजामुदीन (२.अ.) को हस्तारे इजीवत बांधी.

(मजालिरे उलुम-६/२०००/२८)

### उल्माओ दीन का दुनिया से उठ जना :-

मिल्लत के बुलंद पाया अइराह का उल्माकी सइमें शामिल न होने यानी जब उल्मा बनने के काबील लोग उल्मा बनना छोड देंगे तो दौर अरुछे उल्मा से जाली हो जयेंगा. अस्को उदीसमें उल्मा का यलेजना या उल्मा का उठजना कडागया छै. आम तौर पर धस्का मतलब ये लीया जता छे के उल्मा अेक के बाद अेक मर जयेंगे. इीर कोई आलिम दुनियामें बाकी न रहेंगा. मगर जयादा सली बात यहां उल्मासे मुराह दीनी और धल्मी सलावीयत वाले बुलंद पाया के उल्मा मुराह छै.

आज के टेकनीकल दौर में तरककी के मौके और मादी यमक ह्मक बलोल बढ़ गई छै. धंसा भीना पर दुनियाकी तरइ रगभत धन्ती जयादा हो गई छे के आला सलाहियत के लोग दुन्यवी शोअबाँकी तरइ लाजन लग. *جَزَاءُكُمْ فِي الْجَهَنَّمَ بِحَيْزُكُمْ فِي الْإِسْلَامِ* के मुताबिक आला सलाहियत का आहमी ली आला आलिम बनता छै. जब आला जेहनके लोग दीनकी तरइ रगभत नहीं करेंगे. तो इीतरी तौर पर आला किस्म के उल्मासे दीनकी सई जाली हो जयेगी. उस्के बाद सिई वो लोग दीनी शोअबाँ और दीनी धंदारों में मीलेंगे. जो अपनी कम सलाहियत की वजहसे मादी तरककी के अडे मनसब में अपनी जगा न बना सके लो.

મોલાના અશરફ અલી થાનવી (ર.અ.) (વફાત-૧૯૪૩) સે કીસીને પુછા કે આપકે મદ્રસોંમેં આતર કલ આબા કાબિલીયતકે ઉલ્લા પેદા નહી હોતે, મોલાનાને જવાબ દીયા કે અસલ બાત યે નહીં હે. અસલ યે હે કે આલા કાબિલિયતકે લોગ અબ મદ્રસેમેં નહીં આતે.

યહી મતલબ ઉલ્માકે ચલેજને ઓર ઉઠ જને કા હે. જીસ્કા મોલાના અશરફઅલી થાનવી (ર.અ.) ને અપને સાદા અંદાઝમેં બયાન કર દીયા.

યે સુરતે હાલ જે મૌજુદા ઝમાને પેદા હુઈ ઉસ્કા સબબ યે હે જેસાકે ઉપર લીખા ગયા કે જદીજ સાયન્સી ઈન્કીલાબને દૌલત કમાને કે જે નયે તરીકે પેદા કિયે હે. ઉસ્મે આલા સલાહિયત કે લોગોં કો એસે બરતર ઈસ્કાન નજર આને લગે જે પહેલે કબી નહી યે.

માદી તરકકી કી ઈસ કશીષને આલા સલાહિયત કે લોગોં કા રૂખ ઉન તઅલીમી ઈદારોંસે હટા દીયા જહાં ઉલ્મા પેદા કીયે જાતે હે. વો તેઝી કે સાથ ઉન સેકયુલર તાલીમી ઈદારોં કા તરફ ભાગને લગે જહાં વો અફરાદ પેદા કીયે જાતે હે. જે જદીદ તરકકી કે શોઅબોંમેં આલા મન્સબ હાસિલ કર સકે.

(અલ રિસાલા - ૬/૨૦૦૨/૨)

### મન્સબે ઈમામત :-

ઈમામત કા મન્સબ બડી અહમિયત ઓર અઝમત કા હામીલ હે. ઈસલીયે ઈમામ સાહબ કા સલાહીયતવાલા હોનેકે સાથ ઈમામ સાહબકી ઈઝઝત ઓર કદર મુક્તદીયોં કે દીલોં મેંબી હોના જરૂરી હે. ક્યુંકે ઈમામ મુક્તદીયોંકી નમાઝકા જામીન ઓર જીમેદાર હોતા હે. ઉસ્કે ઝરીયે મુક્તદીયોં કી નમાઝ અલ્લાહ રબ્બુલઈઝઝતકી બારગાહમેં પહોંચને કી ઈઝઝત વાસિલ કરતી હે, ગોયા વો ગામ્બૂદ કો ખાલિફ રો જોડને કા વાસ્તા ઓર ઝરીયા હે. નમાઝ મેં ઈમામ કી મુકમ્મલ પૈરવી કરનેમેં હી નમાઝ કા સહી હોના મોકુફ હે. ઈત્ને બડે મન્સબકે લીયે યકીનન કીસી બુઝુર્ગ, મુત્તકી, આલીમ બાગમલ કો હી પસંદ કીયા જાના ચાહીયે.

હુઝુર (સ.અ.વ.) કા ઈર્શાદ હે, જબ નમાઝ પઢને વાલે ત્રીન હો તો ઉન્મેં કા એક ઈમામત કરે ઓર સબસે ઝયાદાહ તાલીમ યાફતા શખ્સ ઈમામતકા હકકદાર હે.

(મજાહીરે હક-૧)

લેકીન આજકલ ઈસ અહમ મનસબકે લીયે કીસી ઈલ્મ વાલે યા

તકવા વાલે કો તલાશ કરનેકી તકલીફ ગવારા નહી કી જતી, બલકે જસ્કો ભી કુર્ત-પાયજમે ઓર ટોપીમે દેખા તો ઉસ્કો ઇમામતકા મોકા દે દીયા. દીની મામુલેમે કીસી ઈસ્મકી તકલીફ બરદાશ કરના, દોડભાગ કરના, માલુમાત હાસિલ કરના એક મુશ્કિલ કામ બન ગયા હે.

હાં અગર લડકી કા પેગામ આ જાયે તો જબરદસ્ત છાનબીન કી જાયેગી. મુખ્તલીફ લોગોંસે પેગામ દેનેવાલે કી તહકીક કી જાયેગી. કિસ બિરાદરી કો હે, કયા ધંધા હે, કહાંકા રહેને વાલા હે, કહાં તક કી તાલીમ હે ઓર કીના કમાતા હે ? વગેરહ. લેકિન નમાઝ જેસી અહમ ઇબાદત કા જામીન ઓર જામ્મેદાર જસ્કો બનાયા જ રહા હે. ઉસ્કે બારેમે કોઈ તહકીક કરનેકી જરૂરત મેહસુસ નહી કી જતી. ન તાલીમ કે બારેમે પુછા જાતા હે ઓર ન ઉસ્કી અમલી જાંદગી પર નજર કી જતી હે. મોહ્વી જેસી શકલ સુરત કા હોના કાફી સમજા જાતા હે હાવાંકે દીન કે સિલસીલેમે એહત્રીયાત સે કામ લેના ઝયાદા જરૂરી ઓર અહમ હે.

આમ તોર પર દેખનેમે આયા હે કે અરબી મદ્રસો કે ઇબ્નેદાઈ તાલીમ કે બચ્ચોં કો ઇમામત કે લીયે મુકરર કર લીયા જાતા હે. હાવાં કે અબી વો સં જાંદગી (સમજદાર) ઓર મતાનત (મજબુત કામ) સે વાકીફ ભી નહી હોતે ઓર પુરે તોર પર પાકી ઓર નમાઝકે મસાઈલ સે ભી વાકીફ નહી હોતે ઇસ્કે બાવજુદ ઉન્કો ઇમામ ઇસલીયે બના દીયા જાતા હે કે વો થોડી તનખ્વાહ પર રાજ હો જાતે હે. ફીર જબ ઉન્કી બે કાયદા જાંદગી પર ઉંગલી ઉઠાઈ જાતી હે તો ઇસી જેસે દુસરે કી તલાશ શુર હો જાતી હે. ઇન સબ બાતોં કો સામને રખ કરે યે બાત બડે યકીન કે સાથ કહી જા સકતી હે ઇસ ગલત ફેસ્લે કે અસલ જામ્મેદાર ઝયાદાતર કમીટી કે અરકાન ઓર એસે મુતવલ્લી હઝરાત હે જે બગેર તહકીક કે ઇમામકો તપ કર લેતે હે.

બોઝ લોગોંકો યે કેહતે હુએ સુના ગયા હે કે બહોત તલાશ કરનેકે બાવજુદ કોઈ અચ્છા ઓર ભરોસેદાર આદમી નહી મીલતા. મેરે ખ્યાલમે ઉસ્કે ચંદ અસ્બાબ હે, જાન્કો હલ કીયે બગેર યે દુશ્વારી ફૂર નહી હો સકતી.

(૧) યે કેસી અજબ બાત હે કે અગર દુન્યવી લાઈનોંકે માહીરોંકો તલાશ કીયા જાયે તો આસાની સે મીલ જાતે હે. જેસા કે લુહાર-સુધાર-

कारभानेदार-दुकानदार-कारीगर वगैरह बगैर कीसी पास परेशानी के मील जाते है. अगर नहीं मीलता तो वो शप्स नहीं मीलता जे हमामतके मन्सबको संभालनेकी सवाहियत रभता हो.

ईस्की बुन्याह दीनसे दुरी और दीनी उलुमसे जे रगजती के अलावा और क्या हो सकती है.? बर्योको मिशनरी स्कुलोमें बेजकर ईस्लामी अकाईद से नफरत होवाना और शिकिया अकीदों को उनके मासुम जेहनमें भीठाना तो गवारा है. लेकिन ये गवार नहीं के वो अल्लाहतआलाके नाजीव कीये हुअे उलुम हासिल करके दीन दुनियामें जुदागी का म्याज हो और अपने वालेदेन और रिशतेदारों को भी नजत के डकदार बनाये.

(२) वो शप्स जस्ने ईल्मेदीन हासिल किया और उसकी पिहमतमें लगा रहा यानी हर्स देता रहा. किताबों लीजी, हजमत और तब्दीगमें लगा रहा जब तक उसके शागिदो, किताबों और दीनकी महेनतसे लोग इयदा उठाते रहेंगे उसके नामजे आमावमें नेकीया लीजी जाती रहेगी.

(३) वो शप्स जस्ने नेक और दीनदार अवलाह छोडी हो जे उसके वीये हुआ करती रहे. अवलाहके नेक और अच्छे आमावका सवाब उसके वालेदेनके नामजे आमावमें लीजा जाता रहेगा.

शरीअतकी नजरमें नेक बर्या वो फलेवालेगा जस्की जंद्गी दीनी तावीमके मुताबिक हो. उसकी शकलो सुरत, लिबास, रेहन सेहन ईस्लामी हो.

जुन बर्योकी परवरीश और तावीम मिशनरी स्कुलोमें हुई होगी वो यकीनन ईस्लामी तेलजीबसे दुर और गैरोंकी तलजीबके वीलदाह होंगे. जैसे बर्यो के करनुत और कारनामे वालेदेन के नामजे आमावमें नेकीयो के बहले बुराईयो में जयाहती को सबब बनेंगे.

मतलब ये है के अगर मुस्लिम समाजमें दीनी तावीमका चलन हो जये तो अच्छे और काबिल, सवाहियत वाले ईन्सान मन्सबे हमामतके वीये मीलना आसान हो जयेगा.

(२) राजब अच्छे और काबिल हमामों के न मीलनेका ये है के उनकी तनप्वाहकी कमी है. हुन्यवी जरुरत हर अक के साथ लगी हुई है. हर ईन्सानको पैसोंकी जरुरत है और हीर कमर तोड महेगाईने हर शप्सकी

मि  
लि  
र  
#  
#  
लि  
लि  
=  
ने  
लि  
उ  
मि  
ह  
मि  
ह

मि  
ह  
मि  
ह

हाथपेरमारनेपर मजबुर कर दीया है. दि

तमाम सरकारी छंदारोंने मजबूरी अलाउन्स के नामसे तनपवालों में छंदारों (वपारों) कर दीया है. लेकिन छंदारों और अज्ञान देने वालोंकी तनपवालों पर कोई ध्यान नहीं दीया जाता. वो बिलकुल कम होती है.

ट्युशन क्लास चलाने वाले आसानी से थंढ घंटोंके सेंकडो रुपिये कमा लेते है. जब के पांच वकतकी नमाज पढाने वाले छंदारोंको मामुली तनपवाले ही जाती है. दावत और सेर तकरीरु में और चीजोंकी जरीदारी में तो छंदारों रुपिये भरबाह कीये जाते है. लेकिन छंदारोंके मजसब पर पाबंदीसे निदमत देने वालोंकी जरूरियातको सामने रखते लुअे अरछी तनपवाले देने का ली कीसीके छंदारोंमें भयाव पैदा नहीं होता.

बाज छंदारों का ये केडना बिलकुल गलत है. अरछे और सवालीयत वाले छंदारों मजसबे छंदारोंसे नृजना परांढ नहीं करते, अगर अरछी आमदनी का छंदारोंको लो तो ये लोग जरूर तनपवाले करेंगे. नैसाके बाज छंदारोंमें देपनेमें आता है.

(३) सबअ अरछे छंदारोंके न मूलने का ये ली है के छंदारोंको वो छंदारों और मुकाम नहीं दीया जाता जे उस्का लक है. मुकतदीरोंके छंदारोंमें छंदारों छंदारोंके लीये छस तरल का अउतेराग, मोलुणत और छंदारोंका नजबा लोना शादीओवो नहीं है. छंदारोंका काम पांच वकतकी नमाज पढा देना नहीं बल्के वो पुरे मलोल्लेका रेडनुमा और रेडनर होता है. वो मुकतदीरोंकी छंदारोंकरने वाला और पेश आने वाले मसाहलका शरह लव करने वाला होता है.

ये सब उस वकत लो सकता है जब के छंदारोंके लीये लोनोंके छंदारोंमें छंदारों अजमत के नजबात लों, नैसा के पेडले के अमाने में होता था के मस्छद के छंदारोंके छंदारों मलोल्लेके रेडनर और रेडनुमाकी होती थी. उस्का छंदारों शरीअत के मुताबिक आभरी होता था. लेकिन मौजूदा दौरमें छंदारोंकी छंदारों अक तनपवाले दार मुलाओंसे जयादा कुछ नहीं रली. हर कोई उस्को टोकना अपना कर्ज समजता है. अगर कमी पुदा न करे उस्को मस्छद पलोंयनेमें दो तीन मीनीट देर लो गर तो हर अक की पेशानी पर बल पड जाते है.

##  
मह  
छंदारों

मजबूरी

दि

प

मि

दि

साहित्य

दिया

छंदारों

दि

दि

—

दि

मज

##

दिया

दि

—

दि

दि

ऐसी हालत होनेकी वजहसे बी काजीव और सलाहीयत वाले  
ईमामों का खिलना मुश्किल हो गया है. नमाजकी अहमियतकी वजह  
से नीचे लीये गये उमुरका भयाव रचना जरूरी है.

- (१) कीरीको ईमामत के लीये मुकरर करते वकत छानबीन जरूर की  
जाये.
- (२) मडोल्ला हर मडोल्ला दीनी तालीम को आम किया जाये ताकि  
मुफ्फिस और दीनदार लोग मन्सबे ईमामतके लीये आसानीसे  
खील सके.
- (३) ईमामों की तनज्वालमें मअकुल (मुनासिब)ईजा किया जाये  
और रेलने लीये मकानका बंदोबस्त किया जाये.
- (४) ईमामों को पुरे तौर पर ईज्जत और ऐदतिरामसे नवाजा जाये.

**ईमामत के तकायों :-**

मन्सबे ईमामत हकीकतमें अल्लाह तआलाकी नेअमत है और ये  
हर कीरीको नसीब नहीं होती. बल्के जोस पर भास अल्लाह तआलाकी  
ईनायत हो वोही ईस नेअमतसे सरकराव किया जाता है. और ये ओक  
जुदाई उसूल है के जब तक नेअमत की शुक्रगुजरी की जाती रेलती है. तो  
उरमें जयादती और बरकत लाती रेलती है और जब ना शुकी की जाती है  
तो उसको मुसीबत और तकलीफ में तब्दील कर दीया जाता है.

युनांचे ईमाम हजरातको याहीओ के वो मन्सबे ईमामतकी कहर

दानी और शुक्र गुजरी में कोई कोताही न करें. ईमाम अपनी आदतो,  
अज्वाक और रहन सहन और मामलातमें पुरी तरह शरीअतका पाबंद  
रहे. उसका खलना खीरना उठना बेठना खाना पीना सब सुन्नतके  
मुताबिक हो क्युंके ओ गिहमत अल्लाह तआलाने उसको अता की है. वो  
बलौत जयादा अहम और बडी है.

ईमाम मुकतदीओ के लीये काजीवे तकलीद और इत्तिबाअ के लायक  
होता है. उसका तर्ज अमल और खीरदार उस्वओ हस्नाकी लेरीयत  
रખता है. लेकिन ये सब उसी वकत होगा जब के ईमाम अल्लाह से  
उरनेवाला मुत्तकी (और)परलेजगार हो. युनांचे मन्सबे ईमामत पर लगे  
दुओ शप्सको हर तरह से अपने आमावके खीसाबमें लगे रेलना याहीये

मि

मि

मे

कि

जि

यो

आर

हि  
वि

=

५१

५  
५१

१०

ई  
कि  
र  
जि



(૩) દીની મદારીસ

મદારીસ કી અસલ રૂઃ:-

બાઝ લોગોંકા કેહના હે કે દીની મદારીસ અપની મૌજુદા શકલમે બે કાયદા હો ગયે હે. જરૂરત હે કે ઈન મદારીસ કો મોડનાઈઝ કીયા જાયે ઓર ઉર્ન ઉલુમોઈદ ઓર જદીદ પુનર કો દાખિલ કીયા જાયે.

ઉંકી ઈસ બાત પર હમે ઈત્તિફાક નહીં હે. મદારીસકો સિફ દીની તાલીમકે લીયે ખાસ હોના ચાહીયે. મૌજુદા દૌરમે મદારીસ કે અંદર જે કમી આઈ હે વો યે હે કે અબ મદારીસમે એસી ગેહરી તાલીમ નહીં હોતી. જૈસી પેહલે ઝમાને મેં હોતી થી. મદારીસમે અસલ કામ ઉંકે તાલીમી મેઅયાર કો બઢાના હે. ન કે ઉંકે નિસાબમે જદીદ મજમીન કો દાખિલ કરના હર કોમ્યુનીટીકી એક જરૂરત યે હોતી હે ઉંકે દરમ્યાન મઝહબી ઉલ્મકા એક તબકા હો જે મઝહબી એઅતિબારસે ઉંકો સહી રહેનુમાઈ દેતા રહે. ઈસ મકસદ કે લીયે હિંદુઓમે પાઠશાલાએ ઓર ઈસાઈયોમે મીશનરી હોતી હે. ઈસી તરહ મુસલમાનોમે મદારીસ હે.

સેક્યુલર તાલીમ બેશક જરૂરી હે મગર ઉંકા ઈન્તિજમ અલગ ઈદારો મેં હોના ચાહીયે ન કે મદ્રસોમે.

મદારીસકે મૌજુદા હાવાત પર ઈમિનાન નહીં હે. મદારીસ કી ઈસ્લાહ કી જરૂરત હે. જસ ઈસ્લાહ કી જરૂર હે વો યે નહીં કે ઈસમે મોડર્ન ઉલુમ પઢાએ જાયે બલકે અસલ જરૂરત યે હે કે ખુદ કદીમ ઉલુમકી તાલીમકો ઝયાદા બેહતર બનાયા જાયે. તાકી મદારીસમે ઈસ્તિદાદ વાલે ઉલ્મા પૈદા હો.

જલ્દીક દુન્યવી ઉલુમકા તઅલ્લુક હે બશક વાં ભી જરૂરી હે. મગર ઈસ્કી સુરત યે નહીં કે ખુદ ઈન ઉલુમકો મદારીસકે નિસાબમે દાખિલ કીયા જાયે. અગર એસા કીયા જાયેગા તો ઉંસ્કી મિસાલ વો હોગી જે અંગ્રેજી મકુલા - (Jack of all master of none) હર ચીઝ કા જનકાર, માહિર કીસી ચીઝકા નહી. કે મિસ્દાક (તસ્દીક કરને વાલે) હોગે.

ઈસી લીયે ઝયાદા સહી તરીકા યે હે કે જે તલ્બા ઈસ કાસ્મકા શૌક

रખते है वो तावीम के दौरान या तावीमके बाद सेक्युलर हँदारीमें ज कर  
 उलुमे दून्यनी में नरुरी तरनियत दाशिया करे.

दीनी तावीमके अतिबाहसे मोनुहा जमानेकी सबसे बडी नरुत  
 ये है के आन हमारे मदारीसमें जैसे अइराह पैदा नहीं हो रहे है. जे  
 दीनी उलुम पर माडिरीना अंदाज में राय दे सके जब के मदारीसका  
 असवी मकसद यही है.

मुस्लिम दुनिया में ऐसे लोगोंकी बढोत कमी है जन्की तरफ दीनी  
 मामलेमें पुर अतिमाह तोर पर उनुअ किया जये. जे कुर्आन, उदीस,  
 श्रीकड, ईस्लामी तारीफ, अरबी अहब वगेरह मोनुआत पर गेहरी  
 बसीरत रખते हो और सही और ठीस राय दे सके ये मुस्लिम दुनियाका  
 सबसे जयादा संगीन बोहरान (सप्त बीमारी) है. मदारिसको  
 मोईनाईज करनेसे ये बोहरान अन्त न होगे बल्के वो मोनुहा मदारिस  
 की तावीमको मनुभुत करने से होगा.

मोनुहा मदारीसके पास वसाईलकी कमी नहीं. ईस्क ओक युजुत ये  
 है के हर मद्रसा जे पहले "तावीमी जुपडे" की हेशियत रખता था.  
 आन वो ईमारती अउरबाहसे "तावीमी महेल" की सीनीई दीभाई  
 देते है. ईस वीये मदारीसको आमामना (सही मकसद के) बनाने के वीये  
 असल नरुत ये है के उस्के ईल्मी मेअयारीको बढाया जये न ये के ईस्के  
 निसाब को बढवा जये.

ईस सिलसीलेमें काबिले जिंक बात ये है के १९४७ से पहले मद्रसी  
 में आला हजेका ईल्मी मालोल था वो आब्ट के मदारिस में नरुत नहीं  
 आता. उस वकत मद्रसी में ऐसे उरनाह दोने थे के वो मुअलजल तोर पर  
 तल्बकी ईल्मी निगरानी करते थे और जयादा से जयादा वकत हँकर  
 उन्को आगे बढानेकी कीशीशी करते थे.

काशिरी (अल रिसाला-८/२००१/४३)

**निसाबें तावीममें तब्दीलीका कमीया :-**

बहोत से लोग दीनी मदारीस के निसाबे ताविम पर अतिराज  
 करते है. ईस सिलसीलेमें चंद बातें नरुती है. ये बात समज लेना यादीये  
 के दीनी मदारीसका नरुनुव अेन (मकसद) क्या है ? ईसी मकसद पर

ઉન્કી કામ્યાબી ઔર નાકામી કો પરખા જા સકતા હે. દુન્યવી તાલીમકી કસોટી પર ઉન્કી કામ્યાબી ઔર નાકામીકો પરખના ગલત હે. દુન્યવી તાલીમકા ઉમુમી મક્સદ યે હે કે હુકુમત કી મિશનરી કે બહેતર પુરજે તૈયાર હો. લોગોંકી મઅાશી હાલત અચ્છી હો. તિજરત ઔર ટેકનીક કે નયે ઝરીયે કા ઇસ્તિમાલ આમ હો ઔર લોગોં મેં સૈયાસી બેદારી આયે. અખ્લાક ઔર તરબિયત કી તાલીમ દુસરે દર્જા મેં હે.

જબ કી દીની દર્સગાહોં કા મક્સદ અપની દીની તાલીમ મેં ન રોટી, ન કુર્સી સે મતલબ હે બલકે તેહઝીબે નફસ હે કે ઇસ તાલીમ સે એસે લોગ પેદા હો જો ઇન્સાનિયત કે સચ્ચે ખિદમતગુજાર હો ઔર ઉન્કી ભલાઈ ચાહનેમં અપની જાન ઔર માલકી પરવાહ ન કરે. જાહીર હે હમં દીની મદ્રસોસે ફારિગ હોને વાલે અફરાદ કી કામ્યાબી ઔર નાકામી ઔર દીની મદ્રસોકે કમાલ ઔર નુકશાન કો ઇસી મેઅયારસે જાંચના હોગા. જીસ્કો લેકર યે ઇદારે ખડે હુએ હે. બેશક વો ઇસ મક્સદ મેં કામ્યાબ હે. હમં કોઈ હક નહીં કે હમ ઉન્કો દુસરે મેઅયાર સે જાંચે ઔર ફીર ઉન્કી બુરાઈ કરે.

ઇસ બુલંદ મક્સદ મેં તબ્દીલીકી કોઈ બાત કબુલ નહીં કી જા સકતી ઔર ન કોઈ એસી નિસાબી તબ્દીલી કાબીલે કબુલ હો સકતી હે. જો ઇન મદારિસકે મક્સદમં અસર અંદાઝ હો. જહાં તક જુઝવી (મામુલી) તબ્દીલીયોં કી બાત હે ઉસ્મેં કીસીકો ઇન્કાર નહીં. ઇસ સિલસીલેમં હઝરત હકીમુલ ઇસ્લામ કારી મોહંમદ તૈયબ સાહબ (ર.અ.) કી નિહાયત જયીતુલી બાત પેશે ખિદમત હે. ઉન્હોં ને અરબી, ફારસી નિસાબે તાલીમ કે બારેમં એક સરકારી કોન્ફરન્સ મેં ખિતાબ કરતે હુએ ફરમાયા યા.

મદારિસે અરબીયહ કે “નિસાબે તાલીમ મેં તબ્દીલીકા કઝીયા” તો મુઝે ઇસ ઉસુલ સે ઇન્કાર નહી ઔર ન કીસીકો હો સકતા હે. જીન તાલિમાત કા “વહીએ ઇલાહી” સે તઅલ્લુક હે ઉસ્કી તબ્દીલી પર ન હમ કુદરત રખતે હે ઔર ન હમોહક હે. બાકી જો કિતાબોં યા ફુનુન (હુન્નેર) કુર્આન કે ખાદિમ કી હેસિયત સે તાલિમ મેં હોતી હે. વો ઝમાના ઔર અહેવાલ કે એઅતિબારસે બદલ સકતી હે.

कुर्आन हर जमानेमें ओक रखा. लेकिन उसके समजनेका अंदाज भदलता रखा. जोस दौरमें इलसफ़े का और हुआ तो कुर्आनको इलसफ़ाना रंगमें समजया गया. जोस दौरमें तसव्वुफ़का और हुआ तो कुर्आनको सुफ़ियाना रंगमें समजया गया. आज सायन्सका दौर है तो वो सायन्सी रंगमें तब्दली करेगा. एन तमाम हकीकतोंकी मैं बतौर भुवासा एन अल्हाजमें वा सकता हूँ के "मसाएल पुराने हो और हवाएल नये हो" एम एन्डी फ़ितरी मसाएलको ज़दीह आवातसे मुसल्लेह (तैयार) करके मेदानमें लारेंगे.

बस ! निसाबकी तब्दीली इसके सिवा कुछ नहीं के एम अपने मुभातबाकी जवानमें अपने घरकी यीज उनके सामने पेश कर दे.

न "वली" की किताबें और मसाएल भदले जा सकते हैं और न हमें एस्का (हकक) है. एंस वीये वकत के तकाजोंसे ये कुनुन (हुन्नर) और तअबीरकी किताबें भदलती सदलती रही है. और बराबर भदलती रहेगी. भुद हसे निजामीको तावीफ़ करना ही तब्दीलीके निसाबकी सबसे बड़ी हलील है. क्युंकी ये निसाबकरने अज्वल (भुलझाओ राशेदीन के दौर) का नहीं वो वकतके तकाजों से बनाया गया है. जब उसकी शुरुआत के वकत तब्दीली मुश्कीन थी तो आजभी मुश्कीन है.

अहरहाल निसाबे तावीममें तब्दीलीयां होती रहेंगी, लेकिन ये जरूर है के ज़म्मेदार उल्माही करेंगे. हर दौरमें बसीरत रहनेवाले मुक़क़ीर उल्मा पैदा होते रहे हैं. जन्डोंने वकतके तकाजोंको पुरा किया है.

ये २१ वी सदी आ रही है, वो कौमों के एजतिमाएँ मसाएल की सदी है कौमों के उर्रों जवाव (यदती पडती) की सदी है. एंस वीये कुर्आन मज्हदको एम एंस तरह (पढाये)के उर्रे/एजतिमाएँ मसाएल पर जे भदस की है और कौमों का जे उर्रों जवाव का जे ज़रूज वीया है उन सबकी निशान-हूदी करके तल्बाको मुत्मएँन और मुनबयम करना चाहीये. वो आलमी मसाएल जे अहर्गा में कुर्आन मज्हदसे हलील पेश कर सके.

ये जाते एंस वीये पेश की गएँ के जे लोग दीनी मदारिसके निसाब पर ओजतिराज कर ज़ेदते है और उर्रे पुरी तब्दीलीकी जाते करते है. उनके सामने असल हकीकत भुली नहीं होती और वो न दीनी मदारिसके

मकसद और उसके निसाबके मेहवर (बुन्याद) को समजते है और वो ये नही जन्ते के उसके बारेमें खुद कीकरमंद उल्मा और अकाबिरे मिल्लत जलोत अहसास रफनेवाले है.

### दुन्यवी और टेकनीकल तालीम की जरूरत :-

- (१) मुदसाप्ता (बन बेठेले) दामेशवराने मिल्लत जन्का कोई बरया मद्रसोंमें नहीं पढता.
- (२) मुष्वीस मुसलमानोंका वो तब्का जे तालीमको मआश (रोजगार) की कीकर से वाबस्ता रफने का प्वालीशमंद है.
- (३) खुद उल्माओ किराम का वो तब्का जे एन मदारीसोंकी दीनी हुंसियतमें बेहतरी लाना याहता है.

मेरे नजदीक एक नंबरके तब्केके अतिराज पर गौर करना अपने पकतको बरबाद करना है. ये लोग दीनी मदारीसकी इडानी पोलीशन ही नहीं समज सकते. असलमें उनको उल्माकी क्रियादत (सरदारी) से उसद है. क्युंकी ये सरदारीको अपना पानदानी हक समजते है. पास कर एन डावातमें जन्के बख्ये एन मद्रसोंमें पढते है वो एन मद्रसोंके निजामसे कीसी न कीसी उद तक मुत्मर्हन है. हर असल एन अतिराज के पीछे एक प्लान है के उनके उजारों ग्रेज्युअट जे बेरोजगार है अगर एन मदारिसमें दुन्यवी तालीम पढाए जने लगे तो एनके बेकार ग्रेज्युअटोंको रोजगार मिल जयेगा. यही वजह है के ये लोग लुकुमतसे तजवीज पास कराते है के अगर दीनी मदारीसवाले अपने यहाँ दुन्यवी तालीम देना चाहे तो लुकुमत असे मद्रसोंको तनप्वाह देने को तैयार है. हर असल ये एन इस्लामी किल्लो में घुसपेठ का एक हसीन प्लान है. ताके आपिरमें ये मदारिस दुन्यवी तालीमके इदारेही बन कर रहे जये. और दीन यहाँसे रुपसत हो जये.

अब आते है नंबर दो के तब्केके अतिराज की तरफ. जे दीनी तालीम को जरूरते मआश से वाबस्ता करना चाहते है. ये उल्का अपने मआशरमें मजबुरी के डावातके पेशे नजर बेशक मुष्वीस है. लेकिन ! उनहोंने अपनी कीकरमें जाज कुअनि मज्हद के वाजदा को

मं

इराभोश कर दीया है. कुआन मज्जुह्मै ईशाद है

وَمَا مِنْ ذَاتٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا. (प १२, १६)

दुनियामें कोई मज्जुह्म ऐसी नहीं है के जस्की रोजीकी जम्मेदारी पुदा पर न हो. उन्हे रसुले अकरम (स.अ.व.) की ये छिदायत याद नही है के उल्माअे ईस्लामका हनी सम्भियाअे अनईसाराईव के बराबर है. और अत्मे नमुव्वतके बाद इराईजे नमुव्वतकी तमाम जम्मेदारीयां उल्माअे ईस्लाम पर डाली गई है और मदी वो कुआनी जमाअत है जसे लंमेशा ईस्लामकी तब्दीगमें मशगुल रेहना है.

दरज

द

क

=

क

ईस तब्केको ये नही मालुम के आब्दसे दोसो साल पेहले तक तावीम की मंजीले मकसुद रोजी लासीव करना नही था. बल्के समाजको पुद अपनी ईस्वाल्के वीये अेहले ईल्म उजरातकी तलाश और जइरत डोती थी और समाज उन उजरातका पुरे तीर कड़ीव खोता था. पीछले दौर के उस्ताअे और भुजुगों के डालात पढ वीजये तस्दीक हो जयेगी.

मौलाना अेअजाज अली (र.अ.) (शेगुल अदब दाइल उलूम देवबंद) को अेक मरतबा "दाईरतुल मआरीफ़ डेद्राबाद" की तरफसे पुद निजाम की तरफसे पांचसो रुपिया मालाना तनज्वाल् पर काम करनेका ओकर मीला. उस्का जे जवाब उन्डोंने दीया वो नीचे दींजा जाता है.

मद्रसासे पंढरड रुपये मालाना मिलते है. मेरा काम मीठ-नो रुपयोमे चल जाता है. परेशान रेहता हुं के बाकी रकम कीस तरड अर्थ करूं? पांचसो रुपिया मीलने लगे तो में भरबाद हो जउंगा! मेरी तरफसे मअज्जरत कुजुल इरमावे.

दीनी ईदारी को मंजीले मकसुद समजने के वीये जनाब मौलाना याकुब साडब (र.अ.) मोलतमीम दाइल उलुम देवबंदका ये कोल पेशे नजर रभ वीजये. जे उन्डोंने कारी महंमद तैयब (र.अ.) के वालीद मौलाना अहमद साडबसे इरमाया था.

डमें तो वोडी आदमी पैदा करने है जन्का कोई गालक दुनियामें न हो. अगर ईन्का कोई गालक दुनियामें मील गया तो वो डमारे कामसे गया.

मेरा ज्वाव ये है के उस्के बाद ये समज जयेगा के ईन ईदारीमें सिई

अंभियाअ

#

रि २  
आड-नव रुपियाअे

||

वोली आदमी पैदा करने है जे हर वक्त तब्दीगे ईस्लाम में मशगुल रहे और समाज को पुदाई छिदायत से इशनास (वाकीफ़) कराती रहे.

अब रहा सवाल रोज़ी का तो ये दुनियाका माना (हुआ) उसुल है के जे अस्की नोकरी करता है वोली उस्की जरूरीयात का कशीव होता है. जब ये जमाअत पुदाकी मुवाजिमत में दाखिल हो गइ तो अब उस्की अपनी रोज़ रोटी की कोई किक नहीं होना याखिये वो रब्बुल आलमीन है. जे दुनियाका सबसे बडा ईन्तजाम करने वाला है और अपनी जम्मेदारियों को हमसे बेहतर जानता है.

तीसरा उल्का उल्माअे किराम की राय. उन्की हर राय काबिले अहतिराम है. बेशक ये अक सदाकत है. के अक अरसे से मदारिसे ईस्लामियल की अकसरियत का तालीमी बेअयार और ईन्तजामियाका ढांचा कुछ कमजोर हो गया है और वो बेशुमार छोटे मदारिस जे बडे मदारिस को अच्छे और ईस्तिअदाद वाले तल्बा इरादम (जमा) किया करते थे, अपनी जम्मेदारियों को उस्के उकक को मुताबिक पुरा कर नहीं पा रहे है.

खिन्दुस्तान में मुसलमानों की दीनी इल्मी सरगमी का मरकज (सीक) उल्माअे किराम ही है. लेकिन मदारिसे दीनीयल की मौजूदा ढावात के ल रली है के अगर रली ढावत रली तो ये अतिमाद बढोत जल्दी ढाल जयेगा. ऐसी सुरत में ये जरूरी हो जाता के हम अपने दीनी किल्लों की मरम्मतका काम बढोत लोश में ईसे अंजाम दे. जहाँ जहाँ बुनियादी में कमजोरी आ गइ है उस्को दूर करें.

### दुन्यवी तालीमकी आमेजीश (मीलावट) :-

अल्मी यंद रोज़ पहले बंगालके वजरी आवाने बंगालके बाज जम्मेदार उल्माको बुलाकर मदारिस में दुन्यवी तालीम को निसाब में दाखिल करनेकी बात की है.

अजब सितम जरीकी (उसी उरी में जुल्म करना) है के सब को ईस्की तो कर ले के मदारिसे अरबियल में दुन्यवी तालीम दी जये. लेकिन (कान्) जैसे ढांगे अन्को ये जयाव आता होगा के दुन्यवी तालीमगालों में दीनी तालीम और तरबियतका बंदोबस्त किया जये.

અબ અસલ મદારિસકી જીમ્મેદારી હે કે વો ખુદ ગૌર કરે કે તલ્લા કો દરેં નિઝામી કે અલાવા કોઈ ઓર કિતાબ યા ફન જીયાયા બને ? જમાને કે હાલાત ગૌર તમાજો કી વજલ સે મે બાત અમલમાં આતી હે કે જો ચીઝે હકીકતમાં જરૂરી હે ઉસે નિસાબમાં દાખીલ કરલનમાં કોઈ હસલ નહીં. બતોર તજવીજ ઓર મશવરેકે હમ ચંદ ચીઝે પેશ કરતે હે.

- (૧) જરૂરી હદ તક અંગ્રેજી તાલીમ
- (૨) હિસાબ ઓર પહાડે
- (૩) અહમ જરૂરી જુગરાફીયાઈ (જમીનકી) માલુમાત
- (૪) દસ્તુરે હિંદ (Constitution of India Citizenship)

હિન્દુસ્તાની શેહરીયોંકે ફરાઈઝ, શેહરીયોંકે બુન્યાદી હુકુક વગેરહ કે બારેમં વાકિફ કરાનાં.

ઇસ્કે લીયે જરૂરત હે કે ઐસી કિતાબોંકી પસંદ કીયા જાયે ઓર અગર ન મીલ સકે તો ઇલાકે કે એઅતિબાદ્દી સે કુછ કિતાબેં તરતીબ દી જાયે. જો અરબી મદારિસકે નિસાબ ઓર માહોલસે ટકરાતે ન હો.

જરૂરત કે બાવુજુદ એહલે ઇલ્મ હઝરાત કોલેજકી બુન્યાદી કિતાબેં અપને યહાં જરી કરતે સે ઇસ લીયે પીછે હટ જાતે હે કે જૈસે હી કિતાબેં ખોલી જાતી હે તો કહી કુત્તેકી તસ્વીર તો કહીં સુવ્વરકી, કહી દેવ નજર આતા હે. એક તરફ યે કિતાબેં એકદમ ઇસ્લામી તાલીમ સે ખાલી હોતી હે ઓર ખુરાકાતસે ભરી રેહતી હે. જહીરે બાત હે જહાં ખાલીસ તોહીદ ઓર સુન્નતકી તાલીમ દી જાતી હો ઇસ્લામી તરીકે સીખાયે જાતે હો યે બાતેં તબીયતમં બિગાડ ઓર મિજાઝમં ખોટ પૈદા કર દેતી હે.

### સપ્લાય હાઉસ :-

દીની મદારિસકા એક ફાયદા વો હે જીસ્કો એક લફઝમં સપ્લાય હાઉસ કહા જાતા હે. સપ્લાય હાઉસ સે કયા મુરાદ હે જો એક મિસાલ સે સમજમં આ સકતા હે.

આપ જાનતે હે કે હિન્દુસ્તાનમં બહોત બડે પૈમાને પર સ્કૂલ, કોલેજ, યુનિવર્સીટીકી સુરતમં બહોત બડા કામ હો રહા હે. હુકુમત બડી માલી ઇફ્ટાદ દેકર ઉન્કો ચલા રહી હે. કયુંકે યે તાલીમી ઇદારે મુલક કે લીયે સપ્લાય હાઉસ કા કામ કર રહે હે. મુલક કો હંમેશા ઐસે અફરાદ કી જરૂરત

हे जे मुल्ककी बडी जरूरतों के काम चला सके. ये एंघारे जैसे सवाखियत वाले एन्सान तैयार कर रहे है. टीचर, क्लार्क, अइसर, मेनेजर, डॉक्टर, अंजनीयर, वकील, सुपरवाइजर, ओडीटर, पायलोट, सेक्रेटरी, ओडमीनीस्टर वगैरह. ये तमाम अइराह एन्डी एंघारोंसे पैदा हो रहे है. जन्को स्कूल, कोलेज-युनिवर्सिटी कला जाता है.

खेडी मामला मुस्लिम मिस्वतका है. एस मुल्कमें बसने वाले २० करोड मुस्लिम मिस्वतको लंमेशा जैसे अइराहकी जरूरत है जे उसके मुफ्तकी ईनी और मिल्वी जरूरतोंको पुरा कर सके. जैसे तमाम अइराह तैयार करने के लीये ये मदारिस गोया अक मुस्लिम सप्लायडाउस का काम कर रहे है.

हिन्दुस्तानमें एस वक्त जे शुमार मस्जिदें है एन मस्जिदोंको एंमाम एन्डी मदारिस से मिलते है. जेशुमार तावीमी एंघारोंको यहीसे मुदरिस सप्लाय हो रहे है. एंसी तरह मिल्वी एंघारोंके लीये नाजीम, तस्नीक व तावीह के लीये मुसलीक और मिल्वी सहाइत के लीये ओडीटर एन्डी मदारिस से सप्लाय होते है. एस वक्त मुसलमानोंमें बढोतसी जमाअतें कायम है. एन तमाम जमाअतोंको कामके आदमीको सप्लाय यहीसे हो रही है. मिसाल के तौर पर तब्लीगी जमाअत बराह रास्त मदारिसकी पैदावार है. ये मदारिसमें पैदा होनेवाले उल्माही ये जन्डोंने एस जमाअतको शुरु किया और इर एसको मौजूदा आलमी सतह तक पहुंचाया.

मौजूदा जमानेमें अक नयी चीज पुनूहमें आयी जइस्को कोम्प्युटर कला जाता है. उसके लीये हर जगह उर्दू ऑपरेटर और अरबी ऑपरेटर की जरूरत थी. जे अयाहतर एंसी दीनी मदारिसके सप्लाय डाउस से तैयार हुअे.

एंसी तरह सकारत जानों और रेडीमी और उमुरे जारज (अवथी) से तअल्लुक रपने वाले एंघारोंको अरबी और उर्दू ज्ञाननेवाले अइराह की जरूरत थी ये जरूरतमी अयाहतर एंसी मदारिससे दीनीयह के सप्लाय डाउससे पुरी हुई वगैरह.

**पुष्पा उम :-**

मद्रसा हो या कोलेज या युनिवर्सिटी कोई भी छंदारा कीसी छन्सानको मुकम्मल छल्म नही देता और न दे सकता है. छन्सान अपनी पुष्पगी की उम्रको उम्र सालके बाद पहुंचता है. जब मद्रसा या युनिवर्सिटीकी तालीम छस उम्र से पहले ले ही मुकम्मल हो जाती है औसी हालतमें ये मुम्कीन नहीं के कोई तालीमी छंदारा कीसी छन्सानको कामिल छल्म दे सके. छस तरह अक किलो के भरतनमें दस किलो दूध रचना मुम्कीन नहीं छसी तरह तालीमी छल्मी की उम्रमें कीसीको कामिल छल्म भी नहीं दीया जा सकता.

(दीन-व-शरीअत-१३८)

**दीनी हुन्यपी तालीम का इर्क :-**

जे तालीम छन्सानको पुष्पा की ना इरमाना के रास्ते पर ले जाये वो छल्म और तालीम कीसीभी किमत पर छस्लाममें मतलुब नहीं है.

अपे छ तर्ज और अंगे के ढबके स्कुल और कालेज और युनिवर्सिटीकी तालीम और उस्का निसाब और निजाम छस्ने क्लयरके नाम पर अवातीन और कुंवारी लडकीयो को नंगा और आली करके रभ दीया है. छस्ने छन्सानियत, शराइत और और बुराई के डर अलसासको छरके गलत की तरह अलनोंसे पुरय कर रभ दीया है और छन्सानको अक क्लयरड डयवान बना दीया है. छस तालीम और उस्के निसाबे तालीम के निजामका छरगीज छरगीज कुआने मछदके (أَفْرَأَ ) से कोई तअल्लुक नहीं है.

कुआन मछदमें **إِنَّمَا يَخُشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ** से साइ तौर पर मालुम होता है के छस्लाममें सिई वो ही छल्म पसंद कीया गया है. जे छन्सान के जीवमें अल्लाह का डर और तकवा पैदा करे. और छन्सानको पाक साइ नेक और बेदाग छंदगी गुजरने के लीये आमादा (तेयार) करे.

जे लोग **أَطْلَبُوا الْعِلْمَ وَلَوْ كَانُوا بِالصَّيْنِ** जेसी गेर **सीअतरे** के छरके रिवायतों को छल्म के तलब करने को इर्क होने की दलील बनाते है. में उन्से सवाल करना थाडता हुं के मानवो अगर रसुले अकरम (स.अ.व.) छस वकत दुनियामें कुछ मछद के लीये तशरीफ ले आये और युरोप अमरीका

मदत

अमेरीका

#  
गि  
या  
कि  
इ  
गि

दि

#

लि

गि

द

नहीं बल्के हिंदुस्तान के किसी एक शहर का सहर करे और आपको ये  
 ६६ मावुम हो के (जैसा के वील्डी के एक अम्बारमें ये जबर छपी है) के  
 मुसलमानों की एक मशहुर ज्ञानाना कोलेज की कुछ लड़कियां वील्डी की  
 इलां होटेवमें अेश करती लुई पाई गई. या स्कुल के तल्बा अपने उस्तादों  
 के नाम बिगाड़ कर उन्को गालियां देते और बेईजजती करते है. तो क्या  
 ६७ डुजुर (स. अ. व.) तलबे ईल्म का वोली मतलब भयान इरमायेंगे. जे ये  
 दुन्यवी तावीम के माहीर बता रहे है ? ..... इरगोज नही.

(अल इरकान-८/२००३/२५)

दुन्यवी हर्सगाडोंमें तावीम पाया हुवा ईन्सान जब वहां से निकलता  
 है तो वो अपनी खंडगी के मकसद को ज्ञाननेमें बिलकुल अधुरा होता है.  
 वो खंडगीकी शरआतको तो ज्ञानता है. मगरवो अंजामको नही ज्ञानता.  
 ७५ उस्को ये तो मावूम है के वो दुनियामें अपनी खंडगीकी सरगमीयो को  
 ७६ कहांसे शर करे. मगर उस्को ये ईल्म नही होता के उस्की आभरी मंजीब  
 क्या है? और खंडगीके अंजामके लिहाजसे कीस किसमकी तेयारी करना  
 याहीये, वो जहदीरमें अपनी खंडगीकी शरआत उजलेमें करता है मगर  
 आभरी उम्नको पलुंचकर उस्की खंडगी ना मावुम अंधेरीमें लटक कर रह  
 जाती है.

जबके दीनी मद्रसोंमें तावीम पाये हुअे ईन्सान का मामला पुरे तोर  
 पर उससे अलग है. यहां का ईन्सान अपने को कुर्आनकी रोशनीकी  
 बुनियाद पर पुरी बसीरतके साथ ये ज्ञानता है उस्को अपनी खंडगीका  
 सहर कहांसे शर करना है और उस्की आभरी मंजीब क्या है. जैसा  
 ईन्सान ईस पकडे यकीन पर भडा होता है के मौनुहा दुनियाकी हैसियत  
 रास्ते की है और मौतुके बाद आनेवाली आभिरतकी दुनियाकी हैसियत  
 मंजीब की.

दुन्यवी हर्सगाडोंमें खंडगी गुजरनेका जे इवसफा सिभाया जाता है  
 वो ये है के ईन्सान लज्जत और ખुशी लासिल करनेको अपनी खंडगीका  
 ७७ मकसद बनले युनांचे आन गेरदीनी हर्सगाडोंमें तावीम पाये हुअे तमाम  
 लोग ईसी आस मकसदके मुताबिक खंडगी गुजर रहे है. याहे वो  
 हिंदुस्तानके लोग वो या बाहरके मुल्कोके लोग - ईस जेहनके लोग अपनी



ઉસ્કો વો અપને લીયે કાફી સમજતે હે ઉન્કા સીના લાલચ, હસદ જેસે ખતરનાક ગુનાહો સે પાક હોતા હે.

યે ચંદ મિસાલે બતાતી હે કે દીની મદારિસ ઓર ગેર દીની ઈદારોંમેં કિત્ના ઝયાદા ફર્ક હે. દીની મદારિસ હકીકી ઈલ્મ પર કાયમ હે. જબકે સેકયુલર ઈદારે ગેર હકીકી ઈલ્મ પર, યે ફર્ક બેહદ બુન્યાદી હે. ઈસ ફર્ક કા નતીજા હે કે જસ લાઈનસે દોનોં કે દરમ્યાન મુકાબલા ક્રિયા જાયે દીની મદારિસ હર એઅતિબારસે સેકયુલર ઈદારોં પર ઉંચે નજર આયેંગે.

(દીન-૧-શરીઅત-૧૨૯)

**દીની તાલીમી ઈદારોંકી કીસ્મેં :-**

હિંદુસ્તાનમેં દીની તાલીમી ઈદારોંકી ચાર કીસ્મેં હે.

(૧) મક્તબ (૨) દારૂત્તહફીઝ (૩) મદ્રસા (૪) દારૂલ ઉલુમ-યા-જામિઅહ.

(૧) મક્તબ :- ઈન ઈદારોં કો કેહતે હે જહાં છોટે બચ્ચે ઓર બચ્ચીયોંકો ઈબ્તીદાઈ તાલીમ દી જાતી હે, વહાં પર બચ્ચે કુઆન મજ્હદ, ઉર્દૂ, ફારસી પઢતે હે. કિતાબત (સુલેખન) સીખતે હે ઓર ધ્રીંતી યાદ કરતે હે. તકરીબન હર મુસ્લિમ મોહલ્લા યા ખાનદાનમેં ખાસ કર મસ્જીદમેં ઈસ તરહ કો તાલીમી ઈદારા હોતા હે. જહાં કોઈ મોઝવી સાહબ યા મસ્જીદ કે ઈમામ ૨૫-૩૦ બચ્ચે બચ્ચીયોંકો ઈબ્તીદાઈ તાલીમ દેતે હે. હિંદુસ્તાનમેં બેશુમાર તાઅદાદમેં મક્તબીબ હોંગે.

(૨) દારૂત્તહફીઝ :- એસે ઈદારોંકો કેહતે હે જહાં કુઆન મજ્હદ કી તજવીદ ઓર કિરાઅત કી તાલીમ કે સાથ સાથ કુઆન મજ્હદ હિક્કજ કરાયા જાતા હે. ઈસ તરહકે અલાયદા ઈદારે મુલકમેં બહોત કમ હે. અલબત્તા મદારિસ ઓર દારૂલ ઉલુમમેં ઉસ્કે લીયે એક અલાયદા શોખા બનાવીયા જાતા હે.

(૩) મદ્રસા :- એસે ઈદારોંકો કેહતે હે જહાં બા કાયદા કલાસોંમે આલીમીયત સોનીયે તક કી તાલીમ દી જાતી હે ઓર નિસાબે તાલીમમેં અરબી, ફારસી, ઓર ઈબ્તેદાઈ દીની કિતાબેં શામિલ હોતી હે ઓર ઉસ્કા ઈલ્લાક (જેડાણ) કીસી દારૂલ ઉલુમ યા બોર્ડસે હોતા હે. વહાંસે ફારોંગ હોને કે બાદ તલ્બા આલા તાલીમકે લીયે દારૂલ ઉલુમ યા જામિઅહ મેં દાખલા લેતે હે. બહોત કમ મદારિસમેં ફારિંગ તલ્બાકો ડીગ્રીયાં દેનેકા

૨૬:૧

૨૭:૩૬

૨૮

આલિમની

૨૯

જા

જા

૨

૨

૨

૨

(૨૫૪૬)

૩૦

अहतिमाम किया जाता है. क्युं के वहां आलिमीयत तक की तालीम नहीं दी जाती है.

(४) दारुल उलुम या जामिअह :- इन एदारों को केहते है जहां आ'वा तालीम दी जाती है. वहां तालीम मरहला (हॉल) वार और बाकायदा निसाब के साथ आलिमीयत या इजीजीयत तक तालीम दी जाती है. कारिग बोने के बाद तल्माओ सनद दी जाती है. अफसर दारुल उलुमों या जामिआतमें शरफ उलुमकी तालीमक साथ हु.पवी तालीम क बारमें वी बुन्यादी माझुमात इराहम (जमा) करने का अहतिमाम किया जाता है.

हिंदुस्तानमें मकतब तक तो लउक्यों और लउकीयोंके लीये मज्लुत (श्रीलीजुली) तालीम का इस्तीजाम है. बेकीन उसके बाद दोनोंके अवायदा अवायदा एदारे लोते है. लउकोंकी तरह लउकीयों के लीये वी मुल्क के गोशे गोशेमें आलिमीयत और इजीजीयत तक अवायदा तालीम का इस्तीजाम है.

मुल्कमें मकातिब दारुतलुकीज, मदारिस, दारुल उलुम और जामिआत की सली ताअदाह दीनी है ? ये बताना मुश्कील है, और नही उसके शीनती की जा सकती है. शायद ही कोछ जल्ला बल्के शहर और मुस्लिम अकसरीयती गांव जैसा ही जहां मजकुरा यार नोजीयत के मदारिस मेंसे कोछ मद्रसा मौजूद नहीं.

(दीनी मदारिस नंबर - अलजमीयत) (१८/१०/२००२-१८८)  
मस्लके देवबंद :-

उजरत मौलाना कासिम नानोतवी (र.अ.) और उनके रकीके पास हमामे रब्बानी मौलाना रशीद अहमद गंगोली (र.अ.) जे आपके दर्स के ली साथी थे और हाज्ज इम्दाहुल्लाह साहब (र.अ.) से बयअत और इरादत (अतिहाद वालों) में शरीक थे. मस्लके देवबंद इन दोनों उजरतसे यवा और आगे बढ़ा. उजरत नानोतवी (र.अ.) ने कस्बा देवबंद में १५, मोडरम-१२८३ हीनरीमें मद्रसा कांठम किया और उसके छ माह बाद सलानपुरमें मद्रसा कांठम किया. दोनों मद्रसों के बानी बंधी सालोंमें वझत पागये. मगर उजरत-गंगोली (र.अ.) १३२३ हीनरी तक जीदा रहे और दोनों मद्रसोंकी सरपरस्ती इरमाह

और दोनों मद्रसे उम मस्वक रहे.

चुंके देवबंद में पड़ेले मद्रसा काँधम डुवा और उसकी शोहरत भी जयादायीँ ठस वीयेँ एन उजरातके मस्वक को "मस्वके देवबंद" के नामसे याद कीया जाने लगा. मस्वके देवबंद के अस्खानका न कोँई (किंकी) है और न अेडले सुन्नतसे उटकर कोँई मस्वक है. बल्के मजुबने उनईमें पुज्तगी और शरीयत और तरीकतमें जमिअत यही हो यीजें मस्वके देवबंद का भुवासा है.

चुंके मस्वके देवबंद के अकाबिरने बिदअतों का रद किया और उम्मेते मोहंमदीया को शिर्के नवी - और जईसे बयाया और तसव्वुइको जखिल सुक्रीयों की रस्मों और आदतोंसे निजारा,ँस वीयेँ बिदअती और जखिल सुक्री भुजुगाने देवबंद के दुश्मन बन गये और कोँई (दीन) अेसा न गुजरा के दीनके दुश्मन भुजुगाने देवबंद के खिलाइ बोडतान बाजी न करते हो.

### उल्माअे देवबंद की दीनी जिदमतें :-

उजरत नानोतवी (र.अ.) और उजरत गंगोली (र.अ.) ने उजरत शाड अ.गनी (र.अ.) से उदीस पढी, वो भुद सुक्रीयोंमें से थे जन्का नसब सात वास्तोंसे उजरत मुजवीद अल्केसानी (र.अ.) तक पहुंचता है.

उजरत गंगोली (र.अ.) मद्रसा देवबंद कायम होने के बाद यावीस साल तक (जुँदा) रहे. उन्होंने शरीअतकी भुज जिदमत की. कँई सालों तक तन्हा सिखासिन्नी (उदीसकी छे किताबों) का हर्स दीया और इतावाकी जिदमत अंजाम देते रहे और साथ ही बयअत का सिवलसिवा भी जरी (रिवा.) उन्के मुरीदोंकी बडी तअदाद डाखर रहेती, उन्में आठ हस उजरात अेसे है जे उजारों पर भारी है. अल्वाइ तआलाने उन्से शरीअत तरीकत का भुज काम वीया. जन्में उजरत मौलाना मेडमुदुल उसन साडब (शे भुवलखिद) उजरत मौलाना जलील अडमद साडब सडारनपुरी, उजरत मौलाना अ. रडीम रायपुरी साडब, उजरत मौलाना जलील अडमद अंजबवी साडब, उजरत शे भुवल ईस्लाम मौलाना डुरीन अडमद मदनी साडब वजेरड (अल्वाइ तआला उन सभ पर अपनी रहमतें

नाज़ील इरमाय़ी) २१.

बलौत अयादा मशहुर हुअे और उन्होंने शरीअत और तरीकत में मुअ काम कीया.

**(४) बयअत और जिलाइत**

उजरत मौलाना कासिम नानोतवी (२.अ.) और उजरत गंगोडी (२.अ.) दोनों उजरत उजरत ढाञ्च एमदाहुल्लाह (२.अ.) से बयअत हुअे और जिलाइत से सरकरा हुअे.

उजरत नानोतवी (२.अ.) से कीसीने मुअा के क्या उजरत ढाञ्च साहब मौलवी थे ? इरमाया "मौलवीगर" थे और ये भी एश्राइ इरमाया के में उलुम ही की वजहसे उजरत ढाञ्च साहब का मोअतफ़ेद हुआ हुं. आबिर कोई तो बात थी के उन उजरतने उजरत ढाञ्च साहबके हाथमें हाथ दीया और मुरीद होनेकी जरूरत में लुस की.

बात वोही है के एलमके साथ कलब मुनीब (इनुअ होनेवाला दीव) भी होना चाहीये. जे लोग एस जरूरतको में लुस नहीं करते वो एलम के गुर्र में साहिबे निरअत उजरातसे दूर भागते है और में लुम रेलते है. ये तो साञ्च करअेकी बात है. साञ्च बहद मो उजरत मौलाना जलालुद्दीन इमी (२.अ.) उजरत तबरेज (२.अ.) के मुरीद हुअे.

एमाम गजाली (२.अ.) बलौत बडे आलिम थे. बलौत मशहुर थे. बडा भरतबा था. लेकिन उन्होंने जरूरत में लुसकी और अपने बातिनको एनाबते एल्लाहसे भावी पाया नइसुका मुराकबा किया अपने मुशदकी तरफ़ इनुअ हुअे और एस्वाले बातिन की तरफ़ जैसे मुतवज्जे हुअे के न सिई अपना भला कीया बल्के क्यामत तक के वीये उल्मा को बेदार किया और रेलती दुनिया तक के वीये "अहयाउल उलुम" दुनियामें छोड कर गये.

जब एत्ने बडे अल्लामाको एस्वाले नइसुके वीये कीसी मुशद और मुस्लेहकी जरूरत है तो कम एलमोंको क्यु उस्की जरूरत न होगी ?

जे उजरात साहिबे निरअत है. जन्को अल्लाह तआलासे तअल्लुक की दौवत नसीब है. वो कुछ नसीहत करते है तो वीलमें उतरती यवी

कि  
पू  
उ  
उर  
उबीय उसावकी लो # इ  
उरशिएकी  
उयू

॥  
१५  
मु  
मु  
आ  
आतिनकी  
उ  
उ  
उ

६

જાતી હે ઓર જીન્કો યે દોલત નસીબ નહીં ઉન્કે પાસ સિફ ઈલ્મહી ઈલ્મ હે વો બડી બડી તકરીર કરતે હે, લોગ ઉન્કી તકરીરે કાનોં કી અપ્યાશીકે લીયે યુન લેતે હે. દીલ પર કીસીકે કુછ અસર નહીં હોતા. યે તજુરબાતી બાતે હે, તજુરબા બડી દલીલ હે ઓર શાહીદે અદલ હે.

દીલોંકી સફાઈ, નફસકી તરબીયત, ઝિક્કી કસરત, મુરાકિબા, મુહાસિબા, હર આદમીકે અંદર હોના ચાહીયે. ઈન કામોંકે લીયે મુશાઈ ઓર મુરબ્બીકી જરૂરત હોતી હે. હિંદુસ્તાનકે મુખ્તલૈફ શહેરોં મેં અકાબિરે દેવબંદ કે ખુલફા મૌજુદ હે. એહલે તલબ ઉન્સે રૂજુઅ ફરમાયે. ઈલ્મબી હાસિલ કરે ઓર અમલી જંદગી ભી સુધારે, જહીર ઓર બાતિન દોનોં આરાસ્તા હો. કુર્આન ઓર હદીસ કા ઈલ્મ આજકલ (યુહુદ ઓર નસારા) કે પાસ ભી હે. ઈસ્લામ પર કિતાબે ભી લખતે હે. સબ કુછ પઢેતે હે મગર ગુમરાહ હે. ઈમાન યકીન ઈલ્મો અમલ જહીર શાતીન કી ઈસ્લાહ ખિદમતે દીન કિરે આખિરત સબ હી ચીઝીકી જરૂરત હે.

(મઝાહિરે ઉલુમ - ૮/૨૦૦૦/૧૩)

### શેખે કામિલ ન મીલે તો? :-

શેખે ઈમામ હઝરત યાકુબ કરખી (ર.અ.) ને ઈમામ બહાઉદીન નકશબંદી (ર.અ.) સે અર્જ કીયા કે હઝરત અગર એસા શેખ જો “ફાની ફિલ્લાહ” ઓર “બાકી બિલ્લાહ” નસીબ ન હોતો વો ક્યા કરે ?

શેખ ને ફરમાયા કે ઉસ્કો ચાહીયે કે ઈસ્તિગફાર કી કસરત કરે ઓર હર નમાઝ કે બાદ ૨૦ મરતબા ઈસ્તિગફારકી પાબંદી કરે. તાકે પાંચ વક્તમેં ૧૦૦ મરતબા ઈસ્તિગફાર હો જાયે.

ક્યું કે હુજુરે (સ.અ.વ.) કા ઈશાદ હે કે બાઝ અવકાતમેં અપને (કુલ્બમે) કદુરત મહેયુસ કરતા હું. ઓર મી હરશેખ ગુલ્લાહની ગાલાસે ૧૦૦ મરતબા ઈસ્તિગફાર યાની મગફીરત તલબ કરતા હુ.

### ફાની ફિલ્લાહ બાકી બિલ્લાહ :-

ઝિક્કી કસરત ઓર મુખ્તલૈફ ઓર રિયાઝત કે કરીબ આપને નફસકો એસા મુઝકકા (સાફ) બનાવે કે ઉસ્મે નફસાની ખ્વાહીશ બાકી હી ન રહે. જો ઈન્સાનકો શર (બુરાઈ) કી તરફ ખીંચતી હે. યે હાલત “વિલાયતે

६२७

भास" का (६) है. जन्की सुक्ष्मलकी जमानमें "क्षानी इल्लाह -  
भाकी गिल्लाह" कहा जाता है. (म. इ. १/२११)

**तसव्वुह के चार सिलसिले :-**

तसव्वुह के बड़े बड़े चार सिलसिले है.

कादरीयह, जैहर वरहीयह, विश्तीयह, नकशबंदीयह,

हिंदुस्तानमें इन चारों सिलसिले के सुक्ष्मया तशरीह लाये. और उनसे लोगोको शायदा पलुंया- मगर ये भी लकीकत है के उसमें अल्ल के साथ कुछ ना अल्ल भी दागिल हो गये. इस लीये हिंदुस्तानके असरसे उसमें कुछ गेर ईस्लामी अनासुर की भी मिलावट हो गई और दीवोंकी सहाई और अलसानुके नाम पर ईशकके नामसे बलौतरी वो रस्में रिवाजमें आ गई जससे उसकी असल रूह जम्मी हो गई.

मगर जैसे मशाईभ दर सिलसिलेमें पैदा होते रहे जे तसव्वुहकी आसल रूह दीवोंकी सहाई और अलसानुके मूतागिक उसमें तजदीह (नये सिरेसे काम) करते रहे. ये सिलसिलेवा सबसे ज्यादा मशाईभे नकशबंदीयह और मशाईभे विश्तीयह में ही भाई देता है. भास तीर पर शेभ अलमद सरलुंदी (२.अ.) और उजरत शाह वलीयुल्लाह (२.अ.) के बाद ये सिलसिलेवा तजदीह के साथ जारी रहा.

२०, वी सदीमें ये काम मशाईभे नकशबंदीयहमें मौलाना इजलुद्दमान गंज मुरादाबादी (२.अ.) और मौलाना अलमद अली मुंगेरी (२.अ.) जानीये नदवा लपनो के जरीया और मशाईभे विश्तीयहमें आलिमें रब्बानी उजरत सियद अब्दुल कुदूस गंगोली (२.अ.) के बाद मौलाना रशीद अलमद गंगोली (२.अ.) और उजरत मौलाना अशरफअली धानवी (२.अ.) के जरीया रिवाज पाया.

(मशाईभे नकशबंदीयह-१५)

**तसव्वुह क्या है ?**

तसव्वुह नाम है, ईस्लामकी रूह और लकीकत का, शरीरके मगज और जैहर का, अक्लक की पाकीजगी और मिहासका, दीवके सुक्ष्म और ईमानान का, मतलब ये के आ'वा ईन्सानियत की तमाम (पुंजीयत) और अच्छाईयां तसव्वुहमें आ जाती है. लकीकी (सखे) सुक्ष्मोंकी

किताबें और उनके डालात के मुताबेसे कोई भी साक्ष दीव ईन्सान असर वीये बगैर नहीं रेडता. अपनी बशरी कौतालीयां अक अक करके सामने आ जाती है. और उनको दुर करने और उम्दा सिद्धतें अपना नका पकका ईरादा दीवमें पैदा हो जाता है. अल्लाहका भौक और उम्मीद और रगबत अल्लाहकी आवाजकी मोडबतसे इह सरशार (नशेमें युर) डोने लगती है. दुनिया और अस्बाबे दुनियासे, बे जरूरत प्याली शींसे परहेज और सिर्फ बे कदरे जरूरत चीजों पर कनाअत नसीब हो जाती है.

“आवमगीब” की डकीकतें सुझाके वीये “लारेब” (शक बगैर की) बन जाती है. अल्लाहकी आवाजके दाईमी जिक और उसके ध्यानसे दाईमी नजदीकी और बुलंदी भरतबेकी सआदत नसीब हो जाती है.

ये है पुवासा हिसा तसव्वुक का जे हमारे सुझायोने पेश किया था. बल्के वो पुद उस रंगमें रंगे हुवे थे. और उनको सोडबतमें बेदनेवाले सादीबे ईस्तिअदा की ईसी रंगमें रंगीन हो जते थे.

ईस्लामकी ईशाअतमें सुझायोकी बेनकसी और इडानियतने डिस्सा वीया. उसकी लजीज और असर करनेवाली दास्तान हमारी तारीफका किमती सरमाया है.

असलमें तसव्वुक ही दीने ईस्लामका असल मगज है. जुस्के बगैर दीन कायम और मेडकुज नहीं रेड सकता. तसव्वुक अक ऐसा सुतेन है. जुस्के बगैर ईमारत पाडी नहीं हो सकती. ईसी अलम मकसदकी पुरा करने के वीये डजरते अंबिया (अ.ल) दुनियामें तशरीफ लाये. इर सबके आभिरमें डजरत मुलंमद सल्लल्लाहु अलयहू वसल्लम दुनियामें तशरीफ लाये. अल्लाहकी आवाजने पुद आपकी नबुव्वतके मकसदमें तऊडीये नकुसे (दीवोकी साक्ष) को सबसे आ'वा और अइजल मकसद करार दीया है.

कुर्आन मज्दमें ईर्शाद है :-

वोही है जुस्के अनपढ़ोंमें ईन्डीमें का अक रखुल बेज जे उनको उसकी (अल्लाहकी आवाजकी) आयतें पढकर सुनाता है. और उनको संवारता है और उनको किताब और अकलमंदी सिपवाता है. और उससे पढेले वो पुवी जुलमें पडे हुअे थे. (सुरअे जुम्माड-२)

**तसव्वुइ का शायदा :-**

तसव्वुइसे न सिई ईस्वाले जातिन और दीवोंकी सकार्हा का काम हुवा बल्के ईशाअते ईस्वाम और तब्बीगे दीन का काम अरछे से अरछा हुवा है.

युनाई ईस जातपर ईत्तिकाक ले के लिह्नुस्तानमें तसव्वुइकी राह से ली ईस्वाम आया है. और उसकी ईशाअत हुई है. और अब ली "अल्लुम्हुविल्लाह" ली रही है.

तसव्वुइकी इलानी और अम्बाकी तोकतसे पुरी तातारी क्रोम ईस्वाममें दाखिल हुई. जन्नोंने मुसलमानों पर तुल्मी सितम के पडाड तोडे थे. उनका कत्वेआम किया था. और आलमे ईस्वामकी ईंट से ईंट बना दी थी. लेकीन वो नीम वलही क्रोम शेख सअहुद्दीन डम्बी (र.अ.) की अम्बाकी और इलानी ताकत का असर कुबूल करके ईस्वामकी आगोशमें आ गई.

फ्वाज अलमद तावीसवी (र.अ.) ने तुर्कों को बल्कअे ईस्वाममें दाखिल किया. शेख सअहुद्दीन डम्बी (र.अ.) ने और उनके शागीदोंने मंगोलीयों को दामने ईस्वाममें भाँय लीया. फ्वाज मोईनुद्दीन श्रीशती (र.अ.) ने लिह्नुस्तानमें मजलबी और समाज ईन्किलाबकी बुनियाद डाली और लाजों ईन्सानों के ईमानमें दाखिल होनेका जरीया बने - वजरेड.  
(मशाहमे नकशुअंदीयाड-२०)

**बयअत के सिलसिलेमें हिदायत और मश्वरे :-**

बयअत करना और सिलसिलेमें दाखिल होना कोई रस्मी और शौकीयल चीज नहीं है. जरके लीगे कुछ मानना और करना न पड़े. या सिई जरकत और शौकरत मकरूह न हो. (शरियात)

ये अेक अलम मुआलिहा है. और अेक नहं छुंदगीका आगाज है. और छुंदगीमें कुछ पाबंदीया और कुछ तब्दीवीयां और कुछ जम्मेदारीयां है.

(१) सबसे पहली जरूरी बात ये है के बयअत और कीसी सिलसिलेमें दाखिल होना. कलमें की तब्दीह और ईस्वामी अलह और मुआलिहा और अल्लाह और रसुले अकरम (स.अ.व.) के अलकाम के मुताबिक



(૬) દીની ઓર દુન્યવી દોનોં કામોંમેં સવાબ ઓર રજાએ ઈલાહીકી નિયતકી મરક કી જાયે. અપ્લાક ઓર મામલાત ઓર જંદગીકે મામુલાતમેં ભી ઉસ્કા એહતિમામ ક્રિયા જાયે. તાકે ઉન પર ઈબાદતકા સવાબ મીલે. ઓર ઉન્કો જલ્દાંતક હો સકે શરીઅત ઓર સુન્નતકે મુતાબિક કરને કી કોશીષ કી જાયે.

અપ્લાકી ઓર મિઝાજી કમઝીયોં હસદ, કીના, ગુસ્સા, બદગોઈ ઓર બદંજબાની ઓર માલ ઓર દુનિયાકી હદસે બઢી હુઈ મોહબબતસે બચને કી પુરી કોશીષ કી જાયે.

(૭) કુઆન મજહકી જસ કદર સહુલતકે સાથ હો સકે તો તિલાવતકા મામુલ બનાયા જાયે.

(૮) ફરકી નમાઝસે પહેલે યા બાદમેં ઓર મગરીબ, ઈશાંકે બાદ (જસ વકત આસાની હો ઓર પાબંદી હો સકે) એક તસ્બીહ દુરૂદ શરીફકી એક તીસરે કલ્મે કી ઓર એક ઈસ્તિગ્દારકી પઢવી જાયે. ઓર અગર અલ્લાહનઆલા તોફીક દે તો આખરી રાત્રમેં કુછ રકાતેં તહજજુદ કી ભી પઢને કી કોશીષ કી જાયે. ઓર અપને સિલસિલેકે મશાઈખ ઓર તઅલ્લુકવાલોં કે લીયે દુઆમી કી જાયે.

(અબુલ હસન અલી નદવી-૨.અ.)

(મશાઈખે નકશ બંદીયહ-૨૪૩)

### ઈશાદાતે સુફીયાએ કિરામ :-

(૧) (સુફીયહ) વો લોગ હે. જન્કા હમનશીન બદ બખ્ત નહીં હોતા - ઓર ઉન્કે પાસ બેઠનેવાલા મેહરૂમ નહીં હોતા. યાની યે લોગ અલ્લાહનઆલાકે હમનશીન હોતે હે. ઉન્કો દેખનેસે ખુદા યાદ આતા હે. ઉન્કી નજર દવા હે. ઉન્કા કલામ શિક્કા હે. ઉન્કી સોહબત સરાપાનુર ઓર રોશની હે. યે વો લોગ હે કે જસને ઉન્કે જાહીરકો દેખા વો મેહરૂમ ઓર ના ઉમ્મીદ હુવા ઓર જસને ઉન્કે બાત્રીન કો દેખા બુજુર્ગ હો ગયા.

(મકતુબાતે ઈમામ રબ્બાની-૨/૧૮૩)

(૨) હઝરત અબુબક સિદીક (ર.દી.) એક મરતબા બાગમેં તશરીફ લે ગયે. વહાં એક પરીદા દરખતકે સાયેમેં બેઠા થા. આપને ઈસ્કો દેખકર એક ઠંડા સાંસ લીયા ઓર ફરમાયા. મુબારક હો તુજકો અય પરીદા! મું દરખતોં

के इव जाता है. साथमें बेठता है. और बगैर हिसाब किताब के क्यामतमें नग्नत पायेगा. काश ! अबुबक ली तुज जैसे होता.

इरमाया करते थे के हमने बुजुर्गी को तकवामें पाया. और तवंगरी को यकीनमें और धज्जतको तवाबुअमें.

अय लोगो ! अल्लाह के जोइसे रोवो.. अगर रोना न आये तो रोनेकी सुरत बनाओ.

जबरदार ! कोई शप्स कीसी मुसलमानको डकीर न समझे. क्युंके छोटे होंको मुसलमान ली अल्लाहके नजदीक बजा है.

अल्लाहसे गुनाहोंकी अपेक्षीश और दुनिया और आभिरतकी आक्षियत तवज किया, करो.

अक भरतजा आपके सामने शिकार लाया गया तो इरमाया जब कोई शिकार मारा जाता है, या कोई हरणत फाटा जाता है तो उसका मतलब नही होता है के उसने अल्लाहकी तस्बीह नही की.

जो शप्स अल्लाहकी मोहब्बतका मजा यफवेता है. हीर उसको तवजे दुनिया की इरसई नही खीवती और धन्सानों से वेदशत (गभराहट) होती है.

(3) सुलेमान प्रीन मुगीरह से रिवायत है के उजरत सलमान (र.दी.) और उजरत अबु हरदा (र.दी.) के दरम्यान दीनी बिराहरी हो गध थी - उजरत अबुहरदा (र.दी.) शाम में और उजरत सलमान (र.दी.) कुफा में बस गये. उजरत अबुहरदा (र.दी.) ने उनको जत वीजा के अल्लाह तआलाने आपके बाद मुजे माल और औलाद अता इरमाया और जयतुल मुकद्दिसमें मेरा किया म है.

उजरत सलमान (र.दी.) ने उनको जवाबमें वीजा तुमको मालुम हो के जेर और लवाध माल और औलाद की कसरत और जयाहती में नही. जलजत्ता लवाध धरमें है के तुम्हारा खिल्म (नरमी) और बुईबाही बढ गये. और तुम्हारा धल्म तुम्हारे लीये शायदा मंद हो और जमीन (जगा) कीसी को शायदा नही पडुंया सकती. तुम अमल धस तरह करो गोया अल्लाह को देख रहे हो और अपने नइसको सुदामे शुमार करो

(उजरत सलमान इरसी (र.दी.))

हिन  
यां

(४) एक हीन (मुसलमन) जन्म हुआ था जो कि बहुत ही बुरा था। वह अपने आप को बहुत ही बुरा मानता था। वह अपने आप को बहुत ही बुरा मानता था।

हिन (मुसलमन अल्लेहसांनी (र.अ.))

(५) एक मरतबा साबिल भतवानीसे इरमाया, इमारी थेवीमेंसे थोडीसी लोर्गे (लवींग) ले आवो. वो गये और छे लोर्गे ले आये. आपने देण कर नागवारीसे इरमाया. के इमारे सुकीको अभी तक ये जबर नहीं के उदीसमें आता है. **وَتُرَّ يُحِبُّ الْوَتَرَ** उसकी रियायतमें वित्र मुस्तलब है. (मुसलमन अल्लेहसांनी-(र.अ.))

(६) जब आदमी अपनेमें रजाअे धलाडीकी जनीब मेवान देणे. तो अल्लाह तआलाका शुक्र अदा करे. और जब रजाअे धलाडी की जनीब दीव का मेवान न पाये तो गिउगिउाये और रोये. और अल्लाह तआलाकी सिक्के धस्तिगनाई (बेपरबाई) से उरे.

(ज्वाज अलाउद्दीन अत्तार (र.अ.))

(७) आमाव-अज्वाक का असर जमादात (बेजान यीजों) पर भी पडता है. युनांचे अगर कोई शप्स ऐसी जगा नमाज पढे जहां आमाव, अज्वाक नापसंदीदा होते है. तो वो नमाज ऐसी पुर भरकत और नुरवाली न होगी. जैसा के ऐसी जगा अदा हो जहां अरबाबे जमयायत (अल्लाहवालों) का असर पडुंया हो. यही वजह है के मस्जिद उराम की एक नमाज का सवाब एक लाख नमाजों के बराबर होता है.

(ज्वाज उबेदुल्लाह अउरार (र.अ.))

(८) जन्मआमाव से अल्लाह तआला का कुर्ब (नजदीकी) डालिव की जाती है. या तो वो इराईज है या नवाइल. नवाइलकी इराईज के मुकामलेमें कोई हिसियत नहीं अपने वक्त पर कीसी इर्जकी अदायगी एक उजार सालके नवाइलसे बेहतर है. अगरचे भावीस निश्चय के साथ अदा कीये जाये.

सुष्ठिद

(उजरत धमाम रब्बानी मुसलमन शेष अलमद सरइदी (र.अ.))

(९) उजरत मुसलमन साबिल (र.अ.) इरमाते थे के में तो सारे मुकामात की सैर करने के बाद जोस नतीजे पर पडुंया. तुम पढले पडुंय जाओ. यानी पढले ही (हीन) इस बातका धरादा करवो के नबीये करीम (स.अ.व.) की

दि  
न  
#  
त

-  
#

दि  
श

दि  
(अक) २१५२१)

द

दि

#

हिन

જીત્ની સુન્નતે હે ઉન પર અમલ કરને કી કોશીષ કરેંગે ફીર ઉસ્કી બરકતે  
 ઓર નુરાનિયત દેખોગે. ફીર જંદગીકા લુન્ફ દેખોગે.

(ઈસ્લાહી ખુબાત-૨૧૨)

(૧૦) ફરઝંદે ગિરામી ! આજમાઈશકી ઘડીયાં અગરચે બહોત કડવી  
 ઓર બેમઝા હે. લેકીન અગર તૌફીક હોતી બહોત ગનીમત હે. આજ  
 કલ જબકે આપકો ફુરસદ હે. ખુદાકા શુક અદા કરતે હુએ અપને કામમેં  
 મશગુલ રહો. ફુરસદકા એક લમ્હા ભી બેકાર મત કરો તીન આમાલમેં  
 લગે રહો.

૧. તિલાવતે કુઆન મજીદ

૨. લંબી કિરાઅતકે સાથ નમાઝ અદા કરના.

૩. કલમએ તેજબહ લાઈલાહી ઈલ્લાલ્લાહ કા વિદે કરના.

ઈ જંગેશી કીચી એક કા વર વકત અગલ જારી રખો.

(હઝરત મુજબ્દીદ અલ્હેસાની (ર.અ.))

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كَلِيمِهِ

ઉચ્ચલ

(૫) દીની દઅવત

ઊચ્ચલે તબ્લીગ :-

જે લોગ ઈસ્લામ કી તબ્લીગ કે અહમ ફરીઝેકો અદા કરને કે લીચે  
 તૈયાર હો જીન્કો સમજ લેના ચાહીચે કે પગચામે દીને મતીન ઓર હક્ક  
 કી તબ્લીગ કે લીચે જરૂરી હે કે વો અખલાકે હસના, (ખેદ) સિકાત,  
 ખુદીસે નિચત, કુશાદા દીલ, સચ્ચી ખાત, ખુશ કલામી, ઈસાર પસંદી,  
 સખ્તી બરદાશત કરને વાલા, મેહનત ઓર કોશીષ કરનેવાલા હો.

ઓર એક લમ્હે કે લીચે ભી દીલમેં લાલચ, ખુદ ગર્જ, રિયાકારી,  
 ઓર દુનિયા હાસિલ કરનેકા શૌક ન આને પાચે.

વરના જે શખ્સ ઈન બાતોંકા ખ્યાલ નહી રખતા જીસ્કી આવાઝ  
 કીસી તરહ કારગર નહી હોતી. ઓર જીસ્કી બાતકા સુનને વાલોં પર  
 કોઈ અસર નહી પડતા.

लि  
२२

मुबकीग को यादीये के जे कुछ दूसरों को नसीहत करता है. खुद भी (उस) पर अमल करे. अगर ऐसा न करेगा तो ज़िस्की हर बात लोगों की नजरों में धरोग बयानी और बेबुदा बातें बकने वाला से जयादा बकअत रफने वाली न होगी.

(कुर्आन मज्दमें अल्लाह तआला का ईशदि है, ईमान वाले! तुम ऐसी बातें क्यों कहते हो? जे करते नहीं खुदा के नबदीक अरे गुस्से की बात है के जे बात करते नहीं वो कहते हो.)

(मल्कुजते मुहदीसे कश्मीरी-२८१)

**जुम्मेदारी :-**

अल्लाह तआला के र्दन बंदो तक अल्लाह का पयगाम पहुंचाना (जे अर्बतक कीसी बज्जसे ईससे मेहरम है) इमेशा की तरह ईश वकतमी हर मुसलमान मर्द और औरत की ज़ुम्मेदारी है. इम जस मुआशरमें रेलते है उसमें ये कोई मुश्कील काम नहीं है. बाजारोंमें, दूकतोंमें, शादीयोंकी तकरीबातमें, भुशी और गम के मौकों पर, देन पर, अस और लवाह नवाज क सकरमें हर नवाज ईसका मोका इमें मौलता है और इम मुफ्तकीक मौजूआत पर बातें भी करते है, बेन-देन भी करते है, भुशी और गम के मौके पर अक दूसरे के शरीक भी रेलते है. लेकिन ऐसी बरपुर शिर्कत के बाद भी इम वो इरीजा अंजम नही दे पाते. जे इबन्तुल विदाअ में रइमतुल वील आवमीन अजरत मोहंमद (स.अ.व.) ने अपनी उम्मत के ज़ुम्मे कीयाथा.

#

लि  
२३

#

पूछ

४  
#  
३३

क्या? कभी इमने सोचा के ईश इरीजा की अदागीमें जे कौताही इमसे हो रही है क्या उसकी पुरशीप इमसे नही होगी? अगर रकुबुल्लाह (स.अ.व.) ने रोजे मेहरम में इमसे पुछा के तुमने मेरे दीनकी ईशाअत और उरो दूसरों तक पहुंचाने का क्या काम कीया? तो इम क्या नवाब हेंगे?

क्या इमारा नवाब ये लोगा की ये काम सिई सदाबा (२.दी.) का था. इमकी तिज्जरतमें लगे रहे वकतही नहीं मौवा. इम तस्नीफे तालीफमें मशगुल रहे. तडकीकी काम करते रहे और मुवाजेमतमें हसे रहे. अपनी गांवी बज्जोंकी नजरतोंकी इरादमी (बंदोअरत) ने इरसदी नहीं दी या

७

८

#

लि

६

२

#

३

ईरशात ही

ये के हमको कभी लुबेसे भी ये ज्याव नही आया के ईस्लामकी तब्लीग और ईशाअत का कामभी हमको करना है.

बिरादो व हिमाग पर जेर डाल कर जवाब दीज्ये के हमारा उस वक्त क्या जवाब होगा ? (तामीरे उयात-१०/७/२००३)

### दअवत व तब्लीग :-

अपने यकीन व अमल को दुरुस्त करने और तमाम ईन्सानोंको सही यकीन और अमल पर लाने के लीये रसुलुल्लाह (स.अ.व.) वाले तरीके से मेहनत को तमाम आलममें लीया करनेकी कोशीष करना....

### दअवत और उसके इमार्तल :-

अल्लाह तआलाका ईशाद है - और अल्लाह तआला सलामती के धर यानी जन्नत की तरफ दअवत देते है और वो जसे यादते है सीधा रास्ता दीजाते है.

अल्लाह तआलाने अपने रसुल (स.अ.व.) से ईशाद इरमाया - आप अपने रोकके रास्ते को तरफ विकमत और अग्रही नरीयत के जरीये दअवत दीज्ये.

उजरत अबु लुरैरह (र.दी.) इरमाते है के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने अपने यया (अबु तावीबसे उनकी वजात के वक्त) ईशाद इरमाया - (  $\text{إِنَّمَا أَمْرُهُ إِتَىٰ بِاللَّهِ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ}$  ) के ल वीज्ये ताके मैं क्यामतके दीन आपका गवाह बनूं. अबु तावीबने जवाब दीया अगर कुरेश के ईस ताने का उर न लोता के अबु तावीबने सिई मौत की गभराहट से कल्मा पढा है. तो मैं कल्मा पढकर जरूर आपकी आंषो को ठंडा कर देता - ईस पर अल्लाह तआलाने ये आयत नाजील इरमाई.

आप जस्को याहे लीडायत नहीं दे सकते बल्के अल्लाह तआला जस्को याहे लीडायत देते.

दअवत की असल ये है के आपके दीलमें ईन्सानों के लीये जेरपवाही का जज्बा पैदा हो जये आप ईन्सानकी नज्मत के लीये तडप उठे. आपकी मेहसुस होने लगेके अगर मेंने हुसरो को जन्नतमें ले जने की कोशीष नहीं की तो मेरा अपना जन्नतमें जाना भी शकवाला है. जब आपके दीलमें ये जज्बा पैदा हो जये तो आपको ये बताने के लीये काड़ी हो जयेगा के कब

और कीस वकत आपका क्या करना चाहीये? कुआन मज्जह हुनयाकी सबसे बडी द्यवती किताब है और लजरत रसुवे अकरम (स.अ.व.) की सीरत द्यवतकी नमुना है. जिस कहर आप कुआन मज्जह और लजरत रसुवे अकरम (स.अ.व.) की तावीमातकी अमली तौर अपनोयेगे तो द्यवत की जम्मेदारी अदा होती रहेगी और रोजकी कुराहमीका इन्तेजाम अल्लाह तआलाकी तरफसे होता रहेगा.

(अलरिसाला-१०/२००१/४२)

### आदावे द्यवत :-

द्यवते ईल्लल्लाह अपनी लकीकत के अतिबास्से जैर ज्वालीका अक अमल है. (अल-अअराइ-७८)

ये हर असल ईन्सानियत के साथ जैर ज्वालीका जजबा है. जे मोमिन को मज्जुर करता है के वो दूसरे ईन्सानोको अल्लाहकी रहमत के साथेमें लानेकी कोशीष करे. ईसी जैर ज्वालीकी बिनापर मोमिन ये कोशीष करता है के वो अपनी बात ईस तरफ अकठे अंदाजमें कले के वो सुनने वाले के दिलमें उतर जये. (निसाअ-६३)

मोमिन मज्जुरा हाई को मज्जुर करता है के वो आपने गुनाहतकी ज्यादतियों पर अक तरफी सबर करे ताके लक पलुंयानेका माहोल बिगडने न पाये. (ईब्राहीम-१२)

ईस किसमकी मुप्तवीक थीर्जे गोया द्यवत के आदाबसे है अक और थीज है ज्जस्को तावीक क्लब कडा जाता है यानी मदु की हील जेठ और उसकी रियायत जिस तरफ अक सख्या ताज्जुर अपने गालककी आभरी लद तक रियायत करता है. ताके उसके साथ मज्जुत तिज्जुरती तअल्लुक कायम हो. ईसी तरफ हाई हर मुम्कीन तरीकसे अपने मदु की हील जेठ करता है. ताके वो उसके द्यवती पयगामकी तरफ पुरी तरफ रोजमत करे. लकीकत ये है के तावीक क्लब द्यवत और तब्लीगका मुस्तकील उसुल है. कीसी भी डालमें और कीसी भी सुरतमें उसको छोडा नहीं जा सकता.

हीजरत के आठवे साल जब इले मककाहुआ उसके बाद ईस्लाम मुकम्मल तौर पर गाबीब डालतुमें पलुंय गया था. मगर उस वकत रसुवे

અકરમ (સ.અ.વ.) ને ક્યા ક્રિયા ? તારીખ બતાતી હે કે મુશરીકીને મકકા ફત્હે બાદ આપકે પાસ લાયે ગયે ઉસ વકત વો બિલકુલ બેબસ થે મગર રસુલે અકરમ (સ.અ.વ.) ને ઉન્કે સાથ તાલીફે કલ્બકા વો ઉફદા મામલા ક્રિયા કે આપને ઉન સબકો યે કેલકર આઝાદ કર દીયા કે

لَا تَقْرَبْ عَلَيْهِمُ الْيَوْمَ إِذْ هَبُوا نَسَمَ الطُّلَقَاءِ (پ ۱۲ ع ۱)

યે બેશક તાલીફે કલ્બકા એક મામલા થા ઓર ઉસ્કા યે શાનદાર નતીજા નિકલા કે યે સબ કે સબ લોગ ઈસ્લામ મેં દાખિલ હો ગયે.

ઈસી તરહ સુહેલ બિન અમ્ર ને ફત્હે મકકાસે પહેલે ઈસ્લામકે ખિલાફ સખ્ત કારવાઈ કી થી. મગર ફત્હે મકકાસે બાદ જબ વો રસુલે અકરમ (સ.અ.વ.) કે પાસ આયે તો આપ (સ.અ.વ.) ને ઉન્કે સાથ નિહાયત નરમી ઓર શરાફતકા સુલુક કીયા. યુનાંચે કલ્મએ શહાદત અદા કરકે વો ઈસ્લામ મેં દાખિલ હો ગયે. વગેરહ

તાલીફે કલ્બ માલ દેને પર મોકુફ નહીં ઈસ્કા તઅલ્લુક હાલાત પર હે. હાલાતકે એઅતિબારસે તાલીફે કલ્બકે મુખ્તલીફે તરીકે હો સકતે હે. ઉસ્કી કોઈ સુરત ખાસ નહીં. સચ્યા ઓર હમદદ દાઈ જબ લોગોંકી ખેર ખ્યાલીકે જઝબેસે ઉન્કે દરમ્યાન દબાવતકા અમલ જરી કરતા હે તો ઉસ્કે તજુરબે ખુદ ઉસ્કો બતા દેતે હે કે કીસ મોકે પર કીસ કિસ્મકી તાલીફે કલ્બકી જરૂરત હે. ઈસ મામલે મેં ખુદ દાઈકા અપના જઝબા ઓર તજુરબા કાફી હે. જે તરીકા મદઉકે દીલ્લો કો નરમ કરનેવાલા હો ઉસ્કે મુતાબિક ઈસ્તિમાલ કીયા જયે.

(દીન-વ-શરીખ-૧૮૪)

ઈસ્લામ આખરી દીન હે. ઈસ લીયે જરૂરી હે કે વો અપને પુજુદ કે એઅતિબારસે કયામત તક બાકી રહે. ઈસી લીયે દીન કી હિફાઝત ભી એક જરૂરી ઓર મતલુબ કામ હે. મોજુદા ઝમાનેકી બાઝ તહરીકોને ઈસ એઅતિબારસે યકીનન મુફીદ ખિદમતે અંજામ દી હે ઓર વો ઈસ્લામકે બુન્યાદી ઓર અમલી નકશે કી હિફાઝત કરનેવાલી સાબિત હુઈ. બાઝ ઈદારે કુઆન ઓર હદીસ ઓર ઈસ્લામી મસાઈલકે ઈલ્મકો હીદ રખે હુએ હે. બાઝ જમાઅતે ઈસ્લામી ઈબાદત કે ઢાંચે કો એક નસલસે દુસરી નસલ તક પહુચાને કા કામ કર રહી હે. કુછ ઈદારે કુઆન ઓર હદીસ સહી ઓર સફાઈદાર છાપકર હર જગા ફેલા રહે હે. યે તમામ કામ જરૂરી

और मुक़ीद है. मगर वो हीनकी डिक्क़ाजतके काम है नई दमवते हीनका काम. जहाँ तक ईस्लामकी दमवती बेसियतसे जाँदा करनेका सबाब है वो मौबुदा जमानेकी अलम जरूरत है. जसमें लोगोकी बडी गइलत हो रही है. वो अकसर जैसे कामोकी दमवतका उन्वान (नाम) दे देते है जसका ईस्लामी दमवतसे कोई तअल्लुक नहीं होता.

(ईस्लाम-१५वी सदीमें-३१)

### नसीहत का असर :-

सलाबा और ताबेईन लाकेमाना डिदायत जरी नहीं करते थे, बल्के वो दमवत और तब्लीगका काम करते थे, ईन्सानकी ईस्लाम हील और जेहनके बहलनेसे होती है न के इत्वा जरी करनेसे. ખુદ हिंदुस्तानकी मिसाल बताती है के अहले बिदअतके जिलाइ लंबी मुदत तक इत्वा जरी करनेके बावजूद कोई मुसलमान बिदअतसे ताईब (तौबा करनेवाला) नहीं हुवा. मगर तब्लीगी जमागतकी दमवत की कोशीपोसे अखीरके बिदअती आपने देवसे तौबा करने लगे इरफ़ी वदद ये दे के तब्लीगी जमागत वालोंने इत्वाके बजये नसीहत और तरबीयतके अंदाज ईप्तिहार कीया. उसके नतीजेमें लगों के हील बहले और बिदअतसे तौबा करनेवाले हो गये.

### सखे खुदा परस्त :-

अगर आप ये चाहते है के आप सखे खुदा परस्त बनकर रहें. आप अल्लाह के हीन के दाई (बने) आप अल्लाह की परसंद वाली जहंगी गुजरे. तो आप को कुछ जैसे सीजों को छोडना पड़ेगा जे आपकी हीनी जहंगीको प्रीरूपा (अरयाग) करने वाले हो.

मिसाल के तौरपर जिस्के लीये आपको बालय छोडनी पड़ेगी. वरना आप दुनियाँ में ईस तरह इंस जओगे के आपिरतके कामके लीये आपके पास वक्त ही नहीं रहेगा.

ईसी तरह आपकी कीसीसे बहला बेनेसे बयना होगा वरना आपका जेहन गुस्सा, नइरत, ईन्तिकाम और कीना (कपट) का कारभाना बन जयेगा. जिस्का नतीजा ये होगा के आप अल्लाह के सखे तअल्लुकसे मडेइम हो जयेंगे.



यहां जेर और शर दोनों किस्म के ईस्कानात मौजूद रहे. जैसे मालोवाड़ी में कीसी ईस्कान के बारे में ईस्ला किया जा सकता है के वो अपनी खंडगी में अल्लाह तआला की भरख पर फायम रखा या उसरो दौर गया.

कुर्मानकी मुसलवीक आगमांशि मावुम दोना है

(11: 1) "فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ جَاءَ بِهِ كُفْرًا عَظِيمًا"

यानी तुम याद दिलांनी करो. तुम सिई याद दिलांनी करने वाले हो. तुम उनके ऊपर आरोगा नहीं हो.

(१८८८ ई.स.) से मुल्क में एक नया सियासी दौर शुरू हुआ है. इस दौर में तकरीबन यकीनी है के ये दौर दयवती अतिबारेसे मुश्कील तरीन दौर होगा. नये हिंदुस्तानी हुकमरान दस्तुरे हिंद में मजहबी आजादी को दकअ (कलम) रप- आर्टीकल को बदलनेकी कोशीष करेंगे और जैसे कानून बनायेंगे उसकी वजहसे दयवती काम करना मुश्कील होगा.

**मेहतन का मयदान :-**

मौजूदा जमाने में आप जोस शहर में जायें आप वहां दीनी और ईस्लामी मेहनत और कोशीष छोटी लुई होंगे. एक आदमी उसको दैज कर भुश होता है मगर लकीकत ये है के तमाम कोशीष एक जाते पीते लोगों के एक तब्के के दरम्यान है. लगभग हर शहर में कम अज कम पयास ईसद मुसलमान जैसे बसते है. जे गरीब और जहालत का शिकार है. उनको जरूरत के मुताबिक खंडगी का सामान नसीब नहीं है. ये पुरा तब्का हर जगह अंधेरे में पड़ा हुआ है. बलोट कम ईस्वादी या ईस्लामी मेहनत और कोशीष मिलेगी जे इस बीछरे लुअे तब्के के दरम्यान जारी हो.

मौलाना अलीमियां नदवी (र.अ.) ने अपनी एक तकरीर में कहा था "मैं ये समजता हूं के मुसलमानों के किन्ने जैसे आदमी दहन लुअे है जे ईमान नहीं रखते थे. ईस्लामी खंडगी नहीं रखते थे और जे मुसलमानों के कब्रस्तान में दहन करने के काबिल नहीं थे. लेकिन युंके मुसलमान नाम था और सिई ईस्लाम मानते थे इस वीये दहन लुअे"

असल में ये यहुद, नसारा की एक साज्ज थी. इस साज्ज से लोगों के जेडनों को बिगाडा गया और बहवा गया. उन्होंने पहले तकसीर, लदीस, झिकल, अदब वगेरल उलुम पढकर उसमें माहिर बन गये. डीर उन्होंने उन्ही उलुमकी मद्दहसे ईस्लामके असली नकशों को बिगाड कर पेश करनेकी कोशीष की.

मुसलमान जे लुजुर (स.अ.व.) की नबुव्वत के बाद हुनिया में आवा क्रोम बन गये थे. इस बात को उन्होंने इस तरह पेश किया के वो एक जबरदस्तीकी बात थी. कोई अलम बात ईस्लामकी जुबीयों की नली थी. उसके अलावा लुजुर (स.अ.व.) को एक आम वीडर समजा गये और आपके नबुव्वत के कारनामोंको एक आम वीडरका कारनामा बना दिया. इसी तरह कुआन मज्जहकी बलोट तारीक की, उसको एक गेर मामुवी क्लाम करार देकर ये ईशारा करते थे के ये लुजुर (स.अ.व.) का क्लाम है. ये आस्मानी किताब नहीं है वगेरल.

इस तरह उन्होंने ये काम पुरे मन्सुबेके साथ अंजाम दिया और मुसलमानों के दीनी ज्वालात इस गलत तालीम के असरसे बहलत यलं गये और जैसे लोग तैयार करके देवा दीये. कथं सदीयों तक ये काम हुवा और मुसलमानोंकी कथं नस्लें पराब लो करे बिगाड गथं. उनके अकीदे पराब लो गये. इस जमाने में अब भी पुरी तरह ये वबाब ખत्म नहीं हुवा है.

मुसलमान सख्ये दीनके डामिल है. उनका सबसे बडा काम ये है के जुदके दीनको उसके तमाम बंदो तक पहुंचाये. मगर यही वो काम है जससे आज मुसलमान सबसे जयादा दुर लो रहे है.

**उम्मत का गम :-**

कुआन मज्जहने इस आयतमें रसुले अकरम (स.अ.व.) की लोगों पर शकत का भयान है.

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَؤُوفٌ رَّحِيمٌ.  
لَئِنْ قَوْلُوا أَفْضَلُ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ. عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ (پ ۱۱ ع ۳)

“अथ लोगो तुम्हारे पास एक जैसे रसुल आ गये है जन्को तुम्हारे नुकसानकी बात बलोट हीरा गुजरती है और तुम्हारे नके के वो

है

ज्वालीशमंद रेखते है. भास तीर पर अेलवे ईमानके बारेमें तो ईन्तिहाई मखेरबान और रलीम है.”

आप (स.अ.व.) को मज्जुके साथ ईन्ती शकत थी के हर वकत उन्की खिदायत और नके का गम और किकर रला करती थी. ईस वजहसे आप इमेशा गमगीन और किकरमंद रेखते थे. अल्लाह तआवाने बार बार तस्कीन के लीये (१०६.१५) **أَوْر** (अ.व. १३६.३०) वगेरह आयतों के जरीये तसल्ली ही मगर डीर ली आप (स.अ.व.) की वही कैदियत बाकी रेखती थी.

उल्मा वारिसुल अंबिया (अ.व.) है. **उन्मी** ली ये शकत डोनी याडीये और उन्में ली मज्जुके खिदायत और उन्के नके की किकर डोनी याडीये. डममें बलोट कम वोग है. जे ईन बातों के लीये किकरमंद रेखते है और अल्लाह तआवा के डुजुर रोते गिडगिडाते है.

(अलकुरकान-६/१८७८/३८)

### बुराई से रोकना :-

वोगोंको बुराईसे रोकना या उन्की खुली बुराई करना अेक अैसा काम है जे डौरन आदमीको अपने वोगोंमें गेर मकबुल बना देता है. वोग अैसे आदमी के दुश्मन बन जाता है और अगर ईस बुराईका तअल्लुक डोमी ज्वालीशात से डो और पुरी डोम के बजआत ईससे जुडे डुअे तो उस्के भिवाक बोवनेकी ये लारी किंमत देनी पडती है के आदमी खुद अपनी डोममें दुश्मन बन डुर रेख जाता है और बेशक ईस दुनिया में ईससे जयादा तकलीफकी आत दुसरी कोई नही के आदमी खुद अपनी डोमके अंदर दुश्मन बन कर रेख जाता है.

बुराई से रोकने के काम में मशगुल डोनेकी ये लारी किंमत देनी पडती है के आदमी डौरन ही अपनी डोममें अपनी मकबुलीयत जो देता है. मकबुलीयतको जोना हर आदमी के लीये अेक नाकाबिले बरदाश्त थीज है.

यही वजह है यहुदी उल्मा दुसरे दीनी अलकाम पर अमल करते थे. वेकीन उन्डोंने अपनी डोमको बुराईयोंसे रोकने या उन्की बुराई बयान करनेको काम छोड दीया था.

आदमी अपनी कौमु में अपना मुकाम जो दे और जुद अपने लोगी में गेर मकबुल हो जये, ये बेशक धत्नी बडी जंय ले के उरमे सिई वही शप्स पुरा उतरता है जस्के सामने अल्लाह की रजा हो. अवा मु में मकबुदीयत और गेर मकबुदीयत से वो बेनियाज हो गया हो. यही सिईत आदमी के लड़ पर होने की सबसे बडी निशानी है. शर्त ये है के वो धप्वास और धेरप्वाडी के जजबेके साथ कीया जये.

धस मामले की तरकीब के वीये अक मिसाल सुन वीजये. अक बुजुर्ग को लपनी की अक दरगाह में जानेका धत्तिकाक हुवा. जहां अक पुराने बुजुर्ग की कब्र थी. जहां कध लोग अपना सर जमीन पर रभकर कब्र को सिजदा कर रहे थे. ये मंजर देभ कर बुजुर्ग को जटका लगा. डीर वो करीब के अक कुशादा कमरे में गये वहां गद्दों पर बहुते से मोटे मोटे लोग बैठे हुए थे. वो दरगाह के मुजवर थे. उन्को बुजुर्ग ने नरमी से कहा के यहां लोग कब्र को सिजदा कर रहे है. लेकिन धस्वाम में गेरल्लाह को सिजदा करना हराम है. उन्में से अक शप्सने कहा के धस कोने की तरफ देभो. बुजुर्ग ने देभा तो वहां लाईयां बडी करके रभी हुई थी. डीर उन्हां ने कहा के तुम्हारा जवाब धसी से दीया जयेगा. उसके बाद अक शप्स ने बुजुर्ग को पीछे की तरफ धीया और कमरे से अबाड़े ले गये और कहा मियां सालभ ! जव अपना काम करो.

डीर धसी दरगाह के अक जल्से में अक और सालभ गये. उन्हां ने वहां कब्र के बुजुर्ग की तारीफ में शानदार तकरीर की. युनांये उन्हे सजे हुए स्टेज पर बिठाया गया और कुलों के डारसे उन्का धस्तिकबाव कीया गया. उसके पिवाइ जब बुजुर्गने वहां "नदीयनीव मुन्कर" के जजबेसे नसीहत करने की कोशीष की तो उन्को लाईयां से धस्तिकबाव करने की धमकी दी गध. मालुम हुवाके बुराधसे रोकने के कामकी धत्नी अलधायत कयुं ले ?

उरके पिवाइ अगर आप लोगो के पास जये और कल्मे के अल्लाज सली कराये. उन्को नमाज रोजे का सवाब बताये. उन्ज के इजाधव सुनाकर उन्को उन्ज में जाने को कले तो ऐसी बातों के करने से आपके साथ कोध बुरा सुबूक पेश नही आयेगा बल्के हर जगा आपको पसंदीदा

नजर से देना जयेगा. आप बड़ोत ब्रह्मी अपनी कौम में ईज्जत और मकबुलीयत का हक लासिल कर लेंगे.

ईसी तरह अगर आप अपनी तकरीर और तखरीर में ऐसी बातें कहे जस्में लोगों को कौमी इफ्र की बातें मीलती हो या आप उनके दुश्मनों को बलकारने वाली जवान बोले. या आप ऐसा नजरिया पेश करें जस्में लोगों को अपने सियासी ग्याबों की तामीर दी जाई देती हो. या आप लोगों के आमने जैसे पुशनुमा अड्काऊ बोले जस्में जलीर में कुछ काय जगेर उन्का बडा कंडीट मीलै रखा हो. या आप दूसरी कोमों से रंजशे के मामले में तमाम जम्मेदारी गैरों पर डाल कर अपनी कौम को मासुम जलीर कर रहे हो. या आप जैसे नारे बुलंद करें जन्में कुछ अड्काऊ बोले कर ही तमाम जम्मेदारी पुरी हो रही हो. वगेरह.

अगर आप इस किस्म का अंदाज ईप्तिहार करें तो बड़ोत ब्रह्मी आप अपनी कौम के अंदर मकबुल और मेहबुब हो जयेंगे. आपकी कौम की तरफसे हर किस्मका ईस्तिकबाल और तआवुन मीलने लगेगा.

और अगर आप लोगों को बशारतों के बजये वही सुनायें और तारीफ के बजये लोगों की तन्कीह करे आप मामलात में दूसरों को जम्मेदार ठहरेराने के बजये भुद अपनी कौम की गलतीयों की निशान देली करें आप लोगों को इफ्र करने के बजये अपना लिसाब करने की तरफ पुकारें. तो आप अपनी कौम के अंदर अक नापसंद और मरदुद शप्स बन जयेंगे. ये डकीकत ईत्नी आम है के पयगंबर और सलाबा का भी उरमें कोई ईस्तीस्ना (अलग) नही.

पयगंबरे ईस्लाम डजरत रसुले अकरम (स.अ.व.) की सीरत का मुतावा बताता है के नबुव्वत से पहले मकका में आप अपने आला किरदार की बिना पर लोगों के दरम्यान अक मोहतरम शप्सीयत बने लुअे थे. लोगों ने आपको अल-अमीन का पिताब दे रपा था. नबुव्वत के बाद अपने लोगों से सिई तौहिद की बात कही और बुत परस्ती से रोका. जन्को ये लोग मुकदस समजकर पूजते थे तो लोग आपके सप्त मुआलिफ हो गये और आपके दुश्मन बन गये और लोगों को ये दुश्मनी ईत्नी बढी के आपको अपना वतन मकका छोडकर बाहर जाना

लि  
कहे  
लें.  
मित  
शां  
(मदद)  
स्ति  
दी  
६

७  
मि  
करी.  
हि  
करे.  
मि  
हं  
अं  
करे  
शां  
मि  
अ  
पु

पडा.

(त्रिस्तुन्नभी - १/२७५)

ईसी तरलुका एक वाकेआ लउरत उरवळ (बीन) मरुएद सकई (रदी.) का हे के वो रसुले अकरम (स.अ.व.) के सफरे ताईक के बाद मकका आये और ईस्वाम कुबुल कीयां. उसके बाद उन्डोनि कडा के आप मुजे ईज्जत दीज्जये के मैं अपनी कौम (सकीइ) में वापस जाऊँ और उन्को दीने तौडीए की दअवत हुं. आप (स.अ.व.) ने इरमाया के वो लोग तुम्हें कत्व कर देंगे. उरवळ बीन मरुएद सकई (रदी.) ने कडा अय अल्लाह के रसुल (स.अ.व.) मैं उन्के नजदीक उन्की दोशीजाओं (कुंवारीयो) से भी जयादा मेहबुब हुं. वो अपनी आवा पुसुसीयात की (बीना) पर उन्के दरम्यान निहायत बा ईज्जत लेसियत के मावीक थे. लि पिना

युनांचे उरवळ बीन मरुएद सकई (रदी.) अपने कबीलेको तौडीए की दअवत देनेके लिये ताईक वापस आये. कबीलेके अंदर बा ईज्जत मुकामकी बीना पर उन्को उम्मीद थी के वो लोग उन्की मुजावीकत नहीं करेंगे. युनांचे वापस आकर वो अपने घरके बाबाजाने पर भरे लुअे और लोगोको जमा कीया और कडा, तुम लोग अल्लाह की ईबादत करो और नुत परस्ती छोड दो. उसके बाद जे वाकेआ लुवा वो ये था के उन्के कबीले के लोगो ने उन्को तीर मारने शुरू किये यहाँ तक के वो सप्त ऊप्पी लोकर शडीए हो गये. (उयातुस्सडाभा-१/१८३/८४)

उरवळ बीन मरुएद सकई (रदी.) नुतो या कौमी बुजुगो के जिलाइ भोवन से पेहले अपनी कौम के दरम्यान मेहबुब तरीन शप्स थे. मगर जब वो कौमके नुतो या कौमके बुजुगो के दीनेके जिलाइ भोले तो वो अपनी कौम के दुरमन बन गये.

ईस तरलुके वाकेआतुसे अंदाज होता है के कौमको पुश करने वाली (बीन) भोवना और कौमकी तन्कीद और बुराई बयान करना दोनो में किना जयादा बर्क थे

"नदी अनौल मुन्कर" बुराईयाँ से रोकना हर मुस्लिम मुआशर में और हर जालम में बर्हरी है और असल जम्मेदारी उल्माके किरामकी है. उल्माको हर जालम में अपनी ये जम्मेदारी अदा करना है. अगर वो ईस मामले में जामोशी या गइलतका तरीका ईज्जतयार (उरी) तो वो अल्लाह

री  
पिन

यो  
लि

लि

||  
||  
||  
||

करी



अडनक बीन केस ताबेठ (र.अ.) का वाकेआ ले. अक दीन वो बाजार गये और अपनी जरूरत का सामान लेकर अपने घर वापस जाने लगे. रास्तेमें उनको अक आदमी मिला. जे उनसे दुश्मनी रખता था. वो उनको बुरा भला केडने लगा. अडनक बीन केस(र.अ.) आमोशी के साथ उसको सुनते हुए अपना रास्ता चलते रहे. वो आदमी भी उनके साथ चलता रहा और मुसलसल उनको गावीयां देता रहा.

आभिरकार अक जगा पलुंयकर अडनक बीन केस (र.अ.) रुक गये. और वो उस आदमीकी तरह मुतवज्जये हुए आरे उससे कडा में यहाँ पडा हुं. तुमको और जे कुछ मेरे खिलाफ केडना है उसे केडवो. क्युं के अब मेरा मोडल्ला करीब आ गया है. यहाँ लोग मेरी धज्जत करते है और मुजसे मोडल्लत रખते है. मुजको डर है के उनके सामने अगर तुमने मुजको बुरा कडा तो वो बरदाश्त नहीं करेंगे और तुम्हें जरूर तकलीफ देंगे.

ये अक बडोत बडी धन्सानी पुबी है जे धंस वाकेआ में मीलती है. अडनक बीन केस(र.अ.) को ये परेशानी नहीं दुध के अक शम्स उनडे बुरा भला केड रहा है. उसके बज्जे वो ये सोचकर परेशान हुए के के उनके मोडल्ले वाले अगर धंस बातको जान लेंगे तो वो धंस शम्सको तकलीफ

पलुंयायेंगे

यही बात दीचके दाई के अंदर पाई जाती है. दाई को जब उसका मडठ (जुस्को दअवत दी जाती है) सताता है और उस पर जुल्म करता है तो वो तकलीफ से जयादा धंस बातके लीये कीकरमंठ लो जाती है के मडठ अपनी कोताली के सभज पुदा की पकड में न आ जये.

ये अडसास दाईको मजबूर करता है के वो मडठ के खिलाफ बह दूगा करने के बज्जे फिरके लु में दूगा करे. वो धंसरो बहला लेने के बज्जे धरगुर का मामला करे. वो उरक चलत सुक को दामकर उरक साथ और ली जयादा अज्जे सुक से पश आम. वाजकि साथ अक/रही शकत (प्यार)का मामला करना ये अक आला धन्सानी पुबी है और ये आला पुबी दाईके अंदर आभरी उद तक प्रायी जाती है और उकीकती में दाईको जेसा ही डोना खालीये.

उजरत उमर झरक (रही.) का कौल है के लोग से मीलते रहो और ये

દેખતે રહો કે તુમ અપને દીનકો ઝખ્મી ન કરવો.

(ફતુલખારી-૧૦/૫૪૩)

ઈસ્લામ મેં યે બાત પસંદીદા નહી કે આપ લોગોં સે શીલના છોડ દે. બલકે ઈસ્લામ મેં યે મતલુબ હે કે આપ હર કિસ્મ કે લોગોં સે શીલતે રહો. યે શીલના ઈસ લીયે ભી જરૂરી હે કે ઈસ્લામ દઅવતી મજહબ હે ઓર શીલે બગેર દઅવતકા કામ નહી હો સકતા.

મુસલમાનકો ચાહીયે કે વો અપની દીની શખ્સીયતકી હંમેશા હિફાઝત કરને વાલા રહે. વો દુસરોંકા અસર કુબુલ કરનેકે બજાયે ખુદ દુસરોં પર અપના અસર ડાલનેકી કોશીષ કરે. વો લોગોં કે દરમ્યાન દાઈ બનકર રહે, ન કે ખુદ દુસરોંકા મદદ બન જાયે.

(અલ રિસાલા-૧૨/૧૯૯૫/૫)

હઝરત અબુ સઈદ ખુદરી (રદી.) ફરમાતે હે કે મૈને રસુલે અકરમ (સ.અ.વ.) કો યે ઈશાદ ફરમાતે સુના, જે શખ્સ તુમહે સે કીસી બુરાઈકો દેખે તો ઉસ્કો ચાહીયે કે અપને હાથ સે બદલ દે. અગર (હાથ સે બદલને કી) તાકત ન હો તો ઝબાન સે ઉસ્કો બદલ દે, ઓર અગર ઉસ્કીભી તાકત ન હો તો દીલ સે ઉસે બુરા જાને, યાની ઈસ બુરાઈ કા દીલ મેં ગમ હો ઓર યે ઈમાનકા સબસે કમઝોર જગો હે.

(મુસ્લિમ શરીફ)

ઈસ હદીસ કે આખરી જુમ્લે “યાની બુરાઈ કો દીલ સે બુરા જાને” ઉસ્કા એક જગો ઓર સુરત યે ભી હે કે બુરાઈ કો દુર કરને કે લીયે અસ્લાબે કુબુલ અપની કલ્બી કુવ્વતોંકો ઈસ્તિમાલ કરે. યાની હિમ્મત ઓર તવજ્જુહ કો કામ મેં લાયે.

ફીર ઈસીકે જિલા (નીયે) મેં ફરમાયા - ઈમામ અબ્દુલ વહહાબ શઅરાની (ર.અ.) ને કુતુબકા મુકામ હાસિલ કરને કે લીયે એક તદબીર જીંબી હે. જીસ્કા ખુલાસા યે હે કે અલ્લાહ તઆલકી જમીન પર જહાં જહાં જે જે નેક આમાલ શીટે હુએ હે ઓર મુદા હો ગયે હે ઉન્કા તસવ્વુર કરે. ફીર દીલ મેં ઉન્કે શીટનેકા એક દર્દ મેહસુસ કરે. ઓર પુરે ઈલ્લાહ ઓર તજર્ફઅ (રોને ધોને) કે સાથ ઉન્કો ઝીદા કરને ઓર રાઈજ (રિવાજ મેં જરી) કરને કે લીયે અલ્લાહ તઆલકે દુઆ કરે. ઓર અપની કલ્બી કુવ્વતોંકો ભી ઉન્કે ઝીદા કરને કે લીયે ઈસ્તિમાલ કરે. ઈસી

तरह नडां-नडां जे-जे मुन्करात ईले दुजे है. उनका भी ध्यान करें और उनके डेलक़ी की वजह से अपने अंदर अक हर्द और दुःख मेलसुस करे. ईर तनईअ (ग्रीडग्रीडाने) के साथ अल्लाह तआलासे उनको मीटाने के लीये हुआ करे और अपनी छिम्मत और तवज्जुह को भी उनको मीटाने के लीये इस्तिभाव करे.

ईमाम अब्दुल वल्लाह शअरानी (र.अ.) ने खीजा है के जे शप्स जेसा करेगा ईन्शाअल्लाह वो जमाने को कुतुब लोगा.

(उजरत मौलाना ईलयास (र.अ.) और दीनी दअवत-७२)

### दअवत की फिर :-

दअवत तो मुसलमानों पर इर्ज की हिसियत रफती है. जे शप्स दअवती काम करने की सवालीयत न रफता हो वो मदह के लकम/खिदायतकी हुआ करे. आप मदह के उपर मलेनत कर रहे हो तो कमसे कम ये लोना या लीये के आप अपनी तन्हाईयों में ये सोचकर तडप उठे के में दअवत और तब्लीग की जम्मेदारी अदा न कर सका. ईर जे इच्छितयार जुबानसे ये अल्लाह निकले पुदावंद गुजे माफ करेगा और आपनी तरक़से ईस कोम के लीये खिदायत के दरवाजे खोल दे.

मुसलमान कीस कहर पुशक़ीरमत है के पुदा और रसुल के कलाम की सुरत में उनके पास अक जेसा मुस्तनद खिदायत नामा मौनुद है. जस्का उवाला आपसे के मामलात में दीया जा सकता है और जस्के सामने तमाम लोगों को गरदन जुक जये. उसके बावजूद केसी अजब बात है के मुसलमानों को डाल मौनुदा जमाने में जेसा हो रहा है. जेसे उनके पास कोई मुतक़का फिरी और अअतिकाही बुन्याह ली नलीं. कीसी कोम के अकराह में अगर बेखीस्सी पैदा हो जये तो इन्तिलाई किमती पयगाम भी उसके लीये जे असर हो जाता है.

मौनुदा जमाने में मुसलमान डर दूसरे पोग्राम को डीरन समज लेते है मगर जालीस ईस्लामी दअवतका पोग्राम उनकी समज में नलीं आता. उसके लकम में चाहे किन्ती ही हवीले पेश की जये दूसरे पोग्रामों की मुसलसल नाकामी के बावजूद उसके बारे में उनका यकीन जत्म नलीं होता. असल ये है के मौनुदा जमाने के मुसलमानों पर "मसाईले हुनिया" का गल्बा है.

૨૫  
 ઉન્કે ઉપર “મસાઈલે આગિરત” કા ગલ્લા નહીં. યહી વજહ હે કે કૌમી ઓર દુન્યવી કિફમ કે મસાઈલ ફોરન હર શમ્સકી સમજ્ઝમિં આ જાતે હે. મગર ઉન્કી સમજ્ઝમિં યે નહીં આતા કે અલ્લાહ તઆલા આગિરત મિં મુસલમાનો કો અકવામ આલમ પર ગવાલ બનાના ચાહતા હે ઓર આગિરતકી યે ગવાહી વો ઉસી વકત દે સકતે હે જબકે ઉસસે પેહલે દુનિયામિં ઉન્હનિ દઅવતે ઈલ્લાહકા કામ કિયા હો.

(અલ રિસાલા-૩/૧૯૮૮/૩૧)

#  
 ઈસ્લામ કયું કે તબ્લીગી મઝહબ હે. ઈસ લીયે ઉસ્કા ફરીજા હે કે જીસ કદર હો સકે ગૈરકો અપને અંદર હજમ કરે. ન યે કે ઉન્કો દુર કરે. ઈસ લીયે અગર હમસાયા કૌમિં હમસે નફરત કરે તો હમકો ઉન્કે સાથ નફરત ન કરના ચાહીયે. અગર વો હમસે છુત છાત કરે તો હમકો ઉન્કે સાથ એસા ન કરના ચાહીયે. વો હમસે જાલીમાના બરતાવ કરે તો હમકો ઉન્કે સાથ જાલીમાના ઓર ગેર ઈન્સાફીકા બરતાવ ન કરના ચાહીયે.

તિ  
 ઈસ્લામ ખેર ખ્વાહીકી નસીહત કરનેવાલા હે. ઈસ્લામ જાલીબે અકવામ(કૌમો કો જમા કરને વાલા) હે. ઈસ્લામ તમામ ઈન્સાનો કો હમદદ હે. ઉસ્કો ગૈરો કે સાથ બુરાઈ કા બદલા બુરાઈસે દેને કા અમલ કરના ઉસ્કી શાયને શાન નહીં. (મકતુબાતે શૈખુલ ઈસ્લામ/૧/૪૭)

### કામ હી કામ :-

કિસ્મ  
 અલ્લાહ તઆલાને આપકો બહોત સી જીરમાની ઓર ઝેહની કુવ્વતે બતોર અમાનત અતા ફરમાઈ હે. મોમિન કો હર વકત અપના હિસાબ લે કર દેખતે રહેના ચાહિયે કે વો ખુદકી દી હુઈ ઈન તાકતોસે ખુદકી ચાહત પુરા કરને મિં કોસી હદ તક કામ્યાબ હે. આપકે ચારો તરફ કામ હી કામ હે.

### સોચીયે.....

રિ  
 #  
 ✨ આપ અપની તમામ કમઝોરીયોકો દુર કરકે પુરે તૌર પર અલ્લાહ તઆલા કા બંદા બનને મિં પુરે કામ્યાબ હો ચુકે ?

✨ કયા ? આપકે આસપાસ કોઈ ભી ઈન્સાન ખુદસે ઓર ઉસ્કે દીન સે નાવાકિફ ઓર અખ્લાકી પ્રૌરાવટ્ઝમિં પડા હુવા બાકી હે ?

✨ જબ તક યે સારે કામ બાકી પડે હુવે હે. આપ એક લમ્હે કે લિયે ભી

अपनेको किस तरह झारिग समज सकते है ?

★ आपके वीथे तो काम ही .....काम है.

### मुलाकात का शायदा :-

रास्ता चलते में दायें-बायें का उसुल सडक के वीथे कार आमद है. मगर वही दर मौके पर कार आमद नही. छंदगी के बलोट रास्ते जैसे भी है जहां मिलाप दरकार है न के धंधर धंधरे से कतरकर निकल जना. इन रास्तो में आपको भी धंरी इभपर चलना पडेगा जिस इभ पर दूसरा चल रहा है. वरना आप उन रास्तो में काम्याब नहीं हो सकते.

दरवत का रास्ता ऐसा ही एक रास्ता है जहां अंतराज (मुंझरने) के बजये मुलाकात का उसुल धंजियार करना पडता है. वरना दाध और मदध का सामना ही न लोगा. और जब सामना न लोगा तो दरवत की तरल पेश की जयेगी और वो धंरके कानमें पडेगी.

### दरवत का नशा न होने के अरबाज :-

धंस जमाने में दरवत और धंस्वाह का काम पुरी तरह शायदा मंद न होने के दो अरबाज है.

इशाद जमाना और दराम गीजों की करारत के सबज आम तौर पर लोगों के हील सज्जत और आभिरत से गाइल हो गये है और उक को कुबुल करने की तौकीक कम हो गई है.

“अत्र बिल मअइइ” और “नही अन्रील मुन्कर” और दरवते उक के इशाद से गइलत आम हो गई है. आवामका तो क्या जिक? उल्मा और भवार्स में धंस नइरत के ओलसास बलोट कम है. अस ! ये समज वीया गया है के अपने आमाव दुरस्त कर वीथे जये तो ये काडी है. याहे उन्की बीवी, औवाह, भाध, दोस्त वगेरह केसे ही गुनाहों में मुंजतवा रहे. उन्की धंस्वाह की किकर गोया उन्के जम्मेही नही.

दरवते उक को सही उसुलों के साथ अदा करने के बाद उन्को कुबुल करना या न करना उरमे न आपका कोध दणव है न आपकी जम्मेदारी. वो सिर्फ अल्वाहलत आला हीका काम है. वोही जनता है कौन गुमराह रहेगा और कौन खिदायत पायेगा. आप धंस किकरमें न पडे. अपना काम

करते हैं। लिम्मत न हो, मायुस न हो, अल्लाह तआलासे लिदायतकी  
दुआ मांगते रहें (म.क.प-४३३)

### गेर आलीम की तकरीर :-

कुतुबखाना रलीमीयल के मास्टर ने तब्वीगी जमाअत पर अक  
अतिराज शैखुल उदीस उजरत मौलाना जकरीया (र.अ.)  
को भेजा था, अतिराज ये था।

उदीसमें आया है के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया वअज  
और तकरीर या तो हाकिम करेगा या मामुर यानी उल्मा या मुतकब्बीर .

(मिशकत शरीफ-३५)

ईस उदीसके बाद ये लीजा के लुजुर (स.अ.व.) का ईशाद है के  
वअज और तकरीर करनेवाले सिर्फ तीन ही किस्मके लोग होंगे।

(१) हाकिम (२) आलीम (३) मुतकब्बीर.

तो ये जे तब्वीगीमें निकल कर लंबे लंबे वअज और तकरीर करने  
वाले न तो वो हाकिम है न आलीम होते है. तो आपिर ये कीस किस्ममें  
हाजिल है? क्या ये तीसरी किस्ममें हाजिल नहीं है? क्या उन्के लीये  
वअज और तकरीर जर्हज हो सकता है? ?

ईस पर उजरत शैखुल उदीस (र.अ.) ने जवाब लीजा के आपका  
अतिराज बिलकुल दुरस्त है. के उकीकतमें गेर आलीम को वअज  
और ખतीबाना अंदाजसे कुर्आन और उदीस के जरीये से बयान करना  
जर्हज नहीं. अगर ईसी अंदाजसे बयान करेंगे तो मुतकब्बेरीनमें  
हाजिल होंगे. लेकिन दअवत और तब्वीग सबके लीये जर्हज है और  
दअवत और तब्वीग के लीये जून बातों की जरूरत पडती है वो तब्वीग  
के "छे नंबर" के दायरेमें हाजिल है और तब्वीगके पेशवाओं और  
बुजुर्गों की तरफसे लंमेशा ये लिदायत दी जाती है के तुम लोग "छे नंबर"  
के लुह्फमें रेल कर दअवत और तब्वीगको काम करना.

अब अगर कोई गेर आलीम वाअेजाना और ખतीबाना अंदाज  
ईप्तिहार करता है. या कुर्आन और उदीस की नुसुस से ખिताब करता है.  
या बेसुबुत बार्तेको वाईजाना अंदाजमें बयान करता है तो वो उस्की  
अपनी जती गवती है. उस्की ईस्वाह की जरूरत है. उस्की वगलसे पुरे

तब्बलीगी मकतबे किंकरे पर कोर्ष एल्जाम नर्डीं डे (अन्वारे खिदायत-३८७)

**अंगलादेश में साजीश :-**

अंगलादेश में कुछ औरतों को देखा के आधी नंगी, युरोपी विभास, सर पर डेट और मोटर सायकल पर जा रही हैं। उनका भास निशान जे युरोप में आम है। N.G.O. यानी (नोन गर्वनमेन्ट आर्गेनाईजेशन) देखा तो डेरत डुई के ये तन्जीम तो युरोप में काम करती है। बेकीन अब ये तन्जीम जेर शोर से अंगलादेश में भी मेहनत कर रही है।

असल में ये इलाही तन्जीम है। जे डर शप्स के साथ मद्द करती है और डीर ईस मद्द के बाद मुसलमानों को काडीर और मुरतद कर देती है। १९८२ ई.स. "टाईम्स" के रीपोर्ट के मुताबिक ईन्डोनेशिया में ईस तन्जीम की वजह से अबतक २० लाख मुसलमान मुरतद डो गये है।

ईस तन्जीम को काम औरतों को समाज में मर्दों के बराबर मुकाम दीवाना और रोजगारी दीवाना और मोटर सायकल को अंदोबस्त करना है। बेकिन असल मकसद ईसाईयत को तब्बलीग है।

(सुन्तते नबवी और जदीद सायन्स)

**औश का आपरी अंजाम :-**

समंदर के किनारे पर मुफ्तवीक किस्मके लोग सेर तडरीड के बीये आते है। मगरबी मुल्कों में ईस्का रिवाज जयादा है। हमारे सामने सालीव पर मगरबी मर्द और औरतें आधे नंगेपन की डालतें में तडरीड में मशगुल थे। उसको देष कर ये ज्वाव आया के मगरबी मुल्को में "सामाने डयात" की तकसीम के तीन हजे है। जइरत, राडत, औश। जदीद ईन्किलाब ने मगरबी ईन्सान को ये मौका दीया के वो अेक के बाद अेक ईन तीनों मरडलों (मंजीलो) से गुजर सके। मगर ये डुवा के औश के उंचे मरडले पर पडुंचने के बाद भी उसको सुकुन नर्डीं भीवा। युनांचे अब मगरबी ईन्सान नाजार्थक को जार्थक करने को तजुरबा कर रडा है। ये उसकी छंडगी को आपरी मरडला है। उसके बाद और कोर्ष मरडला नर्डीं। उसके बाद सिई मायुसी के सिवा कोर्ष मंजील बाकी नर्डीं और अब मगरबी छंडगी में ईस्की शइआत डो युकी है और हीन बदीन बढ रही है। ईसी तरड अब

३

-

३

३

३

३

३

हिन ज हिन

उस्का आभरी वक्त आ गया ले के जब ईन्सान को भुदाके सख्ये दीनका पयगाम पढुंयाया जये और वो उस्को अपने अंदरकी परेशानीयो का जवाब पाकर उसे कुबुल करले. (अल रिस्सावा-३/१८८८/४३)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

### (५) नेक आमाव

#### नेक आमावकी तौहीक :-

अगर अरब्ये आमावकी तौहीक तौहीक खंडगी बडी नेअगत वे.

दुजुर (स.अ.व.) की प्रौदमतमें अक शम्सने अर्ज कीया या रसुलुल्लाह (स.अ.व.) आदमीयो में कौन बेउतर ले ? आप (स.अ.व.) ने ईश्राफ़ इरमाया के वो जस्की उम्र लंबी दुई और उस्के आमाव अरब्ये रहे. कीर उसी साईलने अर्ज कीया के आदमीयो में बुरा कौन ले ? आप (स.अ.व.) ने ईश्राफ़ इरमाया जस्की उम्र लंबी दुई और आमाव उस्के बुर दुजे. (मस्नदे अहमद)

जब कीसीको खंडगी आमावे सावेडा वाली खंडगी डोगी तो जल्नी लंबी उम्र उस्को मिलेगी उसी कहर उस्के दीनी दरजत में तरककी डोगी और जस्के आमाव और अम्लाक अल्लाह से दुर करने वाले दांजे. उसी कहर वो अल्लाह की रहमत और रजामंदी से दूर से दूर डोता यवा जयेगा. (मआरिक्व लदीस - २/१३१)

#### आमाव का अंजाम:-

उदीसमें ले के दुनिया और तमाम गुनाह जीना-थोरी वगेरु डोज़भ में डाल दीये जयेंगे.

तरगीब व तरलीब में उजरत अबु दरदा (रही.) से रिवायत ले के अल्लाह तआवा शानदुंभेदाने मेउशर में निदा इरमायेगें.

“जे अमल भुदा के लीये कीये गये ले जिन सबको जन्नत में ले जाओ. और जल्ने अमल गेरे भुदा के लीये कीये गये जिन सबको जलन्नम में ले जाओ. युंनारये दरदरे अरवद, मकामे ईब्राहीम, काबा, और मस्जिद, और दूसरी बरकती यीजें सब जन्नत में पढुंयायीं जयेगी.

(मदुआते मुदरीसे कश्मीरी (स.अ.) ८०)



और सामने.....  $\frac{1}{2}$   $\frac{1}{2}$   
 ये चारों कलिमात रकीक (साथी) होंगे.

अच्छे बुरे आमाव  $\infty$  नन्त और होऊँ में सवाब और अजाब की शकल में नजर आयेगे.

दुनिया में हमारी आँधों पर इस डकीकर्व को टेपने में जो पई आउ हो रहे है. क्यामत में वो  $\frac{1}{2}$  कर रहेगा.  $\frac{1}{2}$  वक्त ये बात साइ साइ नजर आ जायेगी और  $\frac{1}{2}$  के साथ ये भी साइ हो जायेगा के पुदा कीसीपर जुल्म नही करता. और दुनिया में नावाकिइ लोग ही पुदा की बनाई दुई तकदीर को जुल्म वगेरह से ताबीर किया करते थे.

(मल्लुजाते मोहदीरेकश्मीरी (र.अ.) ११६)

### नेक आमाव में जल्दी करना :-

अल्लाह तआला की जते आली से बराबे रास्त काम्याबी हासिल करने के लीये अल्लाह तआला के लुकमों को उजरत मुहंमद (स.अ.व.) के तरीके पर पुरा करने में दुनिया और आभिरतकी तमाम काम्याबीयों का यकीन करना. अल्लाह तआला का ईशद है...

जो शप्स कोई नेक काम करे मई हो या औरत शर्त ये है के ईमानवाला हो तो हम उसे जरूर अच्छी छंदगी बसर करायेंगे. (दुनिया और आभिरतमें)  $\frac{1}{2}$  के अच्छे कामों के बदलेमें उनकी अजर हेंगे.

(सुरअे नडल - ८८)

उदीसमें ईशद है :-

उजरत अबुदुरैरु (र.दी.) रिवायत करते है के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने ईशद करमाया : शात गीअोंसे पहले नेक आमाव में जल्दी करो.

- \* क्या तुम्हें ऐसी तंगदस्ती का ईन्तिजार है ? जो सब कुछ भुला दे.
- \* या ऐसी मालदारीका ईन्तिजार है ? जो सरकश बनादे.
- \* या ऐसी मिमारीका ईन्तिजार है ? जो नाकारा (बेकार) कर दे.
- \* या जैसे बुढापेका ईन्तिजार है ? जो अकल भी दे.
- \* या ऐसी मौतका ईन्तिजार है ? जो अयानक आ जाये.

(के बाज भरतबा तौबा करनेका मौका भी नही मिलता)

\* યા દનજીવકા ઈન્તિઝાર હે ? જો આનેવાલી છુપી લુઈ બુરાઈયોં મેં બદતરીન બુરાઈ હે.

\* યા કયામત કા ઈન્તિઝાર હે ? કયામત તો બડી સપ્ત ઓર બડી કડવી ચીઝ હે. (સીમીઝી)

મતલબ યે હે કે ઈન્સાન કો ઈન સાત ચીઝોં મેં સે કીસી ચીઝ કે આને સો પેહલે નેક આમાલ કે ઝરીયે અપની આગિરતકી તેયારી કર લેની ચાહીયે. કહીં એસા ન હો કે ઈન રૂકાવટોં મેં સે કોઈ રૂકાવટ આ જયે ઓર ઈન્સાન આમાલે સાલેહાસે મેહરૂમ રેહ જયે.

(મુન્તાખબ અહાદીસ-૧૩૬)

### ગનીમત સમજો :-

શેખ અ.કાદીર જીલ્લાની (ર.અ.) અપની જીંઝીવકા મેં ઈશાદિ ફરમા રહે હે.

દેખો ! રસુલુલ્લાહ (સ.અ.વ.) ઈશાદિ ફરમાતે હે જીસ્કે લીયે ખૈર કા દરવાઝા ખોલા જયે તો વો ઊસ્કો બહોત ગનીમત સમજે. ક્યું કે વો નહી જાનતા યે દરવાઝા કબ બંધ કર દીયા જયેગા.

લોગો ! ખુશ હો જાઓ. ઓર ગનીમત સમજે કે અપની જીંઝીવકા કે દરવાઝે કો જબ તક વો ખુલા હુવા હે. વો અન કરીબ બંદ કર દીયા જયેગા. રો

ગનીમત સમજે નેકીયોં ઓર દુસરે નેક આમાલ કો જબતક તુમ જીંઝીવકા કરને પર કાદીર હો.

ગનીમત સમજે તૌબા કે દરવાઝે કો ઓર જીંઝીવકા દાખિલ હો જાઓ જીંસસે પેહલે કે વો સકરાત કે વક્ત બંદ હો જયે.

ગનીમત સમજે દુઆ કે દરવાઝે કો વો તુમહારે લીયે ખુલા હુવા હે. ઈસસે પેહલે કે મોતકા ફરિશતા આયે ઓર તુમહે એક લખહે કી ભી મોહલત ન દે. ઓર તુમહારી આંખ બંદ હો જયે.

(શેખ અ.કાદીર જીલ્લાની (ર.અ.) (ફત્હે રબ્બાની)

### કમાલે ઈમાન કે લીયે અમલ કી જ રૂસ્ત :-

નેક આમાલ કા તઅલ્લુક જીંઝીવકા તમામ મામલાતસે હે. જો આદમી કો પેશ આતે હે. આદમી જબ બોલે તો અપની બાત ખુદાકે લૂકમાં કો

२  
६  
इसल  
२०२२

पुरा करते लुअे ओवे. जब कीसी से मामला करे तो उसके घर मामले में  
 ईमान का रंग ही भाई है. जब कीसी से छिप्टलाक या गरबड पेश आये  
 तो यहां भी उसका ईमान उसको सही (ईस्ला) करने के लीये रेलनुमा बन  
 जाये. वो लोगों के दरम्यान ईस तरह रहे के उसकी मोहब्बत और नकरत  
 उसकी दोस्ती दुश्मनी उसका जुडना उसका कटना सब उसके ईमान के ताबे  
 हो जाये. यही नेक अमल है और (अैसे) नेक अमलके बगैर ईमानकी तकमील  
 नही होती.

(दीन-व-शरीयत-२६४)  
२४

**हिदायत के सिराग :-**

अब्दुल्लाह ईबने मसूद (र.दी.) इरमाते है के : जैसे चेरवी करनी  
 हो वो मर्लुमीन की चेरवी करें. (ईस लीये के ज़ादा लोग ईन्ने से मेल्कुज  
 नहीं है) और वो लुजुर (स.अ.व.) के सलाबा (र.दी.) है. जे ईस उम्मत  
 में सबसे ज़यादा अइजल थे. उनके दील सब से ज़यादा नेक थे. जे  
 ईल्म में सबसे ज़यादा गेहरे और तकल्लुकात में कमतर, अल्लाह तआला  
 ने उन्को अपने नबी (स.अ.व.) के साथी और अपने दीन की डिफ़ाजत  
 के लीये पसंद इरमाया था. बिहाजा उन्की इज़ीबत पहंचानो और उन्के  
 नकशे कदम पर चलो और जहां तक हो सके उन्के अप्लाक और शीरत पर  
 मजबुती से कायम रहो. क्युं के वो सीधे रास्ते पर गामजन (चलनेवाले)  
 थे.

(मज़ाहिरे उक - १/८३)

**सहाबा (र.दी.) की पहचान :-**

जस्ने रसुले अकरम (स.अ.व.) को ईमान की डालत में देभा और  
 आपकी सोलबत से शायदा उठाया और उसी डालत में उन्की मौत लुई वो  
 सलाबी है.

लुजुरे अकरम (स.अ.व.) के जमाने में सलाबा (र.दी.) आपकी  
 सोलबत में जामोश भंठे लुअे आपकी देभते रहते हो जैसा नहीं था  
 बल्के आपकी सोलबत में लुमेशा तककुर और तदब्बुर (गेहरी सोच) का  
 सिलसिला जारी रहता था. कुआन मजहदी आयत के मुताबिक ये  
 सोलबत तालीमे डिफ़्तका अक लडका होता था. आपकी सोलबत अक  
 हीत जालबत थी जालबत का नामन नेजामते रफ़ी तदहीरा (नेजामत  
 की बातें बयान) इरमात थे. आप डालतरीन की हीजके रब से जबरदार

२  
६  
इसल  
२०२२

करते थे, जोरकी तोकीक आपकी गठलाय तगाला की तरफ से ही जाती थी. आप कुआन मछड की आयती की तकसील बयान करताते थे. आप लोगों के सवाल का जवाब देते थे. आप लोगों की वो बात बताते थे के जोससे लोगों का शक यकीनमें बढल जाता था. आप लोगों की जिक और उम्ह और शुक् के कविमातकी तालीम देते थे. आप लोगों को कुआन मछडकी नाजिल दुर्ध आयते सुनाते थे. आप लोगों को पीछले अंबिया (अल.) और पीछले ईमानवालों के वाक्यात सुनाते थे. वगेरह.

रसुल अकरम (स.अ.व.) की सोलहवें में बेठनेवाले सदाबा (रही.) आपसे ईस किस्मकी रब्बानी बातें सुनते थे. जोससे आपकी सोलहवतमें बेठनेवालों को ईमानी भीजा मीलती थी. आपकी ईस तरहकी नक्षा बगश सोलहवत ने आपके सदाबा (रही.) को वो अज्म ~~ए~~ दे दीया. जोस्को तारीख में अख्दाबे रसुल (स.अ.व.) कडा जाता है.

### ईबादत :-

ईबादत दीन और शरीअत में अेक भास अमलका नाम है. जे कीसी उस्ती को गैबी तौर पर नक्षा नुकसान का मालिक और लाजतरेवा समजकर उसे राख और पुश करने के लीये और उस्की नजदीकी हासिल करने के लीये जे ईबादत और ~~तगवेक~~ (गडाई) के काम कीये जाते है. जेसा के सिजदा, तवाक, मन्त, कुआनी और उस्के नाम का वज्हा और जिक वगेरह तो जैसे आभाव को दीन की भास ईस्तिवाह (भाषा) में ईबादत केहते है.

और ये ईबादत सिर्फ अल्लाह तवाह का उक है और जे कोई पुदाके सिवा कीसी दुसरे के लीये जेसा अमल करे वो भेशक मुशरीक है और मुशरीक क्रौमों का शिर्क यही रहा है के उनलोंने अल्लाह के सिवा और भी कुछ उस्तीयों को नक्षा नुकसान का मालिक समज और उनको राख करने के लीये ईबादत की किस्म के काम कीये ये शिर्क है और जुल्मे अज्म है. जोस्की पुदा के यहाँ दरगैज मआझी नहीं.

(दीन व शरीअत-५१)

ये भी अज्म लकीकत है के ईन्सान अगर शिर्क करने भी लगता है तो भी वो नहीं केह सकता है "रब" (अल्लाह) के अलावा कोई और

ली है। वो कभी ये नही केल सकता के आस्मान, जमीन, सुरज, यांइ को कीसी और ने पैदा किया है। बडे से बडा शिक करनेवाला मुशरीक भी ये नही केल सकता के पैदा करनेवाला अक से जयादा है।

ये बात न अरबके मुशरीक केलते थे और न आब के मुशरीक केल सकते है। कुआन मज्जद ने ये बात एशाद इरमाएँ है के अगर एन मुशरीकों से पुछा जये के बताओ ! जमीन और आस्मान और उसकी तमाम काईनात को किस ने पैदा किया ? कोन एस पुरे आलमको यवा रडा है ? कोन रोजी देता है ? कोन मारता है ? कोन ज्वाता है ? तो वो कहेगे और एकरार करेगे के अल्लाह ही। “और अगर तुम एनसे पुछो के जमीन और आस्मानका जाकीक और सुरज यांइको काममें लगाने वाला कोन है ? तो उनका जवाब होगा - अल्लाह है। (सुरअे अन्कभुत)

जब वो “रब” अकेला अल्लाह ही को मानते थे तो हीर वो एबाहत अल्लाह तआला के अलावा दूसरोकी क्युं करते थे ? अल्लाह के सिवा दूसरोसे अपनी जरूरत क्युं मांगते थे ?

असल बात ये लुई के शयतानने उनको धोका दीया के ये जे अल्लाह के नेक बंटे और जुजुर्ग गुनरे है। अल्लाह तआलाने उनकी एबाहत से राख छोकर उनको ऐसा मुकाम दे दीया के अब वो जे याहे कर सकते है। अब अगर वो कुछ देना याहे तो दे सकते है और लेना याहे तो ले सकते है। अगरये ये अल्लाह के ही बंटे है। और असल माखिक, रोजी देनेवाला और कुदरतवाला तो वोही अल्लाह है। मगर उसने उनसे राख छोकर उनको कुछ एप्तिवार दे दीये है। एस वीये उनको राख रफने और पुश करनेके वीये ये मुशरीक उनकी एबाहत करने लगे। उनके नामकी मन्नतें मानने लगे। उन पर यदावा यदाने लगे।

दूसरी बात शयतान उनको ये समजता है के अल्लाह तो बडोत बडा और कडडार और जब्बार है। एसवीये उसको राख और पुश करना तो बडोत मुशकील है। जुदा तक पडुंयना ऐसा मुशकील जैसा दुनिया के बडे बादशाहों तक पडुंयना। अक आम आदमी के बस की बात नही। हीर वो अपने आपको जब देपते है के उनकी ज्दगी गुनाहोंसे पाक नही और जुदा तक पडुंयने के वीये पुरे तीर पर दुनिया छोडकर सन्यासी

डोना नज़री है। तो ईर शयतान उनके काम में युक्तता है के जुदा की मज्बूक में कुछ हस्तीयां ऐसी भी है जिनोंने अपनी नेकी और पाकी की वजहसे अल्लाहसे नजदीकी हांसिल कर ली है और उसकी बारगाह में उनका बड़ा दर्ज है। बिहाजा उनको राज और पुश करवो। ये आसानी से राज हो जयेंगे और हमारा बेडा आसानीसे पार कर देंगे और अल्लाहने उनको जे इम्तियार और ताकत दी है उससे हमारा काम बना देंगे।

अल्लाह तआला के बारे में ऐसी गलत फ़ैलमीने उनको गुमराह किया और वो जुदा से ना उम्मीद होकर इन हस्तीयों की तअजीम और इबाहत और उनके नाम की नज़रो नियाज करने लगे के उनकी मेहरबानी से हमारे काम बनते रहेंगे। ये सब ब्याते गुमराही की है।

ये कड़ांकी समजदारी है के “रब” तो अकेला अके लो। सब कुछ करने वाला और हर चीज का मालिक अकेला अल्लाह ही लो और इबाहत के लायक उसी की जत है। उसको छोडकर दुसरो की भी इबाहत की जये ये कड़ां का इन्साफ़ है ?

कुआन मज्हदमें अल्लाह तआलाने अपनी रहमत को जे इन्तेहा वसअत और आम मगफ़िरत को बयान करमाया है ताके अल्लाह की जत के बारेमें गलतफ़ैलमीयां दुर लो। युनांये सेंकडो जगा अल्लाह को रहमान, रहीम, ग़फ़ूर, करीम, वदुद, रउफ़, लतीफ़, तव्वाब, अरहमुरर्रहमीन, ग़फ़ूरर्रहीम के मोलव्वत भरे नामों से याद किया गया है। बार बार कला गया है के बंदे अल्लाह की रहमतसे मायुस न लो। अल्लाह गुनाहगारोंको माफ़ करके उनकी भी सुनता है। आवो उसकी तरफ़ अल्लाह सबको माफ़ करने के लीये तैयार है।

إِذْ أَسَأَلْتُكَ عِبَادِي أَنِّي فَاتِي قَرِيبٌ (پ- ۱۸۵-۲)

कुआन मज्हद में इशाद है। “अय मोलुंमद (स.अ.व.) जब मेरे बंदे तुमसे मेरे बारे में पुछे तो तुम उनको मतवा देना के मैं उनसे करीब लुं। हुआ करनेवाला जब मुझे पुकारता है तो मैं उसकी पुकार सुनता लुं।”

अल्लाह की रहमत और करम का अज्जब तज्केरा है। अल्लाह तआला हर बंदेसे करीब है। वो क्युं ना उम्मीद होता है ? वो क्युं ये

समजता है के वो अल्लाह मुश्किल से राज्हा लोगा और मुश्किल से सुनेगा?

### ईस्लाह की झिंकर :-

हुजुर (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया के अल्लाह तआला इरमाता है के मैं अल्लाह हुं. मेरे सिवा कोई मा'बुद नहीं मैं सब बादशाहों का मालीक और बादशाह हुं. सब बादशाहों के दीव मेरे हाथ में है. जब मेरे बंदे मेरी ईताअत करते है तो मैं उनके बादशाहों और डाकिमों के दीवोंमें उनकी शक़्त और रलमत डाल देता हुं और जब बंदे मेरी नाइरमानी करते है तो मैं उनके डाकिमों के दीव उन पर सप्त कर देता हुं वो उनकी दरतरह का बुरा अजाब यथाते है. ईस वीये तुम डाकिमों और बादशाहों को बुरा केडने में अपना वक्त बरबाद न करो बल्के अल्लाह तआलाकी तरफ़ इल्हाम और अपने अमल की ईस्लाह की झिंकेमें लग जाओ. ताके मैं तुम्हारे सब कामों को दूरस्त कर दूं. (मिशक़त शरीफ़)(म.कु.३/३६०)

हुजुर (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया के दुनिया के भीठे और अरबे मालुम होने वाले आमाव आभिरत में कउवे और सप्ती का सबब बनेंगे और दुनिया में कउवे और नागवार मालुम होनेवाले आभिरतमें डलावत (मिठाश) रलमत और जुदावंद तआला के ईमानों का सबब बनेंगे. मतलब ये है के दुनिया में नइसानी ज्वालीश के ताबे छोकर जे बुरे आमाव किये जाते है तो देजने मे तो आज बडे लज़ीज़ और परसंदीदा हीपाई देते है लेकिन आभिरत में जब इन गुनाहों की वजह से सजा मिलेगी तो सारी लज़ज़त भाक में मीव जयेगी और आज शरीअत की ताबेदारी में जे नेक आमाव करने में तबीयत के पिलाइ जे नइस को बडोत ना परसंद मालुम छोते है. मगर यही आमाव आभिरत में रलमत का जरीया बनेंगे और दुनिया की तमाम नागवारीया दूर हो जयेगी और ये तमन्ना होगी के काश ! ज़ुंइगी का कोई खिस्सा भी नेक अमल से भावी न गुजरता तो और जयादा बडे दरजत की बुलंदी नसीब होती.

(मजमउज़ ज्वाईद-१०/२४८)

### ईस्लामी अहक़ाम:-

जानने वाले ततगत है और नाली जानने वालों को जानना यालीये के

ईस्लाम के तमाम अलकाम ईन्सानकी क्तिरत का जैन तकाजा है। उन अलकाम पर अमल करना हर लकीकत अपनी क्तिरत के तकाजों को पुरा करना है और शरीअत के अलकाम अल्लाह तआला की तरफसे नाजीब किये गये है। ईस लिये उन में अक पास बरकत हैं। ईस बरकत की वजह से दुनिया की जूँगी ईन्मिनान और सुकुन से मालामाल होती है और मौतके बाद ईज्जत की जूँगी और लंमेशा की राहत लासिल होती है।

ईस उम्मत पर जे डालात पेश आते है उनकी हैसियत बिमारी की है। बिमारी दवा और ईलाज से ठीक होती जाती है।

ईस तरह ये डालात भी ईलाज से दूरस्त हो जायेंगे। और उनका ईलाज दीन और शरीअत पर अमल करना है।

### अल्लाह वाले :-

हर आदमी किसी न किसी चीज के लीये जता है। कोई अपनी बीवी बच्चों के लीये जता है। कोई माल दौलत के लीये जता है और कोई ईज्जत और सरदारी के लीये मगर ईस किस्म की जूँगी मोमिनो की नहीं।

मोमिनो की जूँगी वो है जब के आदमी अल्लाह तआला के लीये जने लगे। उसकी सोच और ज्वालीश पर जुदा का गल्बा हो जाये। वो बोले तो सोच कर बोले जुदा को क्या पसंद है? वो अमल करे तो जुदा के इरमान के मुताबिक करे।

### दीनी गिरावट:-

लुलुर (स.अ.व.) ने उम्मत को जबरदार किया है के बाद के जमाने में तुम्हारे अकार्थ और आमाव, अप्लाक और जूँगी के दूसरे शोबो में बलोट तब्दीलीयां आयेगी और वो बलोट बुरी तब्दीलीयां होगी।

युनांचे ईस्का सबसे जयादा जेडसास उन लोगोको हुआ और सबसे जयादा उन लोगोका हिल रोया जूनहोने रसुले अकरम (स.अ.व.) को और आपके इज्जत सलाबा (र.दी.)को देया था और फिर बादके मुसलमानो को देया था।

लुलुर (स.अ.व.)के मशहुर सलाबी और आपके आदीम डजरत अनस (र.दी.)उन सलाबा में है जूनहोने लुलुर (स.अ.व.)के वक़तके

બાદ લંબી ઉમર પાઈ ઔર પહેલી સદી કે આખિર તક દુનિયા મેં રહે વો અપને દૌર કે મુસલમાનોં સે ફરમાયા કરતે થે.

અગર કોઈ એસા આદમી જીસ્ને ઉમ્મત કે અગલોં કો પાયા ઔર દેખા થા, આજ અપની કબર સે ઊઠા કર તુમહારી ઈસ દુનિયા મેં ભેજ દિયા જાએ તો ઈસ્લામી જાંદગી કી ખુસુસીયત મેં સે ઈસ નમાઝ કે સિવા કુછ ભી ન પહેચાનેગા. (કયું કે બાકી સબ ચીઝોંમે ફર્ક પડ ચુંકા હે) ઈસી તરહ રસુલે અકરમ (સ.અ.વ.)કે દુસરે સહાબી હઝરત અબુ દરદા (રદી.)જીન્હોં ને આખિર મેં મુલ્કે શામ મેં રેહના પસંદ કિયા થા. અપને ઈલાકે કે ઉન મુસલમાનોં સે જીન્હોંને રસુલે અકરમ (સ.અ.વ.)ઔર આપકે અસ્હાબ કો નહીં પાયા થા ફરમાયા કરતે થે.

અગર રસુલે અકરમ (સ.અ.વ.) તુમ મેં તશરીફ લે આયે (ઔર તુમહારા હાલ દેખે) તો જીસ હાલમેં આપ ઔર આપ કે અસ્હાબ થે ઉસ્મે સે કુછ ભી નમાઝ કે સિવા ન પહેચાનેંગે.

ફીર દુસરી સદીકે ઈમામ અવઝાઈ (ર.અ.) જો મુલ્કે શામ કે મુહદ્દીસ ઔર ફકીહ થે. હઝરત અબુ દરદા (રદી.) કા યે દર્દ ભરા મકુલા અપને ઝમાને કે લોગોં કે સામને નકલ ફરમાયા કરતે થે.

અગર આજ અબુ દરદા (રદી.) હોતે (ઔર ઈસ વકત કી હાલત દેખતે) તો ઉન્કે એહસાસ કા કયા હાલ હોતા. ?

ફીર ઈમામ અવઝાઈ (ર.અ.) કે શાગીર્દ ઈસા બીન યુનુસ (ર.અ.) જબ અપને હલ્કે મેં ઈમામ અવઝાઈ (ર.અ.) સે રિવાયત નકલ કરતે તો હસરત કે સાથ ફરમાતે.

અગર હમારે શેખ અવઝાઈ (ર.અ.) હમારે ઈસ ઝમાને કો દેખતે તો ઉન્કા એહસાસ કયા હોતા?.

ઈસ્કે બાદ અબ ૧૩/૧૪ સદીયાં ગુજર ચુકી હે ઔર દીન મેં કમઝોરી ઔર તબ્દીલી બરાબર જરી હે. લેકીન ઈસ્કે સાથ સાથ ઉમ્મત કે મુસ્લેહીન ઔર મુજદ્દેદીન ઔર ઉલ્માએ રબ્બાની જો દીન કી અમાનત કે અમીન ઔર હિક્કાઝત કરને વાલે હે. પહેલી સદી સે અબતક બરાબર કોશીષ કરતે રહે હે. હુઝુર (સ.અ.વ.) ઉમ્મત કે લીયે જો સિરાતે મુસ્તકીમ મુકર્રર ફરમા ગયે થે. મુસલમાન ઉસ પર સાબિત ઔર કાયમ રહે. ઉમ્મતે મુહંમદીયા

में जिस दर्जे में ली दीन से तअल्लुक ईल्म व अमल और आभिरत की फिर उम आज ली देण रहे है. आलमे अस्बाब में ये सब उन्हीं नबीयों के वारिसों की मोशीफोंका नतीजा है.

(अल कुरकान-३/२००३/१४)

### हिंके आभिरत का नफ़ा :-

दुनियाको सराय और मुसाफ़िर जाना समझे और आभिरतको अपना घर समझे. अगर ये बात ખुब ध्यान में आ जये तो ईन्शाअल्लाह तमाम मुसीबतों छल हो जये. जिस तरह दुनिया के सफ़र की मुसीबतों वतन का आराम सोचने से दूर हो जाती है. ईसी तरह आभिरत के आराम का भ्याल करके दुनिया की बड़ी से बड़ी मुसीबत ईन्शाअल्लाह आसान हो जयेगी. तमाम ખराबीयां आभिरत को लुवाने से और दुनिया को सामने रखने से होती है. दुनिया पर दीन को मुकद्दम (आगे) रखे ईन्शाअल्लाह दीन की बरकतसे दुनियाली ठीक हो जयेगी और उसकी तकसील छदीस शरीफ़ में ली मौजूद है के,

“जे शम्स तमाम फिरों को अेक फिरर यानी आभिरत की फिरर बना दे तो अल्लाह तआला उसको दुनिया की फिररसे मेलकुञ्ज रहेगा.

मालुम लुवा के अगर दुनिया को दीन पर मुकद्दम करेगा तो दुनिया तकदीर से जयादा नहीं मीलेगी. मगर आभिरत तो बिलकुल बरबाद हो जयेगी.

(अल कुरकान-१२/१८८०/२३)

### दीन के नाम पर दुनिया :-

दुन्यवी चीजों को मकसद बनाने का नाम बे दीनी और आभिरत को मकसद बनाने का काम दीन है. आम कौमे दुनिया को दुनिया के नाम पर करती है. मुसलमान का बिगाड ये है के वो दुनिया को दीन के नाम पर करने लगे.

मुसलमानों का बिगाड ये है के वो दीन को अपनी आल-औलाह और कारोबार में बरकत का सस्ता “आस्मानी नुस्खा” समझने लगे.

वो दुसरी कौमोंकी तरह अपने कौमी मसाईल और मआशी (रोजगार) के मसाईल पर लंगामें जडे करे और खेवान करे के लम खेरे उम्मत का किरदार अदा कर रहे है. वो सियासी उखेड पछाड की तडरीके

यवाये और दावा करे के वो एस जुदाई मिशन के लीये कोशीर्षे कर रहे है. उनके लीये जुदाने अपने पयगंबर दुनिया में लेवे थे.

दुसरी कोमे जे काम दुनियादारी के नाम पर कर रही है उसी को मुसलमान दीनदारी के नाम पर करने लगे तो ईस्की वजह से वो काम दीन का नहीं बन जयेगा. दुनियाका झायदा, दुनिया की ईज्जत और सरदारी के पीछे दौडना और अपनी ईन कोशीर्षोको अल्झाऊमें बयान करके उसको दीन का काम जहरीर करना मुसलमानों को जुदा के यहाँ कीसी ईमान का डकदार नहीं बनाता. बल्के उन्की जम्मेदारीयो में ईआझ करता है. अपनी ईस किस्मकी कोशीर्षो के ऊरीये वो दोडरे मुजरीम बन रहे है. अक दुनिया परस्तीको ईज्जियार करना. दुसरा दीनी ता'वीमातको गलत मानना पलेनाना और ईस तरह दुनिया वालों के सामने दीन की गलत गवाही देना.

दीन असलमें जुदा परस्ती और आपिरत तल्बी का नाम है. दीनदारी ये है के आदमी की ज्हुंङगी आपिरत इप्नी ज्हुंङगी बन जये. वो जून डालात में डो और जून जम्मेदारीयो में डो उन्में जुदा परस्ती और ईन्साइ के तरीके पर कायम रहे. वो लंमेशा अल्वाड को याद रभे और दुनिया में जे मामला करे ये सोच कर करे के आपिरत में उसको अपनी तमाम कारवाईयो का अल्वाड के सामने जवाब देना है. कीसी ली किस्मकी जुश प्याली डमको आपिरतमें जुदा की पकड से बचा नहीं सकती और ईस्लाम के नाम पर तकरीरी मुशायरे डमको जुदाके यहाँ पादीमे ईस्लाम का मुकाम अता नहीं कर सकते.

(अल कुरकान-१२/१८८०/३८)

### गइलत का अंजाम :-

इदीसे कुदसी में अल्वाड तआलाने इरमाया "के जमाने को बुरा न कडो" जमाना तो में हुं. तमाम मामला मेरे डाय में है और में डी रात और दीन को उलटता पलटता रेडता हुं."

ईस्का मतलब ये है के ईस दुनिया में जे कुछ डोता है कानुने जुदावंदीके मुताबिक डोता है. जुदा के कानुन के मुताबिक डालात पैदा डोते है और जुदा के डुकम के मुताबिक जमाना गरदीश करता है. औसी सुरत में जमाना

या डालात को बुरा केडना खुद लुकमे खुदावंदी को बुरा केडना है.

नादीरशाह ईरानी निहायत जलीम बादशाह था. उसने ई.स. १७३८ में दीवली पर हमला किया. दीवली पर कब्जा करने के बाद उसने अपनी फौज को लुकम दीया के जे ली भीले उसको कत्ल करदो. ईस कत्ले आम में ३०,००० तीस हजार लोग मारे गये. उसके बाद उसने शहरको लुंटेने का लुकम दीया. २६, मे, १७३८ ई.स. को जब वो दीवली से वापस लुआ तो उसके साथ लुंटे का जे माल था उसकी किंमत ३० करोड रुपिये थी सोना-चांदी और जवाहिरात इसके अलावा थे. शाहजहां का बनवाया हुआ तपते ताउस ली ईसी मौके पर वो अपने साथ ईरान ले गया.

कहा जाता है के जब दीवली वालों पर ये मुसीबत और तबाही आणी तो कुछ लोग मिर्जा मजदर जने जनां (२.अ.) के पास गये और कहा के आप अक्लाह से दुआ करे के वो नादीरशाह के ईस अजाब से नज्मत दे. मिर्जा साहबने जवाब दीया "शामते आमावेमा सुरते नादीर गिरइत"

कीसी कौममें जब ईमान और अमल में कमजोरी पैदा हो जाती है तो उसमें अज्वाकी जगह पैदा हो जाता है. आपस में ईज्जतवाक पैदा हो जाता है और अपनी ईज्जतिमाई ताकत के टुकडे टुकडे हो जाते है. ईर ये कौम बे उसुल और गाफिल ईन्सानों की लीड बनकर रह जाते है. ये तमाम कमजोरीयां कौम के बीये हिमक (उधई) की तरफ है. जिस लकडीको हिमक लग जये वो जडी नहीं रह सकती. ईसी तरफ जिस कौम के अंदर कमजोरीयां पैदा हो जाती है. वो तबाही और बरबादीसे भेडकुल नहीं रह सकती.

(अल रिसावा जुन - १८८७)

### खुदा की तब्जीह :-

जब लोगों में अहलो ईन्साइ की ખेतीयां वेरान हो जाती है. ईन्साइ का तराजू जब गिनीना बन जाता है. ईतायत और इरमाबरदारी के जज्बात जब हंडे पड जाते है. ना इरमानी और सरकशीसे नेक आमाव का भाग उजड जाता है तो ईर जैर-जैरात की तो दुरकी बात, लोग सटका-जकात ली रोक लेते है. हमदई और जैर ज्वाही और रहम का

जलवा निकल जाता है और मज्जुक अेक दुसरे का पुन युसने लगती है. तो भारीतआवा भी अपनी शाने कडडारी को जलीर इरमाते है. और जैसे अंदोसे बारिश रोक लेते है. लेखलेडाती भेतीयो में भाक उडने लगती है. डरे भरे दरपत-इल-कुल और साथे तक से वीग मेडइम डो जते है. मज्जुक अनाज के अेक अेक दाने और पानी के अेक अेक कतरे को तरसने लगती है. डरीयाली भुशक सावीमें, आभाहीयां वेरानोमें तण्डील डो जती है.

डावडी में डीदुस्तानकी दो रियासतों में राजस्थान-गुजरात ईस तरड के अतरनाक डावतसे दो-यार डो रडे है. जहां गुस्ल और वुंजु करने के वीये यडों तक के पीने का पानी भी किंमत से अरीदना पडा. डजारों जनवर डलाक डो गये. कुइए लोग अपने जनवरों को छोड कर पानी की तलाश में दुसरी जगा यवे गये. जैसे ईध्रतनाक मंजर अण्जारों की डीनत बना.

ईथोपिया में जैसे अतरनाक कडत चडा के लाभों लोग भौत के मुंड में यवे गये. जे बाकी रडे वो डडीयो का डेडंगा ढांया बन गये. और भी कई तरड की जुरी जभरें युनने और पढने को भीवी. अल्लाड अपनी पनाडमें रभे - आलमी तौर पर ईभदाडकी दरभास्ते डी गई. डमदई और भेर ज्वाडी का मामला भी डिया गया और कडतसावीसे निपटने के वीये मुडीद कारनामें अंजम दीये गये. मगर कीसी दुन्या परस्ती की निगाडें कडतसावी के जुन्याही अस्बाब तक नडो पडुंयी. जब के रसुले अकरम (स.अ.व.) ने ईन अस्बाब को डंसिल करने का तरीका ये अतगाया के.

जब लोग डकात देना अंद करडे. तो अल्लाड तआवा बारिश रोक लेते है और जब नाप-तोल में कमी की जती है तो जमीनसे घास-दाना-पानी-अंद कर दीया जाता है और मज्जुक को कडत सावी में मुडतवा कर दीया जाता है.

शरीअत के अडकाम पर अमल करने से आगिरतके डायदों के साथ दुनियाका भी डायदा है और दुन्यवी आडतों और अलाओं से डडुअत डोती है.

(मआरिकुल कुआन-४/१५)

### पाँस सारुम सारुमाल :-

डुजुर (स.अ.व.) ने ईशाद्वि इरमाया कौन शप्स ले जे मुजसे ईन पांच बातोंको डसिल करके उस पर अमल करे. या कीसी जैसे शप्स को बताये जे ईस पर अमल करे. डुजरत अबु डुरैरड (रही.) ने इरमाया में डाल्जुर डुं. तो सरकारने मेरा डाय पकडा और अक अक डंगली पर गीनना शुड कीया.

- (१) अल्लाड की डराम की डुई चीजों से बयो. तुम बडे ईबादत गुजर बन जाओगे.
- (२) अल्लाडतआला ने तुम्हारे लीये जे रोजी तकसीम करदी है. उस पर रजामंदी के साथ कनाअत (संतोष) करो. तुम तमाम लोगों से बे नियाज हो जाओगे.
- (३) अपने पडोशी के साथ अडसान करो तुम कामिल ईमानवाले हो जाओगे.
- (४) लोगों के लीये ईस चीज को पसंद करो जइस्को तुम अपने लीये पसंद करते हो. तुम कामिल मुसलमान हो जाओगे.
- (५) बडोत जयादा डसा न करो क्युं के जयादा डंसी दील को मुर्दा बना देती है. (तिर्माजी)

### शयतान के पंहरु दुश्मन :-

ये बयान कीस डद तक सडी है ? ये अलग बात है. लेकीन डकीकत से करीब है और इयदे से भावी नही.

तंभीडुल गाइलीन में वडब बिन मुनब्बड के डवाले से नकल डिया गया है के अल्लाड तआला ने ईब्लीस को डुकुम दीया के मुडुंमड (स.अ.व.) के पास जाये और आप (स.अ.व.) जे सवाल करे उसका जवाब दे.

युनांचे शयतान बुजुर्ग शकलमें डायमें असा लेकर बारगाडे नबवी (स.अ.व.) में डाल्जुर डुवा. आप (स.अ.व.) ने पुछा तुम कौन हो ? उसने जवाब दीया में ईब्लीस डुं. डुजुर (स.अ.व.) ने सवाल कीया तुम क्युं आये हो ? उसने जवाब दीया के मुजको पुदापंद तआला ने आपकी

जिदमतमें लाजूर होने का बुकम दीया है. और इरमाया है के आप जे सवाल करे में उस्का जवाब हूं.

आप (स.अ.व.) ने उस्से पलेवा सवाल ये इरमाया के बताओ !  
हमारी उम्मतमें तुम्हारे दुश्मन कीन्हे है ?

उस्ने जवाब दीया आपकी उम्मतमें पंटरल कीस्म के लोग मेरे दुश्मन है. उन्से में आज्ज रखेता हूं. और उनपर मेरा अस नही खलता. उस्ने पंटरल दुश्मनों की गीनती ईस तरल बयान की.

- (१) मेरे पलेवे दुश्मन तो आप है.
- (२) ईन्साइ पसंद बादशाह.
- (३) वो मालदार शम्स जे अपनी दौलत पर धमंड नर्ही करता.
- (४) वो ताज्जूर जे अपने कारोबार में लुठ करेब से काम नर्ही लेता.
- (५) वो आलिम जे जुशुअ के साथ नमाज पढता है.
- (६) वो मुसलमान जे दुसरे के साथ हमदर्दी और लवाई करता है.
- (७) वो मोमिन बंदा जे दुसरो पर मडेरबान होता है दुःखीयारो के दुःख पर उस्को रलम आता है.
- (८) वो गुनाहगार जे तौबा करने के बाद तौबा पर कायम रखेता है. ईर गुनाह नर्ही करता.
- (९) वो परलेजगार जे हराम से बयता है.
- (१०) वो मोमिन बंदा जे पाक साइ रखेता है.
- (११) वो मोमिन बंदा जे जुब जुब सटका करता है.
- (१२) वो मुसलमान जे उस्के अप्लाक अखे छोते है कीसी का दीव नर्ही दुःखाता.
- (१३) वो मुसलमान जे दुसरोको शायदा पलुंयाता है याडे माल से या ईल्म और हिकमत से या सीकरीश से (मतलबके दुसरोके काम आता है)
- (१४) डाइजे कुअिन जे बराबर तिलावत करता रखेता है.
- (१५) वो शम्स जे रातमें जब दुनिया गडैरी नींद सो जाती है तो वो तलबबुद की नमाज पढता है और अपने रबसे मुनाज्जत में मशगुल रखेता है.

ईबलीस ने ये पंटरड दुश्मन गीनाये है ईस्से मालुम होता है के अल्लाह के छन नेक बंदो में ये बातें पाई जाती है उनपर शयतान का ओर नहीं चलता.

अगर ये सिद्धांत हमारे अंदर पैदा हो जाये तो ईसाइ, बिगाड, लडाईजघडे, डसइ, अदावत, गीबत, युगली, लुठ और दगाबाजी वगैरा सब बिमारीयां अत्म हो जाये. और ऐसा पाकीजा मुआशरा पुबुद में आ जाये के शयतान का कलेज इट जाये. और ईस तरड डाय मसलता रहे जाये के लैसे शिकारी का शिकार जल में इसने के बाद निकल जाये.

(तंभीबुल गाइलीन)

### डोताही का अंजाम :-

डरत भ्वाज निजामुद्दीन मडबुज ईलाही (र.अ.) ने ईशाद इरमाया के लाडोरमें ओक वार्डज अरखा वाअज केडने वाले थे और उनके वाअजमें आशर ली था. उनकी मन्जलीरा में बडोत से लोग अपने गुनाहोंसे तोबा करते थे.

वो वार्डज सालब ओक भरतबा डरत करने गये जब वापस आये तो वो तासीर उनके वाअज से जाती रही. लोगों ने सबब पुछा तो बताया के रास्ते में मेरी कई नमाजें कजा हो गई थी. ये सब उसीकी नडुसत है.

(इवार्डहुल कुआद-३३८)(मजाडिडल उलुम-७/२०००/३५)

### रात की तन्हाईयां :-

लोगों से मेलजेल की वजह से दीव पर ओक किस्म का मैल यढ जाता है ओल जुल्मत छा जाती है और आ'माल की नुरानीयत जाती रहती है और अल्लाहतआला के तअल्लुक में कभी आ जाती है. ईस वीये रोजाना थोडा वक्त तन्हाई के वीये तय करलेना याहीये ताके ईस मैल को दूर करके अल्लाह तआलासे निरबत मन्जुत करना आसान हो सके...ईस्के वीये रातकी तन्हाई का वक्त जयादा मुनासिब है. जास कर आभरीरात का वक्त. ये वक्त दूआ के कुबुल होने का है और पुदा की रहमत नाजीव होने काभी. ईस वीये अल्लुल्लाह ईस वक्त जास तौर पर अपनेको तैयार कर लेते है और अपनी दूआओं और आज्जीसे ईस वक्तसे

शायदा उठाते है. "कुछ हाथ नही आता बे आले सदरगाडी"  
(अल कुरकान-१/४२-२००३)

### नमाजे ईस्तिस्काअ :-

बारिश का मौसम गुजर जाता है और बारिश नहीं हो रही है. ये एक बेहद संगीन सुरतेहाल है. पानी हमारी ज़रतोंमें सबसे अहम ज़रत है. खंडगीकी तमाम ज़रतें पानी से वाबास्ता है. ईस वकत मुल्कमें अकसर डिस्सोमें बारिश न होने या कम होने की वजह से कलत (दुष्काण) और सुभेकी सुरतेहाल पैदा हो गई है. तमाम लोग सप्त परेशान है.

ये सुरते हाल जुदा का अजाब नही है ये जुदा की तम्बीह है. तम्बीह ईस वीये आती है ताके ईन्सान दोबारा अल्वाह की तरफ़ इन्तुअ हो लोग दो बारा अपनी खंडगीको दूरस्त करे. वो सरकशी की खंडगीको छोड कर ईताअत की खंडगी ईप्तिथार करे.

ईस तरहके सुभे और कलत के वीये ईस्लाम की तालीम ये है के लोग बडी तअदाहमें अपने घरोंसे निकल कर बाहर जमा हो और दो रकात नमाज पढकर बारिशके वीये दूआ करे. ईस तरह की नमाज को शरीअतमें "ईस्तिस्काअ" की नमाज कहा गया है. अब आपरी वकत आ गया है के मुसलमान मुल्क के मुप्तवीक़ मुकामात पर जमा होकर ईस्तिस्काअ की नमाज पढे. ताके अल्वाह की रदमत मुतयननरेह हो. अल्वाह तगावा हमारे उपर बारिश भेजे और हमारी जमीन को सेराज इरमाये.

उदीसकी किताबोंमें जैसा के सही जुआरी शरीक़में आया है के अरबमें सुभा पडा उस वकत रसुले अकरम (स.अ.व.) ने दो रकात सलातुल ईस्तिस्काअ पढ कर दूआ इरमाई, नमाजरो पैदले आस्मान पर बाहल का कोई निशान नही था. मगर नमाज के बाद आस्मानमें बाहल आ गये और ईन्नी बारिश जुई के लोग सेराज हो गये.

तारीफ़के दौरमें अहले-ईस्लाम ईस्तिस्काअ की नमाजे पढते रहे. वाकीआत बताते है के जबनी ईस्तिस्काअ की नमाज पढी गई उसके बाद बारिशका सिलसीला शुइ हो गया. ये नमाज अक मुसल्लमा ईबाहत है और ये अक ऐसी ईबाहत है जस्का अजर इरी तौर पर बारिशकी

अरुनमें ईररी दुनियामें थुउ लो जाता है.

तारीअमें अडे अज्जब वाकीआत नकल किये गये है. (अल कामील ही- त्तारीअ) में एब्ने असीरने अक वाकेआ लीजा है. जे बख्त एब्जत आमोज है.

उन्दुलुस के सुलतान अब्दुर्रहमान के जमानेमें वहां कलत पडा. पानी की कमी की वजह से लोग बेहद परेशान हो गये. उसके बाहें लोग अपने घरोंसे नीकले ताके मैदानमें जमा होकर ईस्तिस्काअ की नमाज अदा करे उस वकत उन्दुलुसमें अक बुजुर्ग आलिम रेलते थे. ज्जुका नाम काज्ज मुन्ज्जर बीन सईद अलबलुती (वहात-उपप लीजररी) था. सुलतानने अपने आदमीको काज्ज मुन्ज्जरके पास भेजा और कहेलवाया के काज्ज मुन्ज्जरबी मैदानमें आ कर लोगों के साथ ईस्तिस्काअ की नमाज पढे. काज्ज मुन्ज्जरने सुलतानके आदमी से कहा के सुलतानने मेरे पास ये पयगाम भेजा है और सुलतान खुद क्या कर रहे है ? आदमीने कहा मैने सुलतानको आज से जयादा कभी अल्लाह से डरने-वाला नहीं देजा. सुलतानने शाही कपडे उतार कर मामुली कपडा पहने लीया है और ताप्तसे उतर कर जमीनपर सिजदे में गीर पडे है और रोकर यु हुआ कर रहे है के अय अल्लाह ! मेरी पेशानी तेरे हाथमें है क्या तुं मेरे गुनाहोंकी वजहसे आम लोगों को सजा देगा ? सुलतानके आदमीने जब ये जबर बताई तो काज्ज मुन्ज्जरने कहा अय शप्स. बारिशके साथ वापस जा क्युं के अल्लाह तआलाने हमारे लीये बारिश का लुकम दे दीया है. जब दुनिया का बादशाह आज्जली करता है तो आस्मान का बादशाह जरूर रलम करमाता है.

ईस्तिस्काअ की नमाज बेशक अक क्वीद (कुंज्ज) है जे अल्लाह और रसुल (स.अ.व.) ने हमें अता करमाई है.

ईस्में कोई शक नहीं के आज मुल्क में अडे येमाने पर सुभे के डालात पैदा हो गये है. इस लीये बख्त से दईमंद अल्लाह के बंदे अपनी ईन्हीरादी ईबादतोंमें बारिश के लीये हुआ कर रहे होंगे. मगर जब मुसीबत ईज्जतिमाई हो उस वकत ईज्जतिमाई हुआ की जरूरत होती है. अब वकत आ गया है के मुसलमान मुल्कमें जगा जगा जमा होकर ईस्तिस्काअ की नमाज पढे और ईज्जतिमाई तौर पर बारिश के लीये हुआ करे. अगर

बड़े पैमाने पर ऐसा किया जये तो यकीनन बारिश होगी और सुभी  
जमीन सेराब हो जयेगी. (अब रिसाला - ८/२००२/२)

### नमाज में मस्जुन किराअत :-

इजरत मौवाना हुसैन अलमद (२.अ.) को कर्हीं जुम्आके दीन नमाजे  
इजरत पढाने का ईतेइकड़ होता तो आप सुरअे अलीइ वाम मीम सिजद  
और सुरअे दहर तिलावत इरमाते और इरमाते के डिंदुस्तान बरकी  
मस्जुदों के ईमामों ने ईस सुन्नतको छोड डी नर्हीं दीया बल्के लुवा दीया  
है. मै ईस वजह से पढता हुं के मस्जुदों के ईमाम उस्की तरइ तवजुब  
करे. रमजान शरीइमें नमाजे वित्रमे सुरअे आ'वा, सुरअे काकिइन और  
सुरअे ईज्वास अकसर तिलावत इरमाते और जुम्आ की नमाज में सुरअे  
आ'वा और सुरअे गसिया की तिलावत का मामुल था.

(निदाअे शाडी-३/१९८३/३०)

### नमाजकी जुबीयां :-

इदीस में है के नमाजी जुदासे सरगोशी करता है. और हरभास्त पेश  
करता है.

ये बी इदीस है की जब नमाजी नमाज पढता है तो इरिशते उस पर  
गुनाह वादते है. और इकुअ-सिजदे में वो गीर पडते है.

और इदीस में है के सिजदे में नमाजी जुदा के पैरों पडता हैं. काअेदा  
में जुदा के सामने दो आंनुं बेठता है. और अतखियात पढता है. ये  
सलाम क्या है? रसुलुल्लाह (स.अ.व.) की शबे मेअराज में सलाम की  
यादगार है. ओधर से **السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ** आया. तो  
हुजुर (स.अ.व.) उस वकत बी उम्मत को नही लुवे और इरमाया

إِنَّمَا جَاءَ بِكُمْ مِنْ رَبِّي وَأَنَا وَاللَّهُ وَالْمَلَائِكَةُ بِكُمْ وَأَنَا وَاللَّهُ وَالْمَلَائِكَةُ بِكُمْ

नभातात (इरपत) सिजदे में है. थोपायें (जानवर) इकुअ में है.  
और आदमी कियाम में है. ये तलकीक शेप अकबर की है. नमाज में ये  
तमाम सुरते जमा हो गई है.

(मल्लुजाते मुइदीसे कश्मीरी (२.अ.) पेज-७८)

### तयदीले सरदान :-

नमाज में तयदीले सरदान की ताकीद की वजह से ये इरदद नाकी

और कुरतीलापन और संजुहगी का डाल तो रूकुअ-सिजद से मालुम होता है. क्रियाम के अंदर मालुम नही होता.

यानी अगर कीसीने क्रियाम लंबा भी किया और रूकुअ-सिजद लव्ही लव्ही किया तो वो अच्छा नही है. बल्के मुर्ग की तरह ठोंगे मारने जैसा मालुम होगा के दरबारे भुदावंदी की कुछ वकअत नही.

और अगर क्रियाम कम भी किया और रूकुअ-सिजद में कमी नही करेगा तो वो वकार और सुकुन के भिलाक मालुम न होगा.

जैसा कोई कीसी दुन्यवी दरबार में जाये और सुकुन और वकार के साथ याहे तीन-चार मिनट ही भडा रहे. और दूसरा कोई दो घंटा भी वहां गुजरे मगर बेयेन रेडकर और भिलाके वकार डरकतों के साथ.

ईसवीये शरीअत में रूकुअ-सिजद के अंदर लव्द बाजी करने पर सभ्त वईद आयी है.

नमाज में तअदीले अरकान न करने पर जस कदर वईद आयी है. क्रियाम के बारे में नही है. बल्के जिस्में कमीऔर ज्यादती हुई है. यहां तक के सफर में हुजुर (स.अ.व.) ने सुरअे इलक और सुरअे नास, सुभड की नमाज में पही है. (मल्कुजाते मुहदीसे कश्मीरी (र.अ.) ८०)

### ईस्तिभारह :-

उजरत मौवाना थानवी (र.अ.) से कीसीने ईस्तिभार का तरीका पुछा तो इरमाया - सलातुल ईस्तिभारल यानी दो रकत नइल पढकर सलाम डेर कर ईस्तिभारल की दुआ पढे. डीर दील की तरक रूजुअ करे सोने की (और ज्वाब देअने की) जरूरत नही और अेक मरतबा भी काड़ी है. उदीस में तो अेक ही मरतबा आया है. अगर कीसी बात की तरक पेडले से ध्यान लगा हुआ हो तो उसको निकालदे. जब तभीयत तकसु (अेक तरक) हो जाये तब ईस्तिभारल करे. और थुं अर्ज करे अय अल्लाह ! जे मेरे वीये बेडतर हो वो हो जाये और दुआ उर्दू में मागनाभी जाईज है. लेकीन हुजुर (स.अ.व.) के अताये हुअे अल्लाज बेडतर है.

ईस्तिभारल होता है तरकुद (संकोय) के मौके पर यानी जब नका और मस्वेडत दोनों तरक बराबर हो और जब अेक तरकसे जरूरत तय हो तो ईस्तिभारल के क्या माअना ? (अल कुरकान-१२/१८८०/२४)

## સબસે ઝયાદા તાકતવર ચીઝ :-

હઝરત અનસ (રદી.) સે રિવાયત હે કે નબીયે કરીમ (સ.અ.વ.) ને ઈશદિ ફરમાયા કે જબ અલ્લાહ તઆલાને જમીન કો પૈદા ફરમાયા તો હીલને લગી ચુનાંચે અલ્લાહતઆલાને પહાડ પૈદા ફરમાયે ઓર જમીન કા ડિલના બંદ હો ગયા તો ફરિશ્તોંકો પહાડોંકી પૈદાઈશા સે તઅબરવુજા હુવા કે અલ્લાહ તઆલાને બડી તાકતવર ચીઝ બનાઈ હે. ફરિશ્તોંને સવાલ ક્રિયા અય પરંવર દીંગારે આલમ ! આપકી મખ્લુકમેં પહાડોંસે ઝયાદા કોઈ તાકતવર ચીઝ હે ? અલ્લાહ તઆલાને ઈશદિ ફરમાયા કે હા! પહાડોં સે ઝયાદા તાકતવર લોહા હે. ફરિશ્તોંને કહા અય અલ્લાહ ! લોહેસે ઝયાદા કોઈ તાકતવર ચીઝ હે ? ફરમાયા હા ! આગ હે ફીર સવાલ ક્રિયા ગયા કે આગ સે ભી ઝયાદા તાકતવર કોઈ ચીઝ હે ? ફરમાયા હા ! પાની હે. ફીર સવાલ ક્રિયા કે પાની સે ઝયાદા તાકતવર કોઈ ચીઝ હે ? ફરમાયા હા હવા પાની સં ઝયાદા તાકતવર હે. ફરિશ્તોંને ફીર સવાલ ક્રિયા હવા સે ઝયાદા તાકતવર કોઈ ચીઝ હે ? અલ્લાહ તઆલાને ઈશદિ ફરમાયા હા ! ઈબ્ને આદમ ! જો અપને દાયે હાથ સે સદકા કરે ઓર બાયે હાથસે છુપાલે કે દાહને હાથને કયા સદકા ક્રિયા ? વો “સદકા” હવા સે ઓર તમામ ચીઝોં સે ઝયાદા તાકતવર હે.

(તફસીર ઈબ્ને કસીર સુરઅબકરહ-૨૭૧)

## કુર્આન મજીદ સે લગાવ :-

ઈન્સાન કી સબસે બડી સઆદત ઓર ખુશનસીબી અપની તાકત કે મુતાબિક કુર્આનમજીદમેં મશગુલ હોના ઓર ઉસ્કો હાસિલ કરના હે ઓર સબસે બડી બદ નસીબી કુર્આન મજીદ કો છોડ દેના હે. હર મુસલમાન પર ફર્જ એન ઓર જરૂરી હે કે કુર્આન મજીદ કો અલ્ફાઝ કી સેહત કે સાથ પઢે ઓર અપની ઔલાદ કો પઢાને કી કોશીષ કરે ઓર જીસ કદર મુશ્કીન હો મઆની ઓર અહકામકો સમજને ઓર ઉસ પર અમલ કરને કી ફિકરમેં લગા રહે. ઓર ઉસ્કો ઉમ્મ ભરકા વઝીફા બનાયે ઓર અપને હોંસલે ઓર હિમ્મત કે મુતાબિક ઉસ્કા જો હિસ્સા ભી નસીબ હો જાયે ઉસ્કો ઈસ જહાં કી સબસે બડી નેઅમત સમજે.

(મ.કુ. ૧/૭)

## कुआन मज्जह की तिलावत की नेअमत :-

उद्दीस में ले के जन्नत में अल्वाहतआला रोजाना दो बार- सुब्ह को और असर के वक्त कुआन मज्जह की तिलावत इरमायेगें और मुकरबीन सुनेंगे, और जन्नत में तिलावते कुआन मज्जह रहेगी.

सहीये ले के कुआन मज्जह की तिलावत की नेअमत ईन्सान को ही गँई है. जन्नात और शयतान ठिस्की तिलावत पर कुदरत नही रहते. बल्के इरिशतों को भी ये नेअमत नसीब नही हुई. और वो ईस आरजु में रहेते ले के कोई ईन्सान तिलावत करे और वो सुने.

डा. मोमिनों को अवलत्ता ये नेअमत हासिल हो जाती है और तिलावते कुआन मज्जह पर कादीर हो जाते है.

(ईल्मुल्किफ़-मौलाना अ.शकुर-२/१७१ तफ़सीरे ईल्कान)

शायद इरिशतों में उजरत जिब्रईल (अ.ल.) को अवलग किया गया है. ठिन्के बारे में उद्दीस में वारीद ले के उर रमजान में नबीये अकरम (स.अ.व.) कुआन मज्जह का दौर किया करते थे. (इत्तुलबारी)

इरीशते कुआन मज्जह नही पढते. बल्के अजकार, अवराद, और ईस्तिग़्फ़ार वगेरह में रहेते है. जैसा *سُبْحَانَ مَا عَبَدْنَاكَ حَقَّ عِبَادَتِكَ* और *سُبْحَانَ مَا عَرَفْنَاكَ حَقَّ مَعْرِفَتِكَ* कोई कहेता है.

*سُبْحَانَ الْآبِدِيِّ الْآبِيدِ - سُبْحَانَ اللَّهِ الرَّؤُوفِ الرَّحِيمِ*

*سُبْحَانَ الْقُرْدِ الصَّمَدِ - سُبْحَانَ الَّذِي لَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ*

रकुल मुडतार में नकल किया है के उजरत ईमाम अबु उनीइल (२.अ.) तरावीह के बाद ईन्को पढा करते थे.

(भक्कुजाने मुडदीसे कश्मीरी (२.अ.)-७८)

## गइलत की निंद :-

कुदरते जुदावंदी की बे शुमार आयतों में अक अज्जब नेअमत निंद और सोना है. अल्वाहतआला का ईशाद है "उमने रात को सोने, आराम करने और थकन और सुस्ती को दूर करने के लीये बनाया है. याद रहे सोने का तअल्लुक सिई हुनिया से है. जन्नत और जजन्नम में सोना नही होगा.

दीन व डिकमतमें निंद के बहोत से इशारे बताये गये है. निंद की

वज्रसे बदनकी थकन हिमाग की थकन दूर होकर युस्ती तरो ताजगी बदन और हिमागमें हो जाती है. रात को पांच-छे घंटे बरस सोना चालीये. मगर बहोत जयादा सोना और हीन यढे तक प्वाबे परगोश में पडे रेडना दून्यची अतिबार से भी नुकशान करनेवाला है और हीन और लिंकमत के अतिबार से भी. राततो अल्वाड तआवाने सोने के लीये ही बनाई है. मगर छे घंटे के बजये पांच घंटे सोकर अेक घंटा इजर से पेडवे जल्दी उठकर जिंक, नमाज और वजाईइमें मशगुल हो जना पुदा को बेहद पसंद है. “कुछ डाय नहीं आता बे आले सदरगाली”

युनांचे कुअनिमज्जद में ईशाई है (जन्नती लोग) रात को बहोत कम सोते थे उनके पेडलुं उनकी प्वाब गालोंसे अलगरेडते थे. ईसी वज्र से दुजुर (स.अ.व.) रात को ईस कदर लंबी नमाजे पढा करते थे के पांच मुबारक सुब जते. अेक उदीस में है के आप (स.अ.व.) सिई रात के अव्वल डिस्सा में सोते और आपरी रात में ईबाहत करते.

### (बुपारी - मुस्लिम)

रातमें उठने के लीये आप (स.अ.व.) ने हीन को कयबुलद करने की तरफ तवज्रुड दीलाई. ईसी लीये ईशां के बाद इरेन सो जने की ताकई भी उदीसमें आयी है.

मगर आज ईन तमाम इजीलतों के बावुज्जद समाजमें रात को देर तक जगना, दोस्तों की मेडकीलों और कारोबार की उल्जनों में जगना अेक मामुली और इेशन बन गया है. बहोत से बडे शहरोमें रात को जगने और कारोबारमें मशगुल रेडने का ऐसा माहोल हो गया है के आधी रात तक जगना मामुली चीज बन गया है. ईस लीये ऐसे माहोल में अकसर लोगों की सुब्ज ८-०० बजे होती है. तडज्जुद, नमाजे इजर और सुब्ज का सोडाना वकत उनके लीये अेक प्वाब बन जाता है.

पुदाकी ईस दुनियामें डर यरीन्दे और परीन्दे और जनवर रातको जल्दी सोते और सुब्जको जल्दी उठ कर पुदा की तस्बीह में मशगुल हो जते है. आज परीन्दे पुद सुब्ज सवेरे उठ जते है बल्के ईन्सानों कोभी अपनी बुवंद आवाजसे जगाने की कोशीष करते है. जैसा के मुर्ग - युनांचे उदीसमें है के मुर्गको बुरा मत कडो क्युंके वो नमाज के लीये बेदार

करता है.

(अबु दावुद)

मगर ई-सानकी बट किस्मती के वो सुब्ब की बरकतों बदन की युस्ती और भुदा के जिक् डिक्से मेल्डूम लोकर अपन अमल से शयतान की दमवत देता है के वो रोज उसके कानमें पेशाब कर जया करे. गोया सुब्ब को देरसे उठनेवालों का खेडरा खेडरा नहीं शयतान मरदुदका पेशाब जाना बन जाता है. क्युं के दीन निकलने के बाद सोकर उठने वालों के बारेमें आप (स.अ.व.) ने इरमाया के ईन्के कानोंमें शयतान पेशाब कर देता है.

(बुभारी शरीफ)

मगर क्या करे ? उसी वकत जमकर निंद आती है. उसी वकत निंदकी देवी बडी मोडबतसे अपनी आगोशमें लेती है. ये भी शयतान की अेक खाल है. के ई-सानको लोरी देकर थपथपा कर सुवाता रेडता है. और जब देर से उठता है तो पुरे दीन मुर्दा दीव, सुस्त और काडील होने की डालतमें सुब्ब करता है. ये सुस्ती और शयतान के पेशाब की नजसत नडाने से दूर नहीं छोती न दौड लगाने से. सुब्बको देर तक सोनेकी वज्ज से नमाजे इजर कजा हो जाती है और सुब्ब के वकत के काममें बरकत की जे द्रुआ आप (स.अ.व.) ने दी है उससे भी मेल्डूम हो जाता है.

औरते नाजुक बदन होने के बावुनुद अल्डमुद विव्वाड सुब्ब सवेरे इजरसे पडेले उठ जाती है. ईसी वीये वो मर्दों के मुकाबलेमें जयादा युस्त रेडती है.

सुब्ब सवेरे उठने के वीये रात को जल्दी सोना खालीये और ये निय्यत करना खालीये के मै सुब्ब सवेरे उठुंगा. भुदासे द्रुआ मांगकर सोना खालीये उठने के बाद द्रुआ पढकर पेलले साथ धोना खालीये. झीर ईस्तिन्जसे इरिग होने के बाद पुजु करके हो सके तो तडज्जुद वरना इजर की नमाज पढनी खालीये. अगर देरसे उठे तो पेलले इजरकी कजा पढनी खालीये.

अल्वाड तआला डम सबको ईशां के बाद झीरन सोने और सुब्बको तडज्जुद के वकत उठनेकी तौफीक अता इरमाये.

(मजाहिरे उलुम-६/२०००/३३)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

## गुरानी वकत :-

उजरत मौलाना धानवी (र.अ.) इरमाते है के मुझे सुब्द की नमाज के बाद जाते करनेवालों पर गुस्सा आता है. कैसा जे कदर है के जैसे गुरानी वकत को बरबाद करता है. सुब्द की नमाज के बाद से तुलुअे आक़ताब तक का वकत जिक्रुल्लाह के लीये अज्जब तासीर रभता है. उस्को बरबाद न करना चाडीये. (निदाअे शाडी ८/१८८८/३८)

## (७) थंड वसीयतें

### अल्वाह तआलाकी वसीयत :-

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِرَأْسَائِهِ إِحْسَانًا (१६-२१-ب)

और हमने ईन्सानो को अपने वालेंदैन के साथ नेक सुलुक करने का लुकम दीया.

ईससे वालेंदैन के साथे नेक सुलुक करने की किन्ती अलमियत साबित लुई. अेक दुसरी आयत में तो अल्वाह तआलाने अपनी ईबादत के बाद मा-बाप के साथ अेहसान और लुस्ने सुलुक का लुकम इरमाया है. युनांचे ईशाई है.

और तेरे रबने लुकम कर दीया है के उस्के सिवा कीसी और की ईबादत मत करों और तुम (अपने) मा-बाप के साथ अख्छा सुलुक किया करो अगर तेरे पास उन्मेसे अेक या दोनों जुढापे को पलुंय जये तो ली उन्को "लु" ली मत केहना और उन्को न जीडकना और उन्से गुब अदब के साथ बात करना.

ईसी लीये नबीये करीम (स.अ.व.) ने मा-बाप की नाइरमानी को कबीरा गुनाहों मे गडेसे गडा गुनाह शुमार इरमाया है.

### नबीये करीम (स.अ.व.) की वसीयत :-

ईरबाज् बीन सारयल (रदी.) से रिवायत है कि उन्होंने इरमाया के अेक दीन रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने हमें नमाज पढाई उस्के बाद अपना खेरा गुबारक हमारी तरफ़ कीया और हमें गडा असार करनेवादा वाअज़

इरमाया. जससे आंभे भेल पडी और दीव वरज ठे.

अेक शप्सने अर्ज कीया या रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ये वाअज तो उमसे इभसत डोनेवावे का मालुम डोता डे. ईसी वीये डमें आप वसीयत इरमाईये. ईस पर रसुले अकरम (स.अ.व.) ने इरमाया. मै तुम्हें अल्लाहसे डरने और अमीर की बातों को सुनने और ईताअत की वसीयत करता डूं अगर ये वो अमीर डबशी गुलाम डी क्युं न डो.

ईश वीये के तुममें से अेक शप्स गेरे बाह डूँडा रहेगा वो नरुदी डी डखीत से ईफ्तिलाइ डेभेगा. तो तुम मेरी और डिदायत वावे डुल्लाअे राशेदीन की सुन्नत पर कायम रहेना उसे मजबुती से पकडना. और डुरी डुव्वत के साथ उससे वीमडे रेडना और दीनमें नई पैदा की गई बातों से डूर रेडना. क्युं के दीन में डर नई बात डिदअत डे और डर डिदअत गुमराडी डे. (मिशकत-१/३०)

ईस वसीयते मुबारकर से डुअुर (स.अ.व.) की सुन्नत और डुल्लाअे राशेदीन की सुन्नतकी ईत्तिआअकी कीस कहर अडमियत मालुम डोती डे.

डअरत अबु अैथुब (रदी.) से रिवायत डे के अेक शप्स नबीये करीम (स.अ.व.) की डिदमत में डाअर डुवा और अर्ज कीया या रसुलुल्लाह (स.अ.व.) मुजको कोई मुफ्तसर नसीडत इरमाईये. आप (स.अ.व.) ने इरमाया के जब तुम नमाज के वीये पडे डो तो उस शप्सकी तरड नमाज पढो और अैसी कोई बात न कडो के कल के दीन उवर करना पडे और उस वीजसे डिलकुल ना उम्मीद डो अओ अे डूसरों के डार्थोंमें डे.

### डअरत अबु डक (रदी.) की नसीहत :-

अेक रोज डुत्बामें ईशाद इरमाया वो डसीन लोग कडं गये ? अंको अपनी नवानी और डुडसुरती पर नाज था. वो बाहशाड कडं गये ? अंकोंने शडेर आबाह कीये थे और कील्वे बनाये थे वो डडलडूर कडं गये ? अे मयदाने नंगमें डंमेशा गाडिड रडल करते थे अमानाने उंको डवाक कर दीया और वो कअ की अंधेरीयोमें पडे डुअे डे.

### हजरत उमर (रही.) की नसीहत :-

आपने अपने तमाम डाकीमों को ये इरमान जरी किया था के तुम्हारे कामोंमें सबसे ज्यादा खेदतीमाम के काबील मेरे नजदीक नमाज है. जोरने नमाज की डिफ़ाजत की उसने अपना दीन मेडकुज कर लीया और जोरने नमाज को बरबाद किया तो दुसरी चीजोंको और ज्यादा बरबाद करेगा.

इरमाया हुआ आस्मान जमीन के दरम्यान डूकी रेहती है. यहां तक के डुजुर (स.अ.व.) पर दुइद पढा जाये.

इरमाया करते थे के सबसे अक़ल ईबादत ये है के इराईज को अदा करे और मना की डुई बातोंसे बचे और अपनी निखत खुदाके साथ दुइस्त रहे.

### हजरत उस्मानगनी (रही.) की नसीहत :-

जुब समजलो के अल्लाहतआवाने तुम लोगोंको दुनिया ईस लीये दी है के तुम उसके जरीये आभिरत का सामान करो ईस लीये नही दी के तुम उसके डी डोकर रेड जाओ. बेशक दुनिया इानी है और आभिरत इंमेशा रेहनेवाली है. जबरदार ! बांकी को इानी पर तरजुड (इजीलत) दो क्युंके दुनियाका साथ छुटजाने वाला है और आभिरकार अल्लाडकी तरफ डी जना है. अस ! अल्लाहतआवासे उरो. अल्लाडका उर उरकी पकउसे बचने के लीये ढाल का काम करता है और अल्लाडसे करीब करता है.

लोगों ! अल्लाहतआवा बडा गयरतमंड है. उससे डोशियार रहो. अपनी जमाअत का साथ न छोडो और अपनी टोलीया अलग अलग न बनाओ और अल्लाहतआवाकी वो नेअमत जे तुम पर नाजील डुई है मत लुलो. यानी जब तुम अेक दुसरे के दुश्मन थे अल्लाड तआवा ने तुम्हारे दील जेड दीये और उरकी रलमतसे तुम लार्ह लार्ह लो गये.

### हजरत अली (रही.) की नसीहत :-

आपने आभरी वसीयतमें इरमाया. अय लोगो ! अल्लाहतआवा की तौलीह पर कागम रेहना. कीसीको खूदा का शरीफ न करना और खूदर (स.अ.व.) की सुन्नत पर कागम करना. जजर में हाना का काम तुमने कर

वीथी तो छत्र बुराई तुम से दूर रहेगी. तीखीद और सुन्नत दोनों हीन के सतन से और दो रोशन चिराग से. लिहायत की राह के.

(अकवाले सलह-१/६४)

### हजरत ईमाम अबु हनीफ़ (र.अ.) की वसीयत:-

- (१) जे अपने साखबजाहे हजरत उम्माद (र.अ.) को इरमाई. अय मेरे प्यारे बेटे! अल्लाह तुजे लिहायत पर साबित कदम रभे और मेरे के कागों में मेरी गदद करमाये, मैं तुजे गंद गरीबमें करना खूं अगर तुमने उन्की याद रभा और उन पर पाबंदीसे अमल करते रहे तो मुजे उम्मीद है के ईन्शाअल्लाह तुम दुनिया आगिरतमें सआदतमंद रहोगे.
- (२) तकवा ईज्जियार करो. (यानी अल्लाहतआलासे डरते हुआ) और अपने आजामे बदनको गुनाहोंसे मेहकुल रभो और अल्लाहतआला के अहकाम पर पुरी तरह कायम रहो और उरमें पालीस अल्लाहतआलाकी ईबादत मकसुद हो.
- (३) जब तक हीनी या हुन्यवी हाजत नहो कीसीके साथ मेलजुल न रभना.
- (४) दुसरोंके साथ ईन्साफ़ करना और बगैर मजबुरीके अपने वीथे ईन्साफ़ का प्वालीशमंद मत होना. मतलब ये है के दुसरों के दुकुल तो अपनी तरफ़से पुरे अदा करो और अपना जूस पर हक है और वो बे ईन्साफ़ी कर रहा हो और हक देनेसे ईन्कार करता हो तो उरकी तरफ़से ईन्साफ़ मीलने की इिकरमें मत लगना. अपना हक छोडकर अहकको इारिग करवेना. हा अगर कोई मजबुरी होतो दुसरी बात है.
- (५) कीसी मुसलमान और ज़म्मीसे दुश्मनी मत करना.
- (६) अल्लाहतआलाने तुमको जे माल दीया है और तुमको जे (हुन्यवी) मरतबा अता कीया है उस पर कनाअत (संतोष) कर लेना.
- (७) जे कुछ (माल वगैरह) तुम्हारे कब्जेमें हो उरमें अच्छी तदबीर ईज्जियार करना. (यानी सोच समज कर खलना) तके लोगोंसे बे नियाज रह सको.

- (૮) લોગોંકી નઝરોંમેં અપને કો બે વઝન મત બનાના.
- (૯) કુઝુલ બાતોં ઓર કુઝુલ કામોંમેં પડને સે અપને આપકો અલગ રખના.
- (૧૦) લોગોંસે મુલાકાત કરતે વકત ખુદ પેહલે સલામ કરો ઓર બાત કરનેમેં ખુબી ઈખ્તિયાર કરો ઓર એહલે ખેર કે સાથ મોહબબત કે સાથ પેશ આવો ઓર એહલે શર (બુરે લોગોં) કી મદારાત (આવભગત કરો) ઉંન્કી દીલ દારી કરો તાકે કોઈ તકલીફ ન પહુંચાયે.
- (૧૧) અલ્લાહકા ઝિક્ર કસરત કે સાથ કરો ઓર હુઝુર (સ.અ.વ.) પર કસરત કે સાથ દુરુદ શરીફ ભેજો.
- (૧૨) સૈય્યેદુલ ઈસ્તિગફારમેં મશગુલ રહો. (યાની ઉસ્કો પઢા કરો) સૈય્યેદુલ ઈસ્તિગફાર યે હે.

અલ્લાહ હુમ્મ અન્ત રબ્બી લાઈલાહ ઈલ્લા અન્ત ખલક તની વઅના અબ્દુક વઅના અલા અહદીક વ વઅદીક મસ્તઅતું વઅઉઝુબિક મિન શર્રે મા સનઅતું વઅબુઅોલક બિનીઅમતીક અલમ્પ - વઅબુઉ બિજંબી ફગફીરલી ફઈન્નહુ લાયગફીરૂજ જુનુબ ઈલ્લા અન્ત-

(સહી બુખારી)

ઈસ્કી ફઝીલત યે હે કે જે શખ્સ શામકો ઈસે પઢ લેગા ફીર ઈસી રાતમેં ઉસે મૌત આ ગઈ તો જન્મતમેં દાખિલ હોગા ઓર જે સખ્સ ઈસે સુબહ કો પઢ લેગા ફીર ઉસ દીન મર જાયેગા તો જન્મતમેં દાખિલ હોગા.

હઝરત અબુ દરદા (ર.દી.) સે કીસીને કહા કે આપ કા ઘર જલ ગયા. ઉન્હોંને ફરમાયા નહીં જલા ઈન કાલિમાત કી વજહ સે જે મૈને હુઝુર (સ.અ.વ.) સે સુને હે. આપ (સ.અ.વ.) ને ફરમાયા જે શખ્સ ઉન્કો દીનકે શરૂમેં પઢલે તો શામ તક કોઈ મુસીબત નહીં પહોંચેગી ઓર જે શખ્સ દીન કે આગિરી દિરસોમેં ઉન્કો પઢલે સુબહ તક ઉસે કોઈ મુસીબત નહીં પહોંચેગી ઓર મેં ઈન કાલિમાતકો પઢતા હું ઓર આતર લી પઢા હે. ઈસ લીયે મેર મકાનમેં આજ નહીં લગ સકતી. વો દુઆ યે હે.

અલ્લાહુમ્મ અન્ત રબ્બી લાઈલાહ ઈલ્લા અન્ત અલૈક તવકકલતુ વ અન્ત રબ્બુલ અરશીલ અજ્જમ. માશા અલ્લાહુ કાન, વમાલમ વશઅ

लम यकुन, लाडवल वला कुवत ँल्ला भिल्लाडील अल्लीथील अल्लम. अअलमुं अन्नल्लाड अला कुल्ले शय ँन कदीर. व अन्नल्लाड कड अडात भिकुल्ले शयँन ँल्ला. अल्लाडुम्मा ँन्नी अउकुभिक भिन शरें नकसी वमीन शरें कुल्ले अ शरीन वमीन शरें कुल्ली दाब्बतीन अन्त आभीणुम भिना सियतिडा ँन्नरब्बी अला सिरातीम मुस्तकीम.

- (१३) पाबंटी के साथ रोजाना कुआन शरीक पढा करो और डुजुर (स.अ.व.) को और अपने वालेंटेन को और अपने उस्तादोंको और तमाम मुसलमानों को ँस्का सवाब पडुंयाया करो.
- (१४) जे लोग तुमसे तअल्लुक रभते है उन्के शर (जुराँ) से बयने का ँससे जयादा ओडतिमाम करो अन्ना अपने दृश्मनों के शर से बयने का ओडतिमाम करते हो. क्युंके लोगोंमे भिगाड जयादा हो गया है. जे तुम्हारे दृश्मन है वो तुम्हारे दोस्तों ही से पैदा होते है.
- (१५) अपने भेद को और माल दौलतको ओर दुन्यवी कामोंमें अपनाये डुअे ँन्तिजाम को और कीसी जगगा जनेको पोशीदा (छुपाडुआ) रभो.
- (१६) परोशीयों के साथ अर्र्छा सुलुक करो और परोशीयों से जे तकवीक पडुंये उस पर सभर करो.
- (१७) ओडले सुन्नत वल जमाअत के मस्वकको मजबुती से पकडे रडो और जडावत वालों और गुमराहों से परडेअ रभो.
- (१८) अपने तमाम कामोंमे नियत ખालीस रभो और डर डालमें डलाल ખानेकी क्किर करो.
- (१९) पांच उदीसों पर अमल करो अन्की मैं ने पांच वाખ उदीसों से जमा किया है वो पांच उदीसे ये है.
- (१) “सब आमाब का दारोमदार नियत पर है” और ँन्सान के वीये वोडी है. अस्की उस्ने नियत की. यानी सवाब और अजाब नियतों से जुडे डुअे है. अगर अमल ખालीस अल्लाडके वीये डोगा तो सवाब मीलेगा और अमल रियाकारी वाला डोगा तो अजाब का सबब डोगा.
- (२) ँन्सान के ँस्लाम की ખुबी ये है के जे खीअ (दुनिया या आभिरतमें)

उस्के लीये इयदामेंद न हो उस्को छोड दे.

(३) तुममे से कोई शप्स मोमीन न होगा जब तक अपने भाई के लीये वही चीज पसंद करे जे अपने लीये पसंद करता है.

(४) बेशक हलाल भी ज़हीर है और बेशक हराम भी ज़हीर है और दोनों के दरम्यान शुबा (शक) की चीजें है. ज़न्को बर्ख़ात से लोग नही जानते. अस ! जे शप्स शुब्हात (शकवाली चीजों) से बया उस्ने अपने दीन और आबइं को मेहकुल कर लीया और जे शप्स शुबावाली चीजोंको छोडने के बजये उस्को अपने अमल में ले आया वो हराम में पड जायेगा. जैसा के यरवाहा अपने रेवड को कीसी भेत की भाड के करीब यराये तो अन करीब जैसा होगा के भेत में उस्का रेवड यरने लगेगा. इर इरमाया ખબરदार ! हर बाहशाहने (अपने कानून बनाकर) भाड लगा दी है और अपनी रीआया (रैयत) के लीये हदबंदी कर दी है और बेशक अल्वाहकी हदबंदी वो चीजें है ज़न्को उस्ने हराम करार दीया है इर इरमाया ખબरदार ! ईन्सानके बदन का ओक टुकडा है जब वो दुर्रस्त होगा तो पुरा ज़सम (बदन) दुर्रस्त हो जायेगा और वो टुकडा बिगड जाये तो तमाम बदन बिगड जायेगा ખબरदार ! वो टुकडा हील है.

(५) कामील मुसलमान वो है ज़स्की ज़बान और हाथ से मुसलमान सलामत रहे यानी कीसीभी मुसलमानको कीसीभी तरहकी कोई तकलीफ़ उस्से न पडुंये.

(२०) तुम अपनी सेहत के ज़मानेमें मौक़ और उम्मीद के दरम्यान रहो यानी इराईज और अलक़ाम जज़लाते दुअे और गुनाहोंसे बग़ते दुअे अल्वाहतआला से उरते भी रहो के पडक न हो जाये और जे भी नेक अमल करो अल्वाहसे उस्के कुबुल होनेकी और आग़िरतमें नज़ात पाने की उम्मीदभी रभी और जब मौत आने लगे तो ईस ज़ालमें मरना के अल्वाहतआलाके साथ अरफ़ा गुमान हो (यानी म मदीना और ग़ज़ा या मक्का मदीना हो) और अग़ीरत हो के अल्वाहतआला के इर इरमाया इरमाया इरमाया, ये मौक़ और अग़ीरत कलने सलीम के साथ हो. बेशक अल्वाहतआला बर्ख़ात ज़प्शन

- वाला बाडा अखेरमाना छे. (बंदवसीयते व. भीषाना इयत्रजमा सावम) (हा.म.)  
 लक्ष्मणत रीयाग आत्मम आर्णु लनीकाल (उ.म.) ने आपने शागिर्द  
 कल्पत रीयाग आर्णु पृथुक् (उ.म.) को ये लणीयत करवात
- ❖ तुम अल्लाह से डरनेको और आगानत अदा करनेको और तगाम  
 अवाम-अवास की जैर ज्वाली लाजीम पकड लो.
  - ❖ तन्हाईमें अल्लाह से ईस तरलका तअल्लुक रणो के जैसा के  
 जलीरमें सबके सामने अल्लाहसे तअल्लुक रणते लो. भिलवत  
 और जल्वतमें ईज्वास से अल्लाहकी तरक मुतवज्जेल रलो.
  - ❖ लोगोंके हरमियान छोते लुओ अल्लाह तआला का जिक् जयादा  
 कीया करो. ताके लोग तुमसे जिक् सीपे और वो भी करने लगे.
  - ❖ नमाजों के बाद अपने लीये कुछ वक्त मुकर्रर कर लो. ज्जस्मे कुर्आनकी  
 तिलावत और अल्लाहतआला का जिक् करो.
  - ❖ दर मलीने में बंद हीन जैसे मुकर्रर कर लो. ज्जिन में रोजे रण्पा करो  
 ताके दूसरे लोग भी तुम्हारी पेरवी करें.
  - ❖ अपने नक़सकी निगरानी करो ताके वो गुनाहों और लायानी  
 (बेकार) कामों में मशगुल न लो ज्जओ और दूसरों की निगरानी करो.
  - ❖ ખताओं में लोगों का ईत्तिबाअ न करो. बल्के सली और हुर्रस्त  
 कामों में उन्की ईत्तिबाअ करे. (ईससे मुराद हुन्यवी ईन्तिजामी  
 जिमुर है)
  - ❖ जब तुम्हें मालुम लो के इलां आदमी अय्छा नली है तो उस्की  
 बुराईका तज्केरा न करो. बल्के उस्के अंदर ખुबी तलाश करो.
  - ❖ मौतको याद करो और उस्ताहों के लीये और उन सबके लीये  
 हुआओं मगफ़िरत करो. ज्जसे तुमने हीन हासिल कीया है.
  - ❖ लअनत और गावीगलोय की आदत न बनाना.
  - ❖ जब मुअज्जिन अजान दे तो मस्जिदमें हाभिल होने के लीये  
 तैयार लो ज्जओ. ताके अवाम तुमसे पेडले मस्जिदमें न पलुंय ज्जये.
  - ❖ जे कोई तुमसे कीसी चीजमें मश्वरा तलब करे तो उस्को मश्वरा  
 दो. ज्जस्मे तुमको यकीन लो के ये मश्वरा तुमको अल्लाह से करीब कर  
 देगा.

- ❖ લાલચી ઓર જુઠા ન બનના, ન એસી બાત કરના જે લોગોં કો ચકકરમેં ડાલને વાલી હો. બલકે અપની મુરૂવત (ઈન્સાનિયત) કો તમામ ઉમુરમેં મેહકુઝ રખના.
- ❖ હુંમેશા અપને દીલ કો ગની રખના ઓર તંગ દસ્તી જાહીર ન હોને દેના અગર ચે તંગ દસ્તી હો.
- ❖ તુમ હિમ્મતવાલે બનના કયું કે જીસ્કી હિમ્મત કમઝોર હો ઉસ્કા મરતબા ભી કમઝોર હોતા હૈ.
- ❖ જબ રાસ્તા ચલો તો દાયે બાયે ન દેખો. બલકે હુંમેશા નજર જમીન કી તરફ રખો.
- ❖ દુનિયા કો હકીર જાનો જે એહલે ઈલ્મ કે નજદીક હકીર હૈ. કયું કે અલ્લાહ કે નજદીક એહલે ઈલ્મ કે લીયે જે કુદુષ હૈ. વો ઈસ દુનિયાસે બેહતર હૈ.
- ❖ અપને જાતી કામ ઓર ઈન્તિઝામી ઉમુર કીસી દુસરે શખ્સકે હવાલે કરો. તાકે ઈલ્મ પર પુરી તરહ મુતવજજેહ હો સકો ઉસસે તુમહારી ઈઝઝત મેહકુઝ રહેગી.
- ❖ દીવાનોં સે બાત કરને સે પરહેઝ કરના ઓર ઉન લોગોં સે બાત ન કરના જે તલબે જાહ (મન્સબ) કે લીયે બહસ કરતે હૈ.
- ❖ જબ તુમ એસે લોગોં કે પાસ જાઓ જે તુમસે બડે હૈ તો ઉન્કે હોતે હુએ ઉસ વકત તક બેઠને વગેરહમેં બરતરી ઈખ્તિયાર મત કરના. જબતક કે વો તુમકો બરતરી ન દે.
- ❖ જબ તુમ કીસી જમાઅતમેં મૌજુદ હો તો નમાઝ પઢાનેમેં ઉન્સે આગે મત બઢના. જબ તક વો ખુદ હી તુમકો બતૌર ઈકરામ આગે ન બઢાયે.
- ❖ અવામી તફરીહગાહાં મેં મત જાના.
- ❖ મજલીસમેં ગુસ્સા કરને સે પરહેઝ કરના.
- ❖ અવામ ઓર બાઝારી લોગોંમેં જે શખ્સ તુમહારે સાથ ઝગડા કરે તુમ ઉસસે ઝઘડા ન કરના એસા કરોગે તો ઈઝઝત જાતી રહેગી.
- ❖ જે લોગ તુમસે ફિકહ હાસિલ કરનેવાલે હો ઉન્કી તરફ પુરી તવજજુહ કરના. ઉન્કો અવલાદ કી તરહ સમજના.

- ❖ अगर तुम दस साल भी बगैर पोरक और बगैर कस्बे मआश (रोजगार) के रेड जाओ तो भी एलम की तरफसे मुंड न डेरना.
- ❖ अवाम के सामने सिई एसी बारेमें बात करना. जइस्के बारे में तुमसे सवाल किया जाये. यानी बकदरे जरूरत शरई जवाब देकर आमोश डो जाओ.
- ❖ दुन्यवी मामलात और तिजरत के बारे में अवाम के सामने बात मत करना. सिवाय उन कामों के जइन्का एलमसे तअल्लुक डो. ताके ये न समज जाये के तुमको मालसे मोखुब्बत डे और उस्की रगबत डे.
- ❖ अवामके सामने न डसो.
- ❖ बाजारों में न जाओ.
- ❖ रास्तों मे मत बेठो. अगर तुमको एस्की जरूरत डो के घर के अलावा कीसी जगा बेठो तो मस्जिद में बेठ जना.
- ❖ दूकानों पर मत बेठना.
- ❖ औरतों के साथ जयादा बात न करना और उनके साथ जयादा उठ बेठ न करना. एससे दील मर जाता डे.
- ❖ जयादा डसने से परडेज करना कयुं के ये दील को मुर्दा कर देता डे.
- ❖ अपनी रकतार में सुकुन और एन्मिनान एज्जितयार करना और अपने कामों में जल्दी मत करना.
- ❖ जब तुम बातचीत करो तो चीजों पुकार जयादा न करो. आवाज बुलंद न करो.
- ❖ अपने नफ्स के वीये सुकुन एज्जितयार करो आ'जा और जवारिड को कम डरकत दो ता के लोगों के नजदीक संज्जुदगी साबित डो.
- ❖ ज्वालीशात वालों के साथ जे बिदअती अकीदों और कामोंमें मुब्तला डो उनके साथे उठ बेठ न करना. डा ! दीन की दअवत देने के वीये उनके पास जना पडे तो डरज नडी.

(तामीरे डयात - १०/८/०३)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كَلِمَةٍ

(८) सवाल-जवाब

- स. वो भास अमल कौनसा है ? जिससे अल्लाह तआला का कुर्ब (नऊदीकी) ढासिव ढोती है ?
- ज. जिंके पुढावंदी है ढदीसे कुदसी में है. "मै अपने बंदे के साथ हुं जब तक उसके ढाँठ मेरी यादमें ढीवते रेखते है." दुसरी ढदीस में है. "जे मुळको याद करता है मैं उसका ढमनशीन हुं".
- स. कीस तरख दुआ करने से कुबुल ढोती है ?
- ज. रोंते हुंमे आञ्जी और ढील लगा कर मागने से ढलाव माव जाने से और अल्लाहतआला से मायुस न ढोनेसे.
- स. वो कौन सा अमल है ? जिसकी वजहसे अल्लाहतआला रोजीमें कमी कर देता है.
- ज. नेअमती की ना शुकी करने से.
- स. वो कौन सा अमल है ? जिससे माव-ढौवत जयादा करदी जाती है ?
- ज. अल्लाहतआलाका शुक्र गुजर बनने और तकवा इम्तियार करनेसे.
- स. कीस अमल से अल्लाहतआला बंदेको दुनियामें ज्वील और कंगाल बना देते है ?
- ज. तकब्बुर और बडाई करने से और कमजोर को सताने से.
- स. कीस अमलसे ईज्जत और शराफत नसीब ढोती है ?
- ज. ढकीकी तवाजुअ (नरमी) और आञ्जी, कमजोरोंकी ખબरगीरी और ढमदईसे जे अल्लाहतआलाढी के लीये ढो.
- स. ढौंके पुढा की क्या अवागत है ?
- ज. बंदेमें जब ढौंके पुढा आ जाता है तो अल्लाह तआला के सिवा कीसीको ખातिरमें (ढीलमें) नढी लाता और मज्बुकसे नीडर ढो जाता है.
- स. बंदे को अल्लाह तआलासे डरने का यकीन कब ढोता है ?
- ज. बंदेको अपने अंदर पुढाके ढौंके का यकीन उस वकत करना याढीये जब वो दुन्यवी लालचसे ईस तरख परढेज करने लगे जिस तरख जिमार जाना जाने से परढेज करता है.

- स. भुदा से मोलबतकी अलामत क्या है ?  
 ज. बंदा जब जब (बदला) और राजा की हीकर छोड कर अल्लाह तआलाकी र्भवादत आलीस उस्की रजामंदी और पुश्नुदी की भातीर करता है तो उस वक्त वो अल्लाहतआला का लबीब (दोस्त) शुमार होने लगता है.
- स. तकब्बुर और जुअत मंदीमें क्या इर्क है ?  
 ज. तकब्बुरी के पीछे अपनी जात की बडाई का जजबा कार इरमा लोता है और जुअत मंदीके पीछे लक की बडाई का जजबा काम करता है.
- स. तवाजुअ और अलसासे कमतरीमें क्या इर्क है ?  
 ज. तवाजुअ की कैकीयत भुदा को बुलंद और भरतर माननेसे पैदा लोती है और अलसासे कमतरी र्भन्सानको बडा समजनेसे पैदा लोता है.
- स. मस्वेहत परसंदी और मुदाखिनत (पुशामद)में क्या इर्क है ?  
 ज. मस्वेहत कीसी आला मकसदको लासिल करने के लीये र्भन्तियार की जाती है और मुदाखिनत लंमेशा जाती कमजोरी का नतीजा लोती है.
- स. बाज लोग कछेते है के दो पलेर को पोना घंटा तक नमाज पढना मकइल है और बाज कछेते है दो-चार मिनीट ली मकइल वक्त लोता है अताईये सली क्या है ?  
 ज. दो पलेरको जब सुरज बिलकुल सीध में (सरपर) आ जाये उस वक्तको जवाल कछेते है . उस वक्त नमाज पढना मना है . लुजुर (स.अ.व.) का र्भशाद है के मना है नमाज पढना जब के आधा दीन लो.  
 (अयडकी - २/३६३)
- लेकीन र्भस मना कीये लुअे वक्त की मिकदार र्भन्नी कम है के उरमे कोर्र नमाज या नमाज का कोर्र इकन अदा नली कीया जा सकता अलबत्ता उस वक्त (जवाल) से पांग मिनीट पलेले और पांग मिनीट बाद यानी कुल दश मिनीट अलतियात के लीये काही है. (रहुल मुखतार - १/२४८)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

## (८) अल्लाह का जिक्र

सिर्फ ईस्लाम ही एक ऐसा मजहब है जिसके दाही और पयगंबर (स.अ.व.) ने हर दरकत और सुकुन के वक्त जुदा की याद की तालीम दी है। पयगंबर ईस्लाम की तालीम जो आज दुनिया में मगरीब से मशरीक तक फैली हुई है। उसको देखने से हर शम्स ये मહેसूस कर सकता है के दाहीये बरखक (स.अ.व.) ने अपनी उम्मत के लीये एक लम्हा भी ऐसा नहीं छोडा के जस्मे बंदे को जुदाकी याद से गाकिल रखेने दीया हो। आप (स.अ.व.) ने मुसलमानों को ये तालीम इरमाथ के जाने पीने के शुर् में और अत्म करने पर और सोते वक्त, सोने से जगने पर, सुब्द शाम, और घर में दाखिल होने और घरसे निकलते वक्त और मस्जिद में दाखिल होते वक्त, निकलते वक्त और बाजार में फीरते वक्त, टीलो पर चढते - उतरते वक्त और तमाम अवकात में जो ई-सान पर गुजरते है वगैरह। उन तमाम हालातों में अल्लाहका जिक्र करते रहे।

हर वक्त जुदावंद तआला का जिक्र करो और अपनी हर पुशी-गमी में जुदा को कबी न लुलो।

दुखुर (स.अ.व.) का ईशदि है के इस काम को जुदाका नाम लीये बगैर शुर् कीया जये वो ना तमाम और बेकार है।

सही उदीस में है के इस कहर देर तक कोई अल्लाहका जिक्र करता है जुदा उसका रईक (हमनशीन) हो जाता है।

उदीस में है के जुदावंद तआलाको सबसे जयादा महेबुब कलाम उसका जिक्र है। उसको अपने इरीशतों के लीये पसंद और इज्जियार इरमाया है।

उदीस में है के डीसी के पास अशरफीयां हो और वो कदम कदम पर अर्ज करता हो और दूसरा शम्स अल्लाह का जिक्र करता हो तो ये अकजब है।

जिक्रुल्लाह एक ऐसी ईबादत है के जन्नत में जुदा के दिदार के बाद भी नही टुटेगा। गाकिल को उयात (खुंङगी) नही और आकीर को मौत नही। जब बंदा “ अल्लाह अल्लाह ” कहेता है तो जुदा “ लब्जैक

लब्बैक” कहेता है. और येही तफ्सीर है. (१ ए. २ प). فَادْكُرُونِيْ اَدْكُرْكُمْ. सी मुआद “रहमत से याद करना” ये बे जरूरत तावील है.

मतलब ये के अक़ेरीन से अल्लाहका जिक्र कीसी वक़्त जुदा न होगी. कब्र में भी, मदेशर तक साथ होगा और ज़न्मत में भी साथ रहेगा.

उकीकत में जब अल्लाह के जिक्र की तौकीक हर वक़्त रहने लगे और उसको दुनिया की हर चीज़ से बुलंद और बढ़कर समझने लगे तो दुनिया की बड़ी बड़ी नेअमते उसके मुकाबले में बे किमत हो जाती है. जिक्रल्लाह वाले दील की सखी कहर और किमत का उस वक़्त अहसास होता है के दील ज़ेरी किमती नेअमत को हमने दुनिया की कैसी कैसी बे किमत चीज़ों से लगाकर बेकार कर दिया.

ईमाम शाइफ़ (र.अ.) को कीसी दुनियादार ने मोटे ज़ेठे (लडके) मामूली बिबास में देण कर उकीर नज़रों से देण था तो उज़रतने बेतक़लुब़ ये दो शेअर ईश्राफ़ इरमाये... अस्का तरजुमा ये है.

“ ये सखी है के में बहोत मामूली कपडे पहने लुवे लुं, के ईन सबके मुकाबले में शायद अक़ पैसा भी ज़यादा हो. बेकीन ईन कपडों में “ किमती दील ” छुपा लुवा है के अगर ईस्के थोड़े खिस्से के मुकाबले पर पुरी दुनिया और उसकी कीमती चीज़ों को रज्ज्मा ज़अे तो दील का कुछ खिस्सा भी उन्से कहीं बढ़यद कर ज़यादा है कीर पुरे दील की किमत का अंदाज़ तो बहोत ही मुश्कील है. ”

(मल्कुजते मुहदीसे कश्मीरी (र.अ.) पेज-७२)

### अहसान हर वक़्त मतलुब है :-

उज़रत डॉ.अ. उय साहब (र.अ.) इरमाते है के अक़ साहब मेरे पास आये और बडे इफ़्तियाह अंदाज़ में गुशी के साथ केहने लगे के अल्लाह का शुक्र है के मुंजे अहसान का दर्ज़ हासिल हो गया है. “अहसान” अक़ बडा दर्ज़ है. अस्के बारे में उदीस में आता है के.

अल्लाहउतावा की ईबाहत ईसतरह कर ज़ैसा के तुं अल्लाहउतावा को देण रहा है और अगर ये नही शक़े तो कम से कम ईस ज़्यादा के साथ ईबाहत कर के अल्लाहउतावा तुंजे देण रहे है. (बुभारी शरीफ़ उदीस-५)

ईस्को दरज्जे अेलसान कडा जता है. जिन साडल ने कडा मुंजे अेलसान का दर्ज्ज लसिल लो गया है. लजरत डॉ.अ.लैय साडल इरमाते ले के में ने जिनको मुबारकबादी दी के अल्लाडतआला मुबारक इरमाये ये तो बडोत बडी नेअमत है.

अलबत्ता में आपसे अेक बात पुछता हूं. के क्या आपको ये अेलसान का दर्ज्ज सिई नमाज में लसिल लोता है और बीवी बर्यों के साथ मामलात करते वक्त ली आपको ये ज्वाल आता है के अल्लाडतआला मुंजे देण रहे है. या ये ज्वाल जिस वक्त नली आता वो साडल ज्वाल में इरमाने लगे के उदीस में तो सिई ईबादत के मुतअल्लीक आया है. लम तो सिई ये समजते है के अेलसान का तअल्लुक सिई नमाज से है. दुसरी चीजों के साथ अेलसान का तअल्लुक नली.

लजरत डॉ.अ.लैय साडल ने इरमाया में ने ईसी लीये आपसे ये सवाल कीया था के आजकल आम तौर पर ये गलत इेडमी पायी जाती है. के अेलसान सिई नमाज में मतलुब है. ये किंज तिलावत ली में मतलुब है. लालां के अेलसान लर वक्त मतलुब है. लर शौब में मतलुब है.

दुकान पर बेठकर तिजरत कर रहे है. वहां ली अेलसान मतलुब है. यानी दील में ये ध्यान लोना यालीये के अल्लाडतआला मुंजे देण रहे है. कीसी से मामला कर रहे है. तो जिस वक्त ली अेलसान मतलुब है. यानी दीलमें ये ध्यान लोना यालीये के अल्लाडतआला मुंजे देण रहे है. जब बीवी बर्यों, दोस्त, अलबाब और पडोशीयों से मामला कर रहे लो तो जिस वक्त ली ये ध्यान लोना यालीये के मुंजे अल्लाडतआला देण रहे है.

(ईस्वाली ज्नुमात)

**कारोबार में मशगुल आदमी ली वली बन सकता है:-**

लजरत मौलाना अकरीया (र.अ.) ने अेक मजलीस में ईशदि इरमाया!

मिरकात शर्ह मिशकात में मुल्ला अली कारी (र.अ.) ने अेक जुर्जुगका किस्सा लीजा है के वो लज्ज को गये. वहां जिनडो ने अेक शम्स को देजा के वो बयतुल्लाह का पर्दा पकडकर आरो कतार लो रहा है. ये जुर्जुग

इरमाते हे के मैं उसके कलम की तरफ़ मुतवज्जोह हुआ तो देखा के अेक लम्हे के लीये भी अल्लाह से वासील (मीलाहुवा) नही था. उसके बाद मीना में गया. वहां मैंने अेक ताज्जुर को देखा और उसके कलम की तरफ़ मुतवज्जोह हुआ तो देखा के वो अपनी ईस मशगुलीयत में भी अेक लम्हे के लीये भी अल्लाह से गाफ़िल नही था-

(मिरकात शर्ह मिश्कात-सोडभते भा अवलीया-५७)

### शयतान का अहदः-

शयतान ने अल्लाह तआला से कडा था के आदमीको गुमराह करने के लीये में उन्के रास्तेमें भेठुंगा. ईर उन्के सामनेसे आउंगा और आपिरतके बारेमें उन्के दीवोमें शक पैदा कइगां के जन्नत, दीज्जन्, कयामत सब बनावटी भाते हे. उन्की कोई असलीयत नही.

और उन्के पीछेसे आउंगा और उन्के दीवो में दुनियाकी मखोब्बत पैदा कइगां. और कुर्आनी आयतों का ईन्कार कराउंगा. और दालनी तरफ़से आउंगा और दीनी भातो में शक पैदा कराउंगा और बाई तरफ़से आउंगा और उन्के दीवों में गुनाहों की शखवत पैदा कइगां.

(नवज्वान तभाडी के दखाने पर -पेज-५८७)

उजरत शेख अब्दुल कादीर जलानी (र.अ.) जे बडोत बडे बुजुर्ग गुजरे हे इरमाते हे के तन्हाईअ में बेठ कर जिक ईस्मेजत अल्लाह अल्लाह यार उजर बार करो उसके बाद अगर मखोब्बते ईलाही पैदा नही तो मुजसे कहेना. अल्लाह अल्लाह का जिक और अल्लाह वालों की सोडभत ईज्तिहार करके अल्लाहवालों ने बडोत कुछ पाया हे. जससे हम लोग गाफ़िल हे.

(तरीके अवलीया २/२७६)

### दुनिया की बका :-

तमाम आलमकी इह अल्लाहका जिक हे. जब तक अल्लाह तआलाकी याद कायम रहेगी दुनिया कायम रहेगी. जब दुनिया में अल्लाहकी याद छुट जअेगी तो समजे के आलम के कुच करने का वक्त आ गया. क्युं के जब इह न रही तो ढांचा कीस काम का ? उसे गीरा दीया जअेगा.

असल मकसद अल्लाह का जिक्र है और ये नमाज, रोजे, जकात, उज्र वगैरा अरकान सब उसके तरीके हैं।

हुजुर (स. अ. व.) का ईर्शाद है के क्यामत कायम न होगी जब तक एक ज़नदार भी अल्लाह अल्लाह के लने वाला रहेगा। जब भी एक अल्लाह के लने वाला न रहेगा तो क्यामत कायम हो जायेगी।

(मल्लुजते मुहदीसे कश्मीरी ३१४)

### जिक्र के इजायल :-

अल्लाह तआला का ईर्शाद है. (प २. १) **فَادْكُرُونِيْ اَذْكُرْكُمْ**  
 “तुम याद रभो मुंज को मैं याद रभुंगा तुमको”

अल्लाहके जिक्र के इजायल बे शुमार है और यही एक इज़ीबत कुछ कम नहीं के जे बंदा अल्लाह तआला को याद करता है तो अल्लाह तआला भी उसे याद इरमाते है।

जिक्रके असल माअना याद करने के है। जइस्का तअल्लुक दीवसे है। ज़बान से जिक्र करने को भी जिक्र ईस वीये कला जाता हैके ज़बान दीव की तरबुमान है। ईससे मालुम हुवा के जिक्र ज़बानी वोही मोअतबर है। जइस्के साथ दीव में भी अल्लाह की याद हो।

लेकिन उसके साथ ये भी याद रभना याहीये के अगर कोई शम्स ज़बान से जिक्र व तस्बीह में मशगुल हो मगर उसका दीव उज्जर न हो और दीव जिक्रमें न लगे। तो भी वो इयदे से भावी नहीं।

उज़रत अबु उस्मान (र. अ.) से कीसीने पुछा के डम ज़बानसे जिक्र करते है। मगर दीवों में उसकी उलावत मेहसुस नहीं करते। आपने इरमाया उस पर भी अल्लाहका शुक्र अदा करो के उसने तुम्हारे एक उज्र यानी ज़बान को अपनी ईताअतमें लगा वीया। (कुर्तबी)

उपरकी आयत का माअना ये है के तुम मुंजे ईताअत के अलकाम के साथ याद करो तो मैं तुम्हे सवाब और मग़्फ़िरत के साथ याद करुंगा।

उज़रत सईद बीन जुबैर (र. अ.) ने जिक्रुल्लाह की तफ़्सीर ही ईताअत और इरमा बरदारी से की है। वो इरमाते है।

जइस्ने अल्लाह तआला के अलकाम की पेरवी न की उसने अल्लाह को याद नहीं कीया अगर ये ज़हीर में उसकी नमाज और तस्बीह कीन्ती

नी लो.

अक उदीस में लुजुर (स.अ.व.) का ईर्शाद है के अस्ने अल्लाह तआलाकी ईताअत की यानी उसके उलाव और उराम का ईत्तिबाअ कीया अस्ने अल्लाह को याद कीया. अगरेये अस्की (नइल) नमाज, रोजा वगेरउ कम लो और अस्ने अलकामे ખુदावंदी की ખिलाइ वरजी की अस्ने अल्लाहको लुवा दीया. अगरेये (जलीरमें) अस्की नमाज, रोजा, तस्बीह वगेरउ जयादा लो. (कुर्तबी)

उअरत मआज (र.दी.) ने इरमाया के ईन्सान का कोई अमल अस्को अल्लाह तआला के अजाब से नजत दीवाने में जिक्कुल्लाह के बराबर नहीं.

उदीसे कुदसी में उअरत अबु लुरैरउ (र.दी.) से रिवायत है के अल्लाह तआला इरमाते है में अपने अंदे के साथ लोता लुं जब तक वो मुजे याद करता है और मेरे जिक् में अस्के लोठ लीवते रहे.

आज अल्लाह के जिक्की तौहीक नहीं. अस्की कदर व किंमत नहीं. लोटलों के लीये वकत है. दोस्तोंकी मुलाकात के लीये वकत है. अगर वकत नहीं तो अस्के लीये अस्ने ये अंठगी और नेअमतें अक्षी है.

लुजुर (स.अ.व.) का ईर्शाद है के जन्नतमें जाने के बाद अउलेजन्नतको दुनियाकी कीसी चीजका अइसोस और कलक नहीं लोगा सिवाय उस घडी के जे दुनियामें अल्लाहके जिक्के बगैर गुजर गइ.

अक मरतबा सुब्दानल्लाह के लना तमाम आलमसे जयादा किंमती है. आज अल्लाहने भौका दीया है. ખુब कसरतसे अल्लाह का जिक् करना थालीये.

अपनी बीवी-अर्योंका-दौलत का जिक् बडा और लवा मालुम लोता है. अन्की मोलुब्बतको बाकी रખने के लीये कोशीये की जाती है. अस्जाब जमा कीये जाते है. मौलाना इमी (र.अ.) इरमाते है अस्का तरबुमा ये है.

अय वो शअ्स अस्को अपने बीवी-अर्योंको पुश करने की इक्कर से कभी इरागत नहीं है. तुंजे अपने सबसे बडे मोलसीन (अउसान करनेवाले) परवरदिगार की रजामंदी लासिल करने से कैसे कुरसद लो गइ. ?

आगे ईशाद ईरमाते है तुज को ईस ज्वील दुनिया की तरफ मशगुलीयों से पलभर की ली कुरसद नहीं और जोस पुदा ने तुजे तमाम नेअमते अता इरमाई है उसकी रजांमंटी का भयाव ली नहीं. ?

डुमारे हील ईत्ने सभ्त लो गये है के दुनियाके मुकाबलेमें अल्लाहका जिक अरछा मालुम नहीं होता. बल्के यहाँ का कारोबार और दुनिया के नके और यहाँ की दरथीज बडी मालुम होती है और अल्लाह का जिक कित्ना बडा है उसका खेडसास नहीं.....!

डुम लोगोंने अल्लाहके जिककी मशक नहीं की अल्लाह के नाम की रट नहीं लगाई. उन लोगोंने अल्लाह के जिककी याशनी और भिठारा को मेडसुस करलीया है उनसे पुछो जिक कित्नी बडी थीज है.

### जुंदगी को गनीमत समजो :-

डुम को अता की गई जुंदगी बडी किमती है. ईसी लीये कडा गया है के मौत की तमन्ना न करो. अल्लाहने जे जुंदगी दी है उसको गनीमत जानो और काममें लेवो.

गनीमत समज जुंदगी की बडार-के आना न डोगा यहाँ बार बार

ईसी लीये सुईयाने लीभा है के जे कुछ करना है ईस वकत करवो ईबादते ईस वकत करवो- अल्लाह का जिक करवो - अल्लाह अल्लाह करवो.

कीसी शार्हर ने कडा है.

अल्लाह अल्लाह है तो यारों जान है. वरना यारों जान ही जे जान है.

डहीस शरीइमें है अेक मरतबा "सुब्दानल्लाह" पढने से अमल की तराजुं का आधा पलडा भर जाता है और अेक मरतबा "अल्लहुविल्लाह" पढनेसे मिजाने अमलका पुरा पलडा भर जाता है.

सडाला (र.दी.) ने अपने दीन रात को जिकुल्लाह से औसा आबाद रभा के रात के दुरवेश और दीनके मुजलीद का लकब पाया.

डुमराते उल्मा, अवलिया, सोलडा, सुईया ने मुज्तवीइ किस्म की षिदमतों में अपने आपको मशगुल रभा. कोई जाकिर बना, कोई मुबत्विलग बना, कोई मुलदीस बना. इन डुमरातने अपनी जुंदगी को जिक इिकर से भरपुर रभा.

## સુબ્હ-શામ તસ્બીહ પઢના :-

અલ્લાહ તઆલા કા ઈર્શાદ હે

وَسَبِّحْ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ. (૫૧. ૧૮૯)

અપને રબકી તસ્બીહ ઓર તહમીદ કરતે રહીયે. આફતાબ નિકલને સે પેહલે ઓર ઉસ્કે છુપને સે પેહલે.

અલ્લાહ કી તસ્બીહ કરના યાની પાકી બયાન કરના હે. જે ઝબાની તસ્બીહ કો ભી શામિલ હે ઓર નમાઝ કી ઈબાદત કો ભી, ઈસી લીયે બાઝ હઝરાત ને ફરમાયા કે સુરજ નિકલને સે પેહલે તસ્બીહ કરને સે મુરાદ નમાઝે ફઝર હે ઓર મગરિબ સે પેહલે તસ્બીહ સે મુરાદ અસર કી નમાઝ હે.

ઉપર કી આયત કે મફહુમ મેં વો આમ તસ્બીહ ભી દાખિલ હે જીન્કે સુબ્હ શાહ પઢને કી તરગીબ હદીસોં મેં આયી હે.

સહી બુખારી ઓર મુસ્લિમ શરીફ મેં હઝરત અબુ હુરૈરહ (ર.દી.) કી હદીસ હે કે હુઝુર (સ.અ.વ.) ને ફરમાયા :

જે શખ્સ સુબ્હ કે વકત ઓર શામકે વકત ૧૦૦-૧૦૦ મરતબા “સુબ્હાનલ્લાહ” પઢા કરે કયામતકે રોઝ કોઈ આદમી ઉસસે બેહતર અમલ લેકર નહી આયેગા. સિવાય ઉસ્કે કે જે યે તસ્બીહ ઈત્ની યા ઉસસે ઝયાદા પઢતા હો.

ઓર બુખારી ઓર મુસ્લિમ શરીફ મેં હઝરત અબુ હુરૈરહ (ર.દી.) સે યે ભી રિવાયત હે કે જીસ શખ્સને દીન મેં ૧૦૦ મરતબા “સુબ્હાનલ્લાહી વબે હમ્દેહી” પઢા ઉસ્કે ગુનાહ માફ કર દીયે જાયેગે. અગરયે વો સમંદર કી મોજોં સે ભી ઝયાદા હો. (મઝહરી)

હઝરત અબુ હુરૈરહ (ર.દી.) સે રિવાયત હે કે હુઝુર, (સ.અ.વ.) ને ઈર્શાદ ફરમાયા !

જે શખ્સ હર ફર્ઝ નમાઝ કે બાદ ૩૩ મરતબા “સુબ્હાનલ્લાહ” ઓર ૩૩ મરતબા “અલ્હમ્દુલિલ્લાહ” ઓર ૩૩ મરતબા “અલ્લાહુ અકબર” ઓર એક મરતબા “લાઈલાહા ઈલ્લલ્લાહુ વહ્દહુલું લા શરીકલહુ લહુલ મુલ્કુ વલહુલ હમ્દુ વહુવ અલાકુલ્લે શયઈન કદીર” પઢ લીયા કરો. તો ઉસ્કી ખતાઓં માફ કરદી જાયેગી. અગર યે વો દરિયા કી

मौजे के बराबर हो।

(बुधारी-मुस्लिम)(मु-क ८/१५०)

वकत ईत्नी बडी चीज है के ईस्का अक लम्हा भी बरबाद न होने दिया जाये. सही उदीसमें दुजुर (स.अ.व.) का ईशाद के जे शम्स “सुब्दानल्लाहील अज्जम” केडता है तो जन्नतमें उसके वीये पनुर का दरभ्त लगा दिया जाता है.

(तिमीजी)

ईन्सान कीत्नी ही घडीयां बे दहीसे बरबाद कर देता है. जस्की वजह से उन्के भडे सवाब से मेहइम हो जाता है. ज्दगी के ये दीन भेती की तरह है तो क्या कोई अकलमंद उन्में बीनर होने से गइलत भरतेगा.

असल ज्दगी वोही है जे अल्लाह की यादमें गुनर जाये दीन वोही है. रात वोही है जे तेरी यादमें गुनर जाये.

शामिल हो याद जस्में आकाये दो जहां की

वो सुब्द मोअतबर है वो शाम मोअतबर है

**सबसे अरछा जिक :-**

सबसे अरछा जिक لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ है. सबसे अरछी तरबीह سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ है. और सबसे अरछा ईस्तिगइर اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ رَبِّي مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ है.

उर वकत जिक में मशगुल रहो. और ये तरबीह भी पढते रहो देभो क्या क्या देभते हो.

(ज्याउल बहर-८४)(उजरत मौलाना शाह बहरअली(रह.)

**इहानी बिमारीयों का ईलाज :-**

उदीस शरीइमें है जब अल्लाहतआवा ने कीसी बिमारी को पैदा किया था. तो साथ ही उस्का ईलाज भी पैदा इरमा दिया है.

जस तरह जस्मानी बिमारी की कोई न कोई दवा है. ईसी तरह उर इहानी बिमारी की भी अक दवा है. और वो दवा अल्लाह का जिक है. जैसा के उदीस शरीइमें आता है. “अल्लाहका जिक हीवोंकी शिइा है”.

कुअनिमज्दमें ईशाद है. भबरदार ! अल्लाह के जिक हीसे दीव ईत्मिनान पाते है.

(पारा-१३/इकुअ -८ )

दूसरी जग्या ईशादि हे :- अय ईमानवालो अल्लाह का जिक्र कसरतसे किया करो. (पारा-२२/३कुअ - २)

अल्लाह का जिक्र करनेकी कोई उद नही। उर उावमें अल्लाह का जिक्र जुब कसरत से करो। रातमें, दीनमें, पुशकीमें, हरियामें, सफरमें, घरमें, मालदारीमें, इकीरीमें, सेहतमें, बिमारीमें, तन्डाईयोंमें, और जालीरमें।

मतलब ये के इडानी उयात का बाकी रेलना और इडानी बिमारीयोंसे शिक्षा और इवाले दारैन अल्लाह के जिक्र से वा अस्त (जुडेडुअे) हे। जब ईस्वाह का तलबगार अल्लाह का जिक्र कसरत से करता हे तो अल्लाह तआवा की मोहब्बत उसके दीलमें मजबुत हो जाती हे।

रोजाना की खंडगी में कुछ मौके जैसे ली आते है के खन्में खान से जिक्र करना मना हे। जैसे के बयतुलअवा में जिक्र करना मना हे। और पाने पीने के वकत और बातचीत के वकत (मजबुरी की वजहसे) खानसे जिक्र नहीं हो सकता। लेकिन जिक्र कल्बी ऐसा जिक्र हे। खस्में याद और ध्यान उर वकत रेलता हे। ईस लीये छुट नहीं सकता।

जानना याहीये के जिक्र की असल मुराद गइलत का जाते रेलना और दील का अल्लाह के गैरसे बेनियाज हो कर उर वकत ध्यान और शोकके साथ अल्लाहकी तरफ मुतवज्जरे रेलना हे। जब ये कैफियत हासिल हो जाये तो ये जिक्र कल्बी और जिक्र अङ्गीबे बारगाहे उक की लुजुरी कैलवाती हे। (मशाईये नकशबंदीयह-१८८)

“अलवत हर अंजुमन” का मतलब ये हे के तमाम अवकात तन्डाईमें जालीरमें, नीज पाने पीने, चलने हीरने, बात चीत करनेमें अपना दील अल्लाहतआवा से मशगुल रहे।

अंद बार अल्लाहका जिक्र करने के बाद गिडगीडा कर आख्खसे ये दुआ कर के ईवाली मरा मकराह “तुं हे और तरी रजा” अपनी मालुबत और मगरिहत मुजको अता करमा।

अगर अल्लाह के गैर से तअल्लुक हो जाये या कोई जुरी आदत दीलमें जग्या पकड जाये तो जिक्रमें उसका ईन्कार करे। जैसे के कीसीको मालकी मोहब्बत हे। तो उसको दुर करने के लीये  $\text{لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ}$  के लते वकत ये प्याल करे के मुज में मालकी मोहब्बत नहीं हे। और  $\text{لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ}$  के लते वकत ये

भ्याल करे के अल्लाहकी मोलज्जत मेरे हीलमें ले. ईसी तरल जे जे इकावट पेश आये उसको ईसी तरल दुर करे और बारगाले धवालीमें रोते लुअे आख्जकी से ईस बुराईके दुर लोने के वीये हुआ करे. बइजलेही तआला वो इकावट दुर लो जयेगी.

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

## (१०) हुआ

### हुआ मोमिन का हथियार :-

हुआ मोमिन का हथियार करार दीया गया है. जस तरल हर छोटा बडा जल्लिम को नुल्म से रोकने के वीये हथियार का सलारा लेता है और उसे अपनी काम्याबी और खिक्कत का जरीया समजता है. ईसी तरल मोमिन को याहीये के वो जलीरी और कानी और लकीर यीजों को मुश्कील कुशा और लाजत पुरी करने वाला समजने के बजये असल मुश्कीलकुशा और लाजत रवा अल्लाह तआलाको समजे और उसकी तरफ़ नुबुअ करे.

आज बलोट बडी दहनक लावत ये है के हमें अपने परवरद्विगार से हुआ मांगने का मौका ही नसीब नहीं. बडी से बडी जरूरत और मुश्कीलमें जलीरी अस्बाब और सलारा ह्जितयार करते है. लेकीन जहांसे लाजत पुरी लोती है और मुश्कील लल लोती है वहां जेहन नहीं जाता. आज हमारी अकसरीयत को अल्लाहकी नजदीकी और उसकी जत पर लरोंसां नहीं.

कीसीसे कोई यीज लासील करने के वीये ये द्हेभना लोगा के जससे हम कीसी यीज का मुतालबा करने ज रले है. वो हमें देगा या नहीं. और वो हमसे राख है या नहीं. अगर राख नहीं तो यीज भीलना बलोट मुश्किल है. मालुम हुवा के उसका राख लोना और मांगी यीज का भीलना

જરૂરી છે.

ઇસી તરહ મોમિન કે લીયે જરૂરી છે કે અલ્લાહ તઆલા સે અપના રિશતા મજબુત કરલે ઓર ઉસ્કી રજામંદી હાસિલ કરે. કીસી અમલ યા બાત સે અપને પરવરદિગાર કો નારાજ ન હોને દે. અગર અલ્લાહતઆલા હમ સે રાજી હોગા ઓર ઉસ હાલતમેં હમ ઉસસે કોઈ ચીઝ તલબ કરેંગે તો અલ્લાહ તઆલા ઉસે જરૂર કુબુલ ફરમા કર તલબ કી હુઈ ચીઝ કો એસે રાસ્તે સે અતા કરેગા જીસ્કા હમેં વેહમો ગુમાન ભી નહીં હોગા.

(નિદાએ શાહી - ૧૧/૨૦૦૧/૩૮)

આદમી જબ અલ્લાહ તઆલા સે દુઆ કરતા હે તો વો અપને ઈસ યકીન કો મજબુત કરતા હે કે દુનિયા કા અસલ માલીક ખુદા હે. યહાં જે કુછ હોગા ઉસી કે ચાહને સે હોગા. ઉસ્કી ઈજાઝત કે બગેર યહાં કુછ હોને વાલા નહીં. દુઆ એક પુકાર હે જે ઈસ લીયે હોતી હે કે બંદા કી આજીઝી દુર હો ઓર ઉસ્કા ખુદા ઉસ્કી હિમાયત પર આ જાયે.

દુઆ હર મૌકે પર મોમિન કે ઈમાન કો તાઝા કરતી હે ઓર અપને રબ સે કરીબ કર દેતી હે.

દુઆ કા કોઈ વકત મુકરર નહીં હે આદમી હર વકત હર હાલ ઓર હર ઝબાનમેં ખુદા સે દુઆ કર સકતા હે. અગર દુઆ સચ્ચે દીલસે નીકલી હે તો જરૂર વો ખુદા તક પહુંચેંગી ઓર મસ્લેહત કે મુતાબિક ઉસ્કી કબુલીયત કા ફેસ્લા ફરમાયેગા.

કુછ દુઆએ વો હે જે મુખ્તલીફ ઈબાદતોં કે સાથ જુડી હુઈ હે મગર ઝયાદાતર વો દુઆએ હે જે દુસરે કીસી અમલ કે સાથ જુડી હુઈ નહીં હે તરેશા કે રાત કો શોને શે ગેવલે બિરતર પર જાતા હે તો ઉસ્કી ઝબાનપર રાત કી મુનાસિબત સે કુછ દુઆએ ઝબાન પર આજાતી હે. ઈસી તરહ જબ વો સુબહ કો ઉઠતા હે તો નયેદીન કો શુરૂ કે લીયે દુઆ કરતા હે. ઈસી તરહ જબ કીશીસે મીલતા હે યા ખાતા પીતા હે યા સવારી પર બેઠતા હે યા સફર પર હોતા હે યા અપને કામકાજમેં મશગુલ હોતા હે તો ઉસ્કી મુનાસિબતસે ઉસ્કી ઝબાનસે એસી દુઆએ નિકલતી હે જીન્કા મતલબ યે હોતા હે કે અય ખુદા ! તુ મેરે હર મામલેમેં મેરે સાથ બેહતરી કા ફેસ્લા ફરમા.

दुआका मतलब जुदा से मागना है और जुदा से मागना कभी अत्म नहीं होता वो दर डालमें मुसलसल जरी रहता है. दुआ अपने रब के साथ कभी अत्म न हो वावे तअल्लुक का नाम है. मोमिन की छंढगी का कोई लम्हा दुआसे भावी नहीं हो सकता.

हदीस की किताबोंमें कसरतसे दुआओं नकल की गई है. ये दुआओं बताती है के मुह्तवीक मौको पर अेक मोमिन की ज्बान से किस तरह दुआके कविमार्त और अेहसास ज्हीर होना चाहीये.

अेक आदमी की मुलाकात दुसरे आदमी से हो तो चाहीये के दोनों अेक दुसरेको "अस्सलामु अलयकुम वरलमतुल्लाल" यानी तुम्हारे उपर अल्लाल की सलामती और अल्लालकी रहमत हो. ईसी तरह मोमिन को चाहीये के जब जाना जाये तो "बिस्मिल्लाहीर्रहमानीर्रहीम" पढकर जाना जाये और जब जाना अत्म करे तो "अल्लहुविल्लाल" कहे और दुसरी दुआओं पढे. गोया मोमिन अपने जाने पीने को अल्लालका नाम लेकर शुरु करता है और जब अत्म करता है तो अल्लालका शुक्र अदा करता है और उसकी नेअमतों का ईकरार करता है.

अेक मोमीन के हीलमें जब कोई बुरा ज्वाल आता है तो वो अल्लालकी पनाह मांगता है और ये दुआ करता है "अल्लाहुम्मा ईन्ती अउजुबिक मिनशयतानीर्रज्जम" जब कोई अहम बात पेश जाये तो केहता है. "अल्लाहुम्म अलयक तवककलना" यानी अय अल्लाल मैंने तेरे पर भरोसा कीया.

ईसी तरह अगर उसको माल मीलता है तो केहता है "अल्लाहुम्मा बारिकलना ही अमवालीना" यानी अय अल्लाल हमारे मालों में भरकत अता इरमा. अेक मोमिन जब सइर करता है तो उसकी ज्बान पर ये कलीमात पढता है. "अल्लाहुम्म अन्तस्साहीबु हीस्सइरे वअन्त अलीइनु हील्लअली" यानी अय अल्लाल ! तु ईस सइरमें मेरा साथी है और तूं ही मेरे बाह मेरे घर वालों का निगेहबान है.

जब कोई डाहिसा पेश आता है तो केहता है. "ईन्नाविल्लाही वईन्ना ईलयले राजेजिन" यानी हम अल्लाल के वीये है और हमें वोट कर अल्लालकी तरफ जाना है. ईसी तरह छंढगी के दर मौड पर ईस्लाममें

दुआओं बताई गई है।

ये दुआए मोमिनके ईमान को ताजा करती है और वो अपने रबसे करीब करती है। ईसी तरह मोमिन दुआके साथमें खंढगी गुजरता है। यहाँ तक के वो मरकर अपने रबसे भीव जाता है।

(अल रिसाला-४/१८८७/४८/५०)

### दुआ का सहारा :-

कीसी ईन्सान के साथ जब गम और मेहज़मी का मामला पेश आता है तो उस वकत दो सुरतें उसको दूर करने की होती है। एक ईन्सानोंकी तरफ़ देखना - दूसरा ખુदा की तरफ़ देखना। जे लोग मुसीबत के वकत ईन्सानों की तरफ़ देखे वो सिर्फ़ ये करते है के मुसीबत के खिलाफ़ इरीयाह और शिकायत में मुब्तला हो जाते है और जे लोग ખुदा की तरफ़ देखते है यानी उसको याद करते है तो छीननेवाले के बजये देनेवाले को अपनी तबज़ुह का भरकल बना लेगा। उसका जेहन मायुसी के बजये उम्मीद का आशयाना बन जायेगा।

दुआ एक ताकत है नाज़ुक वकतों में दुआ मोमिन का सबसे बड़ा सहारा है। दर आदमीको खंढगीमें जैसे मौके आते है जब वो अपनेको बेबस मेहसूस करता है। जैसे मौकों पर दुआ करना आदमी के दीवको सुकून बज्शता है। दुआ गोया आदमीके लीये काईसीस मेनेजमेन्ट (आर्थिक व्यवस्था)का बेहतरीन जरीया है। (अलरिसाला १/२००/२)

### दुआ से गलत :-

अव्वाह तयावाकी तरफ़ से अलान होता है के तुम सब बेराह (गलत रास्ते पर) थे। ज़स्को मैं ने राह दिभाई वो राह रास्त पर आया तुम सब नंगे लुके थे। ज़स्को मैं ने पेड़नाया गीलाया उसको कपडे और रोज़ी नसीब लुई। बस ! मुजसे खदायत मांगो मैं खदायत हुंगा। मुजसे रोज़ी तलब करो मैं रोज़ी हुंगा।

गौर करने की बात है। अदकमुल दाकिमीन के दरबार से दर एक पा रहा है। सुर्ख़ हो रहा है। वहाँ कीसी यीज़ की कोई कमी नहीं कीसी वास्तेकी ज़रत नहीं रब है और उसका अंदा जे थाड़े मांगे ईशाह होता है।

إِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي أُنِي فَأَنْتَ قَرِيبٌ (ب- २- ११०)

आप जो गेरे गंदे गेरी बागत पूछे तो फेल हीन्हे के भी फरीबाई दर  
पूफागने बावें की पूफाग गुनना लुं लगा। वो गुनली से पागे ओर गुन पग  
पैमान बायें (पाया = व/रुक्म क)

देनेवाला दे रखा है दीन और रात उसकी नेअगत गंदो पर बरस रही  
है. उसके अजाने में कोई कभी नहीं. डीर दुसरे दरबार का रूप किया जये.  
दुसरे की दुहाई (मदद मांगी) जये तो उससे बढकर अलकमुल हाकिमीन  
को नाराज करनेवाली बात कौनसी हो सकती है ?

उस्की बेहतरीन मिसाल कीसी आरिफने जयान की बादशाह का  
दरबार लगा हुआ है और बारयाजी (दरबार में लाजरी) का र्हनने  
आम है. दर अक नवाजा ज रखा है. जैसे में कोई शम्स र्हस्को छोडकर  
कीसी माअनुर अपाडज के पास जकर मागने लगे तो उसके बारे में क्या  
तसप्वर कायम किया ज सकता है ?

दुनियाकी क्रोमें लटकती रली गई. अस्बाब को उन्होंने असल का  
दर्ज दे दीया. नबी को भुदाका बेटा कलने लगे. जुजुर्गो और पुरोहितों को  
भुदा का दर्ज देने लगे. दर ताकत के आगे सर जुंफने लगे. सली खंढगी  
और लकीकी बंढगी का सिरा उन्के हाथों से छुट गया.

हदीसमें जुजुर (स.अ.व.) काईशाद है. अल्लाह यहुदीयों और  
नसारा पर लअनत करे अपने अंबिया की कबरों को उन्होंने सिजदागाह  
बना लीया है. आज हमारा अेडसास भी तौलीह के बारेमें कमजोर हो  
गया. कबरों पर वो सबकुछ होने लगा. जे दुसरी कौमोंका निशान है.

अगर आज कोई शिर्क करने वाला ये कले के डममें और तुममें क्या इर्क  
है.? डम जुतके सामने सिजदह करते है तुम कबर के आगे सिजदह करते  
हो. तो हमारे पास उस्का क्या जवाब होगा. ?

### गलत दृआ :-

बाज लोग दृआ में शरई हदों का ज्याल नहीं रभते. शिकायतके  
अंदाज में दृआ करने लगते है. जैसे के युं दृआ करने लगते है. अय  
अल्लाह ! अब क्या होगा ? अस में तो बिलकुल बरबाद हो जउंगा.  
या बरबाद हो जउगी ये बज्ये कीस पर डालुंगी. मेरे बाद उन्का क्या  
होगा ? भुदा जैसा न कीजये. अस ! ज ! मेरा तो कहीं हीकाना ही नहीं

રહેગા વગરહે. ગોયા શિકાયત અલગ કી જાતી હૈ ઔર મશ્વરા અલગ દીયા જાતા હૈ. .... અસ્તગફીરૂલાહ.

કયા હક તઆલા કા યહી અદબ હૈ.? કયા ઈસી કા નામ અઝમત હૈ.? દુઆ હંમેશા એક આજીઝ ગુલામકી તરહ કરની ચાહીયે. ઉસ્કે બાદ ખુદાયે પાક જો ફૈસ્લા ફરમાદે ઉસી પર રાજી રેહના ચાહીયે.

(ઈસ્લાહે ઈન્કીલાબ-૨૩)

### યે દુઆ ભી કરતે રહે :-

અય મેરે ખુદા. જો કુછ તેરે નઝદીક હક હૈ. ઉસ્કો મુઝ પર ખોલ દે. મેં પનાહ માંગતાહું કે અપની અક્લ કે પીછે ભટકતા રહું. બેશક એક દીન એસા આને વાલા હૈ જબ તેરે ફરિશ્તે જાન્કો મેં વાપસ લીટા નહીં સકતા મેરે પાસ આયેંગે ઔર મુઝકો પકડકર તેરે પાસ હાજીર કર દેંગે. અય મેરે ખુદા ઉસ રોઝ તું મુઝસે જો કુછ પુછેગા વો મુઝકો આજ હી બતાદે. પર્દા ઉઠને કે બાદ મેં જોકુછ દેખુંગા. વો આજ હી મુંઝે દીખાદે. ઔર ઉસ પર અમલ કરને કી આજ હી તૌફીક અતા ફરમા દે.

અય મેરે મઅબુદ ! મૈને તેરે ભેજે હુએ દીન કો સહી તૌર પર નહી સમજા હૈ. તું મુંઝે ઈસ્કા સહી ફેહમ અતા ફરમા ઔર મુજે મયદાને હશરમેં ઉનલોગોં મેં ન ઉઠા જાન્હોંને તેરે દીન મે ઝર્જા બરાબર ભી તેહરીફ (અદલ બદલ) કી હો. યા ઉસ્કી તાઈદ કી હો.

અય અલ્લાહ ! મુંઝે અપને ઉન નેક બંદોમેં ઉઠા જો ઈસ દીન પર જીયે ઔર મરે. જીસે તેરે હબીબ સૈયેદેના મુહંમદ (સ.અ.વ.) ને પેશ કીયા હૈ.

(તાબીર કી ગલ્તી - ૨૬)

### રાખત ગોઠો પર અઝાન દેના :-

અગર કોઈ શખ્સ ભુત, પરીત, દેખે તો ઉસ્કો બુલંદ આવાઝ સ અઝાન કહેની ચાહીયે.

હઝરત સઅદ બીન અબીવકકાસ (રદી.) ફરમાતે હૈ કે મૈને રસુલે અક્રમ (શ.અ.વ.) કો ફરમાતે હુને સુના હૈ કે જબ તુમવારે શામને ભુત, પરીત મુખ્તલીફ શક્તીમેં જાહીર હા તો અઝાન કવો.

ઈસ્ક અવાખા દુસરે ગોઠો પર ભી બુલૂગી ને અઝાન દેના સુન્નાત બતાયા હૈ.

१. इर्ज नमाज के लीये. २. बरये के कान में पैदाईश के वक्त.
३. आग लगने के मौके पर. ४. काफ़ीरों से जंग के मौके पर.
५. मुसाफ़ीर के पीछे जब शयतान ज़लीम हो कर उरायें.
६. गम के वक्त. ७. गुस्से के वक्त. ८. जब मुसाफ़ीर रास्ता भुल जायें.
९. जब कीसी को मीर्गी (वाँ) का दौरा पड़े.
१०. जब कीसी आदमी या ज़नवर की बदनभ्लाकी ज़लीम हो.

ईस्को साडीबे रकुलमुफ़्तार ने अपनी किताब में लिख डीया है.

(ईम्दादुल इतावा-१/१६१)

### बेयेनी के वक्त की दुआ :-

साडी बुभारी और मुस्लिम की खदीस में दे के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) को जब कोई तकलीफ़ और बेयेनी पेश आती तो आप ये दुआ पढा करते थे.

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ. لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ.

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ..

ईमाम तिबरीने इरमाया के सव्के सावेखीन ईस दुआ को दुआओ कुर्ब (बेयेनी की दुआ) कडा करते थे और मुसीबत और परेशानी के वक्त ये कलीमात पढा करते थे.

(तइसीरे कुर्तुबी)(जन्नतके उसीन मनाजूर-३१०)

### मस्नुन लिख और दुआओं की किताबें :-

- (१) किताबुल अज़कार :- मुहदीस अल्लामा, मुहयुद्दीन नववी (र.अ.) की मस्नुन अज़कार और दुआओं की निहायत ज़मेअ किताब है. ईस वजह से बाज उल्माने इरमाया है घर बेयकर किताबुल अज़कार खरीदलो.
- (२) अल डिअबुल आज़म :- ईस किताब में लीजी गह दुआओं की निस्बत कुआन मजह की दुआओं और जुज़ुर (स.अ.व.) की तरफ़ है. बिहाज़ा आप ईन्के अल्हाज़ का जुब प्याल रभे. उन्के मअनों पर पुरा गौर करें और उन्के मजामीन पर अमल करने वाले हो. कयुंके ये मजमुआ ईन तमाम दुआओं पर शामिल है. जे आपको नज़त देने वाली है और खलाकतों से बयानेवाली है. कयुंके जुज़ुर (स.अ.व.) ने कोई उम्दा आदत और अरख़ा तरीका ऐसा बाकी नर्ही रभा ज़स्की दुआ न इरमाई हो और कोई बुरा काम और ख़राब ख़स्लत ऐसी बाकी नर्ही छोडी

जससे पनाह न मांगी हो।

अल्लाह तआला आप (स.अ.व.) के मरतबों को जुबुद से जुबुद तर इरमाये. अस ईस्को डुजुर (स.अ.व.) की पेरवी का सही तरीका और सुझियाओ किराम के मुकामात का जुवासा समजना चाहीये. विडाजा उसके मज्मुओ को अगर रोज पढ लीया करे जब तो केहना ही क्या? परना जुम्आ का सही नही तो महीने में एक बार अगर न हो सके तो साल में एक बार तो हो. अगर ये भी मुश्कीन नहो तो उम्र भर में अगर एकबार नसीज हो जाये तो ये भी जनीमत है और अगर अरकात के मयदान में उसके पढने का मोका मील जाये तो उसमें ये कलिमात जयादा इरमा ले.

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (१०० मरतबा)

(२) सुरओ ईज्जालस ----- (१०० मरतबा)

(३) سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ (१०० मरतबा)

ईस्के अलावा हुआओं के कलिमात और अपनी आहोकारी के इरमान तल्बीया के अल्हाजमी पढते रहे ताके हुआओ कृपुल हो.

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

## (११) तौबा और इस्तिगफार

❖ अल्लाह तआला का ईशाद है : अय ईमानवालों तुम सब मील कर अल्लाह ही की तरफ़ इब्जुअ करो ताके तुम इलाह पाओ.

(सुरओ नुर-३१)

❖ अपने परवरदिगार से बज्शीश मागो और उसके आगे तौबा करो.

(सुरओ हुद-३)

❖ अय ईमानवालों ! अल्लाह तआला के आगे साफ़ हीबरो राब्यी तौबा करो.

(सुरओ तहरीम-८)

उदीस शरीफ़ में है -

उजरत अबुदुरैरद (र.दी.) इरमाते है के मैंने रसुबुल्लाह (स.अ.व.) से सुना आप इरमाते में मैंने अल्लाह तआला से हीनमें ७०

સે ઝયાદા મરતબા તોબા ઈસ્તિગફાર કરતા હું. (બુખારી)  
 હઝરત અબ્દુલ્લાહ બીન બિસર (ર.દી.) સે રિવાયત હે કે રસૂલુલ્લાહ  
 (શ.અ.વ.) ને ઈશાદ ફરમાયા મુબારક બાદી હો ઉરા શખ્સ કે લીગે જીસ્કે  
 નામાએ આમાલમે ઈસ્તિગફાર કી કસરત હો. (મિશકાત)

કુઆનમજીદ ઓર હદીસ શરીફ સે યે બાત સાબિત હે કે હર ગુનાહસે  
 તોબા વાજીબ હે. અગર ગુનાહ બંદા ઓર અલ્લાહકે દરમ્યાન મે હે તો  
 વગરો તોબા કે લીગે તીન શર્તો હે.

- (૧) ગુનાહ બિલકુલ છોડ દે.
- (૨) કીયે હુએ ગુનાહ પર શરમીદગી હો.
- (૩) પક્કા ઈરાદા ઓર ફેરવા કરલે કે અબ ઈસ ગુનાહ કી તરફ કબી  
 ન લોટુંગા. અગર ઈન તીનોં મેં સે કોઈ છુટ જાયે તો તોબા સહી  
 નહી હોગી. અગર ગુનાહ કીસી આદમી સે તઅલ્લુક રખતાહો  
 તો ઉસસે તોબા કી ચાર શર્તો હે. તીન જો ઉપર લીખી ગઈ. ઓર  
 ચોથી શર્ત યે હે કે હકવાલે કા અગર માલ હે તો અદા કરે. યા  
 ઉસસે માફ કરાયે. અગર કીસીકો ગાલી દી યા તક્લીફ પહુંચાઈ  
 તો ઉસસે માફી માંગો. ખાસ કર અપને બડોં સે. જૈસે મા-બાપ-  
 ઉસ્તાદ-બુઝુર્ગ વગેરહ સે તો બહોત આજીઝીસે માફી માંગના  
 ચાહીયે. અગર કીસી પર તોહમ્મત લગાઈ હે તો ઉસ્કો અપને  
 ઉપર સઝા કરનેકી કુદરત દેદે. યા માફ કરાલે. અગર કીસી કી  
 ગીબત યા શિકાયત કી હે તો ઉસસે ભી માફી માંગે. અગર ગીબત  
 જાહીર કરનેસે ફિલ્ને કા ડર હો તો જાહીર કીયે બગૈર માફી માગ  
 લે. ઓર ઉસ્કે લીયે દુઆએ ખૈર કરતા રહે. ઓર ઉસ્કી તરફસે  
 માલી સદકા ભી કરે. તાકે અલ્લાહતઆલા કયામત કે દીન હક  
 વાલેસે ઉસ્કી ખતા કો માફ કરાદે.

### તૌબ એ નસુહ :-

અલ્લામહ ઈબ્ને કથીમ (ર.અ.) ને તૌબ એ નસુહ કે બારે મેં યે કૌલ  
 નકલ ફરમાયા હે. તૌબ એ નસુહ ચાર બાતોંસે મુકમ્મલ હોતી હે.

- (૧) ઝુબાનસે ઈસ્તિગફાર કરના.
- (૨) ગુનાહોંસે અપને બદનકો દુર રખના.

- (३) आर्धन्दा गुनाड न करने का पुप्ता धरादा करना.  
 (४) बुरे साथीयोसे अलग रहना. (गुलदंस्तअे अणकार-१०१)

### तौबा की हकीकत :-

तौबा धस्तिगकार की हकीकत धस मिसालसे अच्छी तरह समज्ज ञ सकती है के कोध आदमी गुस्सेकी डालतमें धुट्कुशी (आपघात) के धरादेसे डेडर भावे और ञब डेडर अंदर पडुंयकर अपना अमल थुर करदे और आर्ते कटने लगे और ना काबिले बरदाशत तकलीफ और बेचेनी डोने लगे और भौत सामने पडी नजर आने लगे. और अपनी धस बेवकुड्डी की डरकत पर रंज और अडसोस डोने लगे. उस वकत वो थाले के कीसीबी किमत पर उसकी ञन बय ञये. और ञे दवा हकीम या डॉक्टर उसे बताये वो उसे धस्तिमाल करे और डेय (डव्टी) करने की डर तदबीर धप्तिथार करे. यकीनन उस वकत वो पुरे सख्ये धीलसे डैस्वा करेगा के अगर में जीदा बय गया तो आर्धन्दा कभी ऐसी बेवकुड्डी नली कडुंगा.

बिलकुल धसी तरह समज्जना थालीये के कभी कभी धमानवाला बंधा शयतान या नडसके धोके से गुनाड कर बेठता है. लेकीन अड्लाडतआला की तौड्डीकसे उसका धमानी ञजबा बेदार डोता है और ये अेडसास डोता है के मैंनेअपने भौलाकी ना इरमानी करके अपने को डलाक कर डाला और अड्लाडकी रहमत और धनायत और उसकी रजामंठी के बजये उसके गज्ज और अज्जब का मुस्तडीक डोगया. अगर में धसी डालतमें भर गया तो कब्र और डशरमें मुज पर क्या गुजरेगी.? और अपने मालीक को क्या मुंड धीभाडुंगा ? और आभिरतका अज्जब डेसे बरदाशत कर सकुंगा ?.

मतलब के ञब तौड्डीके धवाली से उसके अंदर ये डिकर और अेडसास पैदा डोता है तो वो यकीन और अकीदा रपते डुअे के मेरा मालीक, भौला लडा रडीम और करीम है. माफी मांगने गर लडे लडे गुनाडोको वो लडी थुशीस माफ इरमा दता है. वो ऐसे करीम भौलासे माफी और बज्शीशकी दूआ करता है और धसी को गुनाड के डेडर का धवाज्ज समज्जता है.

और आर्धन्दाके लीये डैस्वा करता है के अण कभी आपने मालीक की नाइरमानी नली कडुंगा. और कभी गुनाड क पास नली आडुंगा. जस बंधे

के इसी अमल का नाम ईस्तिग़्फ़ार और तोबा है।

(मआरिफ़ुल उहीस-५/३०८)

### तोबा की तौहीक :-

आजके इत्ने के दौरमें लोग नेक कामोंसे लटकर गुनाहों की तरफ़ दौड़ रहे हैं उसकी वजहसे ग़फ़लत बढ़ती जा रही है। बाणों अफ़राह जैसे हैं जो अपने दावेमें मग़लमान हैं लेकिन गुनाहोंमें शरसे पाप तक दुबे दुबे हैं। और गुमशहरीमें ईस कदर आगे जा चुके हैं के गुनाहोंको छोड़ने और तोबा ईस्तिग़्फ़ार का ज़्यादा नहीं करते और ईस ज़्यादामें हैं के लमारी तोबा क्या कबुल होगी ? हालांकि अल्लाह तआला का ईशति है।

वो ऐसा मालिक है जो अपने बंदों की तोबा कबुल करमाता है और तमाम गुनाहों को माफ़ करमा देता है। अल्लाह तआला की ज़त सबसे ज़यादा रहीम करीम है। वो अरहमुररिहीम है। उसकी रहमतसे कभी ना उम्मीद न हो। बराबर तोबा करते रहें। गुनाह हो ज़ये झीर झौरन तोबा करे मौलाना वसीयुल्लाह अल्लाबादी (र.अ.) ये शेअर पढा करते थे।

उमने तय की ईस तरह मंज़ीले

गीर परे, गीर उठे, उठ कर खले।

सगीरह (छोटे) गुनाह तो नेक आमाव से भी माफ़ हो सकते हैं। लेकिन कबीरा (बड़े) गुनाहों के लीये तोबा शर्त है।

मग़झीरत की ज़ुश ज़बरी सुन कर गुनाहों पर खिम्मत करना ईस ज़्यादासे के मरने से पेहले तोबा कर लेंगे। बख़्त बड़ी बेवकुफ़ी और नादानी है। क्युंके आईन्दा का हाल मालुम नहीं कब मौत का वक़्त आ ज़ये और तोबा का दरवाज़ा बंद हो ज़ये। मुफ़ती शहीअ सालब (र.अ.) का शेअर है।

जलीम अभी है कुरसदे तोबा न देर कर

वो भी गीरा नहीं जो गीरा झीर संभव गया

### हदीसे कुदसी :-

अल्लाह तआला करमाते है अथ ईब्ने आदम... !

अगर तूं मुंज़ से दूआ करता और मुंज़ से मग़झीरतकी उम्मीद रअता तो में तेरी तमाम ज़ताओं को माफ़ कर देता।

अय ईब्ने आदम ...!

में ईस्की परवाल नही करता हुं के अगर तेरे गुनाह आस्मान की बुलंदी तक पहुंच जाये हीरत तुं मुंज से मगहीरत की तलब करे तो में तुंजे माइ कर हुंगा.

अय ईब्ने आदम...!

मुंजे ईस्की बी परवा नही के अगर तुं मेरे पास नहीन के बराबर गुनाह ले कर आये हीरत तुं ईस डालमे मेरे पास आये के तुं मेरे साथ कीसीको शरीक न करता डो. तो में तुंजे उन गुनाहों के बकदर मगहीरत अता करुंगा.

(तिर्मीजी ३/१७६)

### आदमी का ईगितहान :-

डुजुर (स.अ.व.) ने इरमाया अय शप्स ! क्या तुजको मालुम नही? के अल्वालने शराब को डराम कर दीया है . उसके बाद उस शप्सने अपने लडके से कडा के जाओ शराब को बेय द्यो. डुजुर (स.अ.व.) ने पुछा अय शप्स तुमने अपने लडके को क्या डुकम दीया है. आदमीने कडा के मैने ये डुकम दीया है के वो शराब को बेय द्ये. आप (स.अ.व.) ने इरमाया छस खीजका पीना डराम है उसका बेयना भी डराम है. उसके बाद उसने डुकम दीया और उसकी शराब अल्दामें बडाही गई.

मोमिनके अंदर भी वही जजबात छोते है जे दुसरे ईन्सानोंमें छोते है. कभी ज्वाहीश की वजहसे वो लइजीतावीव करता है कभी उसके उपर माल की मोलब्बत गावीब आ जाती है. मगर ये सब उस वकत तक है जब तक जुदा का डुकम उसके सामने न आये. जुदा का डुकम आते ही वो ईस्के सामने जुंज जाता है. उसके बाद वो लइजी तावीवोको भी लुल जाता है. और ईसी के साथ माल या कीसी और खीजकी मोलब्बतको भी.

मोनुदा दुनियामें आदमी का ईगितहान मे नही है के जो इरिशता छोने का सुनुत द्ये. यानी कभी कोई गल्ती न करे और न कभी कोई बुरा ज्वाल उसके दीवमें आये. ईस डिस्म की पारसाई (परदेजगारी) न इरिशतों से मतलुब है न ईन्सान से. ईन्सान से उसके रब को जे खीज मतलुब है वो में है के वो तजबीह के बाद अपनी गल्ती पर ईसराह न करे.

ईन्सान को छन बातों के साथ पैदा किया गया है. और उस किस्मकी दुनिया में उसको रभा गया है. उसका लाजमी नतीजा ये होगा के उसके दौल में गलत भ्यावात आर्येंगे. वो गलत बातें सोयेगा. और गलत अमल भी कर गुजरेगा. मगर ईस किस्मकी गलती को वकती होना याहीये. न के मुस्तकील. जब भी आदमी का जमीर टुटे या कोई भारज आवाज उसकी गलती पर उसको जबरदार करे तो उस वकत उसको छेद और डमदई के बजये सीधे तरीके पर अपनी गलती का अतिराइ कर लेना याहीये और झीरन अपनी कोशीश में लग जना याहीये.

ईन्सान का कमाल गलती कर के हो जारा पलट आने में है. न के शुरूसे गलती न करने में. गलती का हो जना गुनाह नहीं है. बल्के गलती पर कायम रहना गुनाह है.

कुरआन मज्जद में ईशाद हुवा है के जन्नत उन मुत्कीयों के लीये है. जन्का डाल ये हो के जब वो कोई बुराई कर बैठे या अपनी जन पर कोई नूल्म करे तब तो वो अल्लाहको याद कर के अपने गुनाहों की माफी मांगे. अल्लाह के सिवा कौन है ? जे गुनाहों को माफ करे और वो जन्ते हुवे अपने कीये पर ईसरार नहीं करते.

(आले ईम्रान-१३५)(अल रिस्साला-२/१८८३/३)

### तौबा के बाह :-

अक बार अखी तरह तौबा करके झीर गुनाहों के गम में न रहे. बल्के काम में लगे रहे. वरना गुनाहों का भ्याल और गम उसके और अल्लाह तआवाके दरम्यान पर्दा बन जयेगा. बंदा अपने रबसे दार्दमी मुशालिहते के लीये पैदा हुवा है. न के गुनाहों के गुराकने के लीये.

अगर कोई कोताही हो जये तो उसका गम लेकर बैठने के बजये उस कमी का ओलसास करता रहे. बस ! अकबार जुब अखी तरह तौबा ईस्तिग़ा़र करके बात को भत्म करे. और अपने काम में लगे काममें लगने से भुद ही कमी पुरी हो जयेगी. बस ! ईस्तिग़ा़र करते वकत ये ध्यान काई है के मैं गुनाहगार हुं और अपने तमाम गुनाहोंसे तौबा करता हुं.

(बसाईरे डकीमुल उम्मत)

## नफ़रत करना हराम है :-

गुनाहगार आदमीसे नफ़रत करना हराम है और गुनाहोंसे नफ़रत करना वाज्जब है। उकीमुल उम्मत का ईशाद है के कीसी बडे आविम के वीये वी ये ज़ईज नहो के वो कीसी मुसलमानको उकीर समजे। मुजातब को अपने से मोहतरम समजते हुअे गुनाहों पर रोकटोक करना याहीये।

इतावा आवमगीरीमें है के अगर किसी मुसलमानने नमाज गलत पढी और उम्मीद है के वो हमारी बात कुबुल कर वेगा तो उसको समजना वाज्जब है। आविमका अपनेको आविम समजना तो ज़ईज है। मगर अपने को अइजल समजना कीसी मुसलमान से उसके वीये हराम है। क्युं के भात्मे का पता नहो।

अय लोगो ! बहोतसी भरतबा तेज रइतार धोडा थक कर बेठ गया और लंगडा गधा यवते यवते मंजुल पर पडुंय गया।

(मजलीसे अबरार-६८)(मजाहिरे उलुम-८/१८८७/३०)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

## (१२) हज्ज और उमरह

### हज्जे बयतुल्लाह :-

ईशके जुदावंदी का जे मिसाल नमूना :

अल्लाह तआला का ईशाद है :-

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا وَهُدًى لِلْعَالَمِينَ (پ ३ ८ १)

पहेला घर जे लोगों के वीये बनाया गया है। जे मक्का में है। बडी भरकतवाला है और तमाम आवमों के वीये खिदायत वाला है।

उदीसशरीफ़में है :- उजरत अबु हुरैरह (र.दी.) से रिवायत है के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया : जे शप्स अल्लाहके वीये उज्ज करे ईस तरह के ईस उज्जमें इोडश बात और ना इरमानी न हो वो उज्जसे ओसा वापस होता है जैसा उस दीन था। जस दीन उसकी माने उसको जन् था।

(मिशकत-१/२२१)

उज्ज की उकीकत कुरबानी है। उज्जके वीये आदमी सइर करता

ले. जे वक्तकी कुरबानी ले. उस्का जर्ब गरदाश्त करता ले. जे पावकी कुरबानी ले. जनवर जुब्ब करता ले जे जनकी कुरबानी ले. सजी और तवाक करता ले जस्का मतलब ये ले के वो अपनी तवज्जुल को दरतरइसे समेट कर सिर्फ अेक अल्लाहके लीये वकफ कर देता ले.

ईस तरह उज्ज के मुज्तवीक आमाल के जरीये बंदे को गुदा की रजा के लीये झीदा छोकर कुर्बानी देकर और आभिरत की छंदगी को ध्यान में रखने का सबक दीया जाता ले. और उस्के अंदर अपने मौलासे वो ईशक पैदा किया जाता ले के वो उस्की मरज्ज पुरी करने के लीये दीवाना वार उस्की राह पर चल पडे.

उज्ज के लुग्वी मानना ले. कस्ट करना, ईरादा करना, ईस ईबाहत की अदायगी के लीये सारी दुनियाके मुसलमान अपने अपने मुल्कोंसे निकल कर अेक भास मुकाम पर आते ले. ईस लीये उस्का नाम उज्ज पड गया. ये लइज ईस्लाम से पेलले जलिलीयत के जमाने में भी मौजूद था.

(अल ईस्लाम-३८)

### हज्जे मकबुल :-

उल्मा अे किराम ने इरमाया ले के उज्जके मकबुल की अलामत ये ले के अपने उज्ज से ईस तरह वापस आये के उस्का दील दुनिया की मोलुब्बतसे झरिग और आभिरतकी तरफ रगबत करने वाला हो. जैसे शम्स का उज्ज कुबुल और गुनाह मखाइ ले. और उस्की दुआ मकबुल ले. उज्जके दरम्यान जगा जगा ईन्सान अल्लाह तआला से ईताअत और इरमा भरदारी का अलह बयतुल्लाह के सामने करता ले. अगर उज्ज करनेवाले उस्का ध्यान रखेतो ईस अलह को पुरा करने का आईन्दा अेहतिमाम नसीब हो सकता ले.

अेक बुजुर्ग इरमाते ले के मैं उज्ज से वापस आया तो मेरे दीलमें अेक गुनाह का वसवसा पैदा हुवा. मुझे गैब से आवाज आई के क्या तुने उज्ज नही किया ? ये आवाज मेरे और उस गुनाह के दरम्यान अेक द्विवार बन गई. अल्लाहतआला ने मुंजे मेहकुज इरमा दीया.

उज्जके जत्म पर तकवा की ताकीदमें अेक राज ये भी ले के उज्ज अेक बडी ईबाहत ले. उस्के अदा करने के बाद शयतान आम तौर पर

ઈન્સાન કે દીલમેં અપની બડાઈ ઓર બુજુર્ગી કા ખ્યાલ ડાલતા હે. જો ઉસ્કે તમામ અમલ કો બેકાર કરનેવાલા હે. ઈસી લીયે હજજ કે બાદ ભી અલ્લાહતઆલાસે ઝયાદા ડરને ઓર ઉસ્કી ઈતાઅત કરના લાઝીમ હે. કે ગફલતમેં કહીંયે ઈબાદત બરબાદ ન હો જયે. (મ. કુ.-૧/૪૩૮)

### હજજ મેં લાપરવાહી :-

હજજ બયતુલ્લાહ અદા કરના ઈસ્લામ કા એક અઝીમુશાન રૂકને ઓર અહમતરીન ફરીજા હે. યે ફરીજા તમામ ઉમ્મ મેં એક મરતબા ઉસ શખ્સ પર ફર્જ હે. જીસ્કો અલ્લાહતઆલા ને ઈત્ના માલ દીયા હો કે અપને વતનસે મકકા મુકર્રમહ તક જાને આને પર કુદરત હો. ઓર જીન લોગોં કા નફકા (ખર્ચા) ઉસકે જીમ્મે હો. (બીવી-બચ્ચે વગેરહ) ઉન્કે લીયે હજજ કે સફરસે વાપસી તક જરૂરી ચીજોં કા ઈન્તિજામ હો.

લેફીન ક્રમ ઈલ્મી ઓર ગફલતકા યે આલમ હે કે બહોત સે લોગોં પર શરીઅત ક લિહાઝસે હજજ ફર્જ હાતા હે. મગર યા બહાતરી ઓર જરૂરી ચીજોં કો હજજકે લીયે જરૂરી સમજતે હે જૈસા કે સફરમેં જાને સે પેહલે દોસ્તોં, રિશ્તેદારોં કો ખાના ખિલાના ઓર વહાંસે તોહફે હદીયે ઓર તબર્ક વગેરહ લાને કો હજજમેં શુમાર કરતે હે.

બહોતસે લોગ હજજ ઈસ લીયે નહીં કરતે કે અભી તક ઉન્કે વાલેદેનને હજજ નહીં કીયા હે. યા બીવી કો સાથ લે જાને કી રકમ નહીં હે. ઓર યે સમજતે હે કે જબ વાલેદેન હજજ કરલે યા બીવી કે હજજ કા ભી ઈન્તિજામ હો જયે ઉસ વકત હજજ ફર્જ હોગા. યે સબ ખાતે ગલત હે. હદીયે, તોહફે, તબર્ક વગેરહ કે ખર્ચ કા એઅતિબાર નહીં ઓર મા-બાપ કા પેહલે હજજ કરના. યા બીવી કો સાથ લેજાના જરૂરી નહી. બસ ! ઈત્ના માલ હોના જરૂરી હે જીત્ના ઉપર લીખા હે. અગર કિસી કે પાસ ઈત્ના માલ મૌબુદ હો તો ઉસ પર હજજ ફર્જ હે.

સચ્ચા આશિક ઓર હકીકી હાજી તો વો હે જીસ્કી હાલત યે હોગી. સારાં એશ ઓર આરામ ઓર તકલ્લુફ ઓર કુરસદ કી તમામ ખાતોં કો ભુલ જાયેગા. ન ઉસ્કો અપને કપડોં કી ફિકર હોગી. ન બાલોં કી સફાઈ કા ખ્યાલ હોગા. ન બીવી બચ્ચોં કી ખ્વાહીશ ન દેસ્તોં કી યાદ. બસ ! વો હોગા ઓર દિયારે મેહબુબ કી લવ (મોહબ્બત) હોગી. ઉસ્કી હાલત

મજનુન કી હોગી. જો ઈસ ચોખટ પર સરકે બલ હાજરી દેને કો બે કરાર હો વહાં પહુંચકર કભી વો ઉસ્કી ચોખટ કો ચુંમેગા ઓર કભી ઉસ્કા તવાફ કરેગા ઓર કભી અપની નાદાનીયો ઓર ગફલતો કો સોચ કર ખુન કે આસું રોયેગા. ઓર હાલ કી ઝબાન સે યે કેહ રહા હોગા.

એક તુમસે કયા મોહબ્બત હો ગઈ.

સારી આખિરતહી સે વેહશત હો ગઈ.

યે હાલાત ઉન લોગોંકી હોગી જો હકીકતમેં અપને રબ કી મુલાકાત કી તમન્ના રખતે હો. હકીકતમેં ઉન્કા મકબુલ હજજ હોગા.

લેકીન અફસોસ !લોગોંને ઈસ અઝીમુશશાન ઓર મુબારક સફરકો ભી અપની નાપાક અગરાજ (મતલબોં)સે ગંદા કર દિયા. ઈસ તરહ ચૌદહસો સાલ પેહલેકી પેશીનગોઈ જો હુઝુરે પાક (સ. અ. વ.) ને બયાન ફરમાઈ થી વો આજ હરફ બહરફ પુરી હો રહી હે.

હુઝુર (સ. અ. વ.) ને ઈશ્દિ ફરમાયા કે લોગોં પર એક ઝમાના એસા આયેગા કે હજજ કરનેવાલે ચાર કિસ્મકે હોગોં.

- (૧) માલદાર લોગ - સેર તફરીહ કે લીયે જાયેગોં.
- (૨) દરમ્યાની તબકકે કે લોગ - તિજરતકી ગર્જસે જાયેગોં.
- (૩) ફકીર ઓર મિસ્કીન - ભીખ માંગને કે લીયે જાયેગોં.
- (૪) ઉલ્મા ઓર કારી - નામ રોશન કરને ઓર દિખલાવે કે લીયે જાયેગોં.

(કન્ઝુલ ઉમ્માલ-૫-૧૩૩)

જો લોગ વહાંસે નેકીયોંકે બદલે ગુનાહોં કી ગઠડી બાંધકર લાતે હે. વો ખુદાકી ઈસ વઈદ કે મિસ્દાક બનતે હે. અલ્લાહતઆલા કા ઈશ્દિ હે

وَمَنْ يُرِدْ فِيهِ بِالْحَادِ بِظُلْمٍ نُدَقَهُ مِنْ عَذَابِ آئِيمٍ (૫-૧૬)

“ ઓર જો ઈસ શહેર (મકકા)મેં ચાહે ટેડી રાહ શરાત સે, ઉસે ચખાયેગે હમ એક દર્દનાક અઝાબ ”

મુફ્ફસીર હઝરાતને ઈસ્મે હર તરહ કે ગુનાહ કો દાખિલ માના હે. હઝરત અતા (ર. અ.) ફરમાતે હે કે ગુનાહ તો હર જગા ગુનાહ હે મગર હરમે મકકા કો ખાસ ઈસ લીયે ક્રિયા ગયા કે જીસ તરહ વહાં નેકી કા સવાબ ઝયાદા બઢ જતા હે. ઈસી તરહ ગુનાહ કા અઝાબ ભી બઢ જતા હે.

હઝરત અબ્દુલ્લાહ ઈબ્ને મસ્ઉદ (ર.દી.) ફરમાતે હે કે દુસરે મુકામ પર સિફ ગુનાહ કા ઈરાદા કરને સે ગુનાહ નહીં લીખા જતા. લેકીન હરમે મક્કા મેં સિફ ગુનાહ કા પક્કા ઈરાદા કરને સે ભી લીખ દીયા જતા હે.

હીજરી સન ૧૪૧૭ મેં મીના મેં આગ લગનેકા બડા હાદેસા પેશ આયા. સારી દુનિયાકે લોગોંને ઉસ્કે બારેમેં ગૌર ક્રિયા. અખ્બારોં મેં સેંકડો સફહે કાલે હો ગયે. લેકીન કિસીને ઉપર કી આયત કો સામને રખકર યે નહીં સોચા કે યે ખુદાઈ પક્કઝ ઓર ક્રિયામત ખૈઝ મન્ઝર ઉન લોગોં કી વજહ સે હુવા જો ઉન મુકદ્દસ મુકામોં પર બુરાઈયાં ફેલાતે હે. ખુદાઈ પક્કઝતો આમ હોતી હે. ઉસ્કી પક્કઝમેં નેક ઓર બદ હરતરહ કે લોગ આતે હે.

ઈસ લીયે હુજ્જલે કિરામ સે ગુજરીશ હે કે માલે હલાલ સે હજ્જ કરે હરામ ચીઝોંકી ખરીદો ફરોખ્તસે બચે. દુન્યવી ગર્જ ઓર મક્સદ, સેર તફરીહ ઓર નામવરી કી ગંદગીસે ઈસ પાક ઓર મુકદ્દસ સફરકો નાપાક ન કરે. ખાલિસ અલ્લાહકી રઝા કે લીયે સચ્ચે આશિક બનકર જાયે.

અલ્લાહતઆલા અપને જીસ બંદેકો ભી ઉસ્કી તૌફીક દેતે હે ઉસ્મેં બનાવટ ઓર દિખાવે કો પસંદ નહીં કરતે બલ્કે વો ચાહતે હે કે મેરા આશિક ઈસ હાલમેં આયે કે પરાગંદા હાલ ઓર પરાગંદા બાલ હો. આજીઝી ઓર નરમી કે સાથ ગિરતા પડતા ખોફ ઓર ડર કે સાથ ફકીરોંકી તરહ હાજર હો.

ઓર અબ યે જો રિવાજ હો ગયા હે કે હાજીયોં કો ફુલોં ઓર નોટોં કા હાર પહેનાતે હે. યા સફરમેં જાને સે પેહલે દઅવતોં કા ખુબ એહતિમામ કરતે હે. રિશ્તેદારોં ઓર પડોશીયોંકો જમા ક્રિયા જતા હે ઓર વિદાય કરને કે લીયે લોગ ભારી ભીઝ બનાકર રશ્તેશન ઓર હવાઈઅડે પર જાતે હે. ઓરત ભી ઉસ્મેં શરીક હાતી હે. મદાં ક મઝામોં મેં બ પદા ફીરતી હે. તસ્વીરે લી જાતી હે. યે ખાતેં શરીઅત કે ખિલાફ ઓર ગલત હે. એક શખ્સકી વજહ સે સેંકડો લોગ બડે બડે ગુનાહોંકો કરતે હે. અલ્લાહતઆલા કા શુક્ર અદા કરને કે બજાયે હમ ગુનાહોં કા બોજ અપને સર લાદતે હે. યે કિન્તી બડી મેહઝમી હે. અલ્લાહતઆલા હમારી હિફાઝત ફરમાયે.

(મહાબાર ઉબુમ - માથે - ૪૦૦૦/૧૭)

## हृज्ज में गडलत से रेहना :-

आज कल डाज्जोने ये तरीका बना लीया है के थोडी देर के लीये दरममें डाज्जर हो जते है. वरना बाजारोंमें घुमते रेहते है. और यीजें परीद परीद कर लाते है अेक दुसरेको दीअलाते रेहते है. देअनेवाले पुछते है कहांसे परीदा ? झीर वोभी न्जरत और अगैर न्जरत परीद कर लाते है. क्यामगालों पर परीदने के मशवरे यलते है. गाने सुननेमें मशगुल रेहते है. गीततोंमें मुअ्तला रेहते है. सारा सक्षर अराण करहेते है. और एंस झीकरमें रेहते है के लम अपने वतन पलुंयेतो लमारा भुअ एस्तीकआल ली. लीगोंको क्षीन के अरीये आने की तारीअसे अबरदार करते है और अे शप्स स्टेशन या अेरपोर्ट पर एस्तीकआल न करे उससे दीलगीर लीते है. और केलते है के लम उनको तअईक नलीं हेंगे. अन्दोंने लमारा एस्तीकआल नली कीया. रियाकारी और दिअलावा एआदत को अराअ करहेता है और लज्जको भी कुअुल नलीं लीने देता. धर पलुंयकर दअवतों और महेमानीयोंका सिलसीला शइ लीता है. उसमेंभी वोली रियाकारी और दीअलावा मकसुद लीता है.

पीछले अमानेमें मकका शरीकका तौलइ आअे अमअम और मदीना शरीकका तौलइ अन्जुरोंको समअ जता था. लीग यली यीजें ले जते थे. और अस्को अेक कतरा अमअम और आधी अन्जुर मील जती थी. वो भुशीसे कुला नलीं समाता था. आज लीगों के दीलोंमें एन यीजोंकी कोए हैसियत नली रली. अलके चीन, अापाना, और युरीप, अमरिका की यीजों को सब से अडा तौलइ समअने लगे है. डाज्ज साळेअान अपने अेटों और दामादोंको और मीलने अुलनेवालों को एन्दी यीजों का तौलइ देने की इकर करते है और मकका मदीना की बाजारोंमें आस आस नामों की धडीयो और आस कंपनीओकी टेप, रेडीयो तलाश करते है और अेक अदतरीन सुरतेआल ये सामने आ गया है के दरमैन से टी.वी. और वी.सी.आर. परीद कर ले जते है. और धरों को अे आप-दादाओ के अमाने से एलमो अमल का गेअवारा था. अदतरीन इलमों और ड्रामोंसे गंदा कर हेते है और मौनुदा और आएन्दा आनेवाली नसलों को अिगाडने का सामान नमा करते है.

(मआअिरे उलुम-१/२००२/१४)

जुस कीसीको उज्ज या उमरु करना हो उसको लाजीम है के उज्ज और उमरु के अलकाम मालुम करे.

अइसोस है के आब कल बहोत से लोग उज्ज और उमरु के वीये यव हते है और जरा भी उसके अलकाम मालुम नहीं करते तल्बीयल तक नहीं जतने. इराईज और वाज्जबात तक छोड हते है. और जब कोई आलीम बताने लगता है तो उसका बताना ना गवार होता है.

إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ (अन्वाइल बयान-१/२१७)

### नइली हज्ज :-

(बयान मौलाना अलीमीयां नदवी (२.अ.) उज्ज-१४०१)

उज्ज के सिलसिलें में बहोत जयादा तवज्जुल और अक आलमगीर कीशीष और अक मुस्तकील मुलीम (बडा काम) यवानेकी जरुरत है. वो नइली उज्ज के साथ मुफ्तवीइ अगराज और मकसद से उज्ज करनेवालों की कसरत है. ज्जस्ने इर्ज उज्ज करनेवालों और लुकुमत दोनों के वीये सप्त दृश्वारीयां और मुश्कीवात पैदा कर दी है और उज्जकी नेकनामी और ईज्जत को सप्त नुकसान पहुंचाया है. बल्के ईस्लाम की ईज्जत को दाग लगाया.

नइली उज्जका मामला भी उल्मा और अहले बसीरतके वीये नजरे सानी और काबिले तवज्जुल बन गया है. सइर करनेकी सलुलतें दीवत की पारगार राउही अरब में रोजगारी और दीवत दाखिल करगें के मौको ने मस्अले को और पेरीदा बना दीया.

ईमाम गिजाली (२.अ.)की मशहुर किताब अलयाउल-उलुम में ईस नइली और हुन्वी मकसदके वीये बारबार उज्जकी अदायगी पर (मालुम होता है के उनके जमाने में भी ये जान पैदा हो गई थी)बड़ी लकीमत पसंदाना और इकीडाना तन्कीह की है. ईस सिलसिले में इकीले उम्मत सलाली अरसुल (स.अ.प.)उज्जत अहुदुल्लाह बीन मस्जिद (२ही)का अक लकीमाना कौल नकल किया है ज्जस्को पढकर ये सेलसुस होता है के ईस जमाने को देनकर इरमा रहें है. ईमाम गिजाली (२.अ.)वीजते है.

“ईन दीवतमेंदो में बहोत से लोगों को उज्ज पर इपिया अर्थ करने का बडा शौक होता है. वो बारबार उज्ज करते है और कभी असा

डोता है के पडोशीओं को लुभा छोड देते है और उज्ज्व करने यले जेते है.

उजरत अब्दुल्लाह बीन मरउद (रही.) ने सही इरमाया है के आभीर जमाने में बीला उजरत उज्ज्व करनेवालों की कसरत होगी. सइर उन्को बहुत आसान मालुम होगा. इपियों की उन्के पास कमी न होगी. वो पुद रेगीस्तानों और यद्वीयल मैदानों के दरम्यान सइर करते डोगे. और उन्का पडोशी उन्के पेडलु में गिरकतारे बला डोगा. उस्के साथ कोई सुलुक और गम ज्वारी नही करेंगे. (अडयाउल उलुम-३-३४५)

ये अक पुरी दास्तान है. बाज लोगोंने बताया के अक मुल्कके आम्भार में छपा है के आज सोने का भाव ईत्ना है. और डालियों के जडाल के आने के बाद ये डो जयेगा.

कीसी केडनेवाले ने सय कडा है के उज्ज पर डाका डावा ज रडा है और उज्ज की मीद्वी पलीद की ज रही है. ईससे बी गीर कर गेर आम्बलाकी मकसद और नके के लीये (जुन्का नामबी जमान पर लाना अरफ़ मालुम नही डोता) मुस्तकील ओन्सीयां काईम है. ये अक पास मौलु है. और ईस पर अक पास निजाम के साथ तवज्जुड देने की उजरत है. (अल कुरकान-१२/१८८१/१७)

### बडा उमराह :-

अक जातुनने नबीये करीम (स.अ.व.) से पुछा या रसुलुल्लाह (स.अ.व.) कोई ऐसा नेक अमल बी है. जे आपके साथ उज्ज करने के बराबर डो !

ईशाद इरमाया रमजानुल मुबारक में उमरा करना मेरे साथ उज्ज करने के बराबर है. (मरन्दे अडमद)

उज्ज तो सालके पास दीनों में डोता है. लेकिन उमरड साल बर कीया ज सकता है. अलंबत पांय दीन मना है. यानी उज्ज के दीनों मे. (८ ज्जुड से १३ ज्जुड तक).

उहीसोंमें उमरड को उज्जने असगर कडा गया है. जे उस्की इजीलत के लीये निडायत उंया उन्वान है. और रमजानुल मुबारकमें यही उमरड सवाबके अतिबारसे ईस उज्ज के बराबर डो जाता है. जे नबीये

करीम (स.अ.व.) के साथ कीया गया।

ईसी वीये सडाबा (र.टी.) और सड्के सालेडीन रमजानुल मुबारक में अेक उमरुड ङरुड कर वीया करते थे. और आन्वनी मुसलमानों में ये अमल ञरी है. (इराभीने रसुल (स.अ.व.) २२७)

### गैरों को का'बा में ञाने से रोकना :-

बाळ लोग ये पुछते है के मुसलमानों के यहाँ ये कानुन है के कोई गेरमुस्लिम का'बामें नही ञ सकता है. अब अगर कोई ईस्लाम को समञ्जना याहे तो वो केसे ईस्लाम समञ्गेगा ?

बात ये हैके ईस्लामको समञ्जने के वीये मकका ञकर का'बा को देपने की ङरुडत नही. उजारों मुसलमान ञे उञ्जकी ताकत नही रभते वो का'बा को देपे बगैर मर ञते है. उसके बावजूद उन्को मुसलमान ही माना ञता है. का'बा न देपने की वञ्जसे उन्के ईस्लाम में कोई कमी नही आती.

ईस्लाम को समञ्जने के वीये आपको कुआन और उदीस और सीरतें रसुले अकरम (स.अ.व.)का मुतावा करना याहीये. यही यीजें ईस्लाम का असल माभळ (असल बुनियाद) है. का'बा की जयारत का तअल्लुक ईस्लाम को समञ्जने से नही है. बल्के ईस्लाम को मान लेनेके बाद उसके अलकाम की तामील से है.

का'बा या बयतुल्लाह में ञने की सिई गैर मुस्लिमोंके वीये मनाई नही है. बल्के उन मुसलमानों के वीये भी मनाई है. ञे उरमे का'बा में दाभिल छोकर वहाँ कीसी को सतायें या पुन बढायें. यहाँ तक के कीसी ञनवरका भी.

ईस तरुड दोनों ईकी के वीये का'बा में दाभिल होने की मनाईका सबब "का'बा"को पाक रभना है. मुसलमानों पर ये पाबंदी ईस वीये है के वो बयतुल्लाह को अपनी सियासत का अडा न बनायें और गेरमुस्लिमों पर ञे पाबंदी है वो ईसवीये ताके वो उस्को बुतों का अडा न बनायें. ञैसा के आप ञनते है के पयगंबर ईस्लाम से पेलवे वहाँ ये पाबंदी नही थी: ईस्का नतीजा ये हुवा के बुतपरस्त लोगों ने अपने अपने बुत लाकर वढ रभना शुर् किये. यहा तक के वो उ६० बुतोंका

મરકજ બન ગયા. મૌજુદા પાબંદી ઈસ લીય હે ક ય તારીખ દાબારા કા'બા મેં દોહરાઈ ન જા સકે. (અલ રિસાલા-૮/૨૦૦૧/૨૯)

### ખાન-એ-કાબા કી નિગરાની :-

ઈ.સ. ૨૦૦૧ અરબી રોઝ નામા અલ ઈકતીસાદીયહ કે નુમાઈન્ટે ને શેખ અ.અઝીઝ શૈબી કે સાથ ખાન એ કાબા કી નિગરાની કે સિલસીલેમેં બાતચીત કી. મુલાકાત કે દૌરાન ઉન્હોં ને બતાયા કે શાહ અ. અઝીઝ (મર્હુમ) ઓર ઉન્કે બાદ ઉન્કે સાહબઝાદે શાહ સઉદ, શાહ ફૈસલ, શાહ ખાલીદ ઓર ખાદીમે હરમૈન શરીફૈન શાહ ફહદ બીન અ.અઝીઝ યે તમામ કે તમામ હઝરાત હર સાલ ગુસ્લે કાબા ઓર બયતુલ્લાહ પર નયે ગીલાફ ચઢાનેકા અહેતેમામ કરતે રહેતે હૈ. ઉન્શે હોને વાલી બાતે યલાં લીખી જાતી હે.

સવાલ : બહોતસે લોગોમેં યે બહસ પાઈ જાતી હે-ઓર વો જાનના-ચાહતે હે કે કા'બા કે અંદર ક્યા ક્યા ચીઝેં મૌજુદ હે ?

જવાબ : કા'બાકે અંદર કોઈ ભી ચીઝ મૌજુદ નહીં હે. યે એક ખાલી કમરા હે. જીસ્મે ત્રીન સુતુન ઓર છત પર જાને કે લીયે એક દરવાઝા હે. જીસ્કો “બાબે તૌબા” કહેતે હૈ.

દુસરી તમામ આસારે કદીમહ (પુરાની ચીઝેં) ઉસ્માની દૌરમેં તુર્કી કી અજાયબ ઘરો મેં મુન્તકીલ હો ગઈ થી. કા'બા કે અંદર “મુઅલ્લકાતે સબ્આ ” (સાત પુરાને બડે શાયરોં કે કસીદોં) કા ભી વુજુદ નહીં યે ગલત બાતે હૈ. અલબત્તા કા'બા કે અંદર એક સંદુક જરૂર હે. જીસ્મે અર્કે ગુલાબ ઓર ઝમઝમ રખ્યા જાતા હે. જીસ્સે કા'બા કે અંદરની દિવાલોં કો ગુસ્લ દીયા જાતા હે.

સવાલ : શૈબી ખાનદાન કે પાસ કા'બા કી કુંજી કબસે હૈ. ?

જવાબ : હુઝુર (સ.અ.વ.) સે ત્રીન હઝાર સાલ પહેલે હમારે ખાનદાન કે લોગ કા'બા કે કલીદ બરદાર (કુંજી રખનેવાલે) હૈ. ઓર જબ રસુલે અકરમ (સ.અ.વ.) ને મકકા ફત્હ કીયા ઓર હમસે કુંજી લેના ચાહી તો અલ્લાહ તઆલાને કુર્આન મજીદમેં આયત નાજીલ ફરમાઈ. અલ્લાહ તુમહેં હુકમ દેતા હૈ કે અમાનતે

अडेले अमानत को सुपर्द करदो. (सुरअे निसाअ)  
 एस पर रसुलव्वाड (स.अ.व.) ने इरमाया ले जओ कुंज  
 अय बनी सयबा ये तुम्हारे पास डमेंशा डमेंशा रहेगी. तुमसे  
 कुंज छीनने वाला जलीम है. एस इरमान के बाद ये याणी  
 डमसे कीसीने छीनने की छिम्मत नहीं की के एस तरड  
 रसुलव्वाड (स.अ.व.) के डकम के गिलाइ वजीं डोती है.

सवाल : आनाअे का'बा को गुस्व देने में कीन्ता वक्त लगता है ?

जवाब : आनाअे का'बा को गुस्व देने में सिई अेक घंटेका वक्त अर्य  
 डोता है एस शराइत से इेजयाब डोने के वीये वोगों को आस  
 दावत दी जाती है जस्में मुक्क के जम्मेदार और अमीर बी  
 शरीक डोते है.

सवाल : गुस्व देने का तरीका क्या है ?

जवाब : का'बा की दिवालोंको आबे जमजम, गुलाब के अई और  
 मलमल के कपर्डों की मद्द से डोया जाता है. इीर का'बा के इश  
 को गुस्व दीया जाता है और आगिर में का'बा को डेद की  
 डुनी दी जाती है.

सवाल : का'बा की कुंज का विरसा कीस तरड मीला करता है और  
 उसके वीये आपके यहां क्या तरीका है ?

जवाब : शैबी आनदान में ये कुंज आनदान के सडसे बडे के पास  
 डोती है उन्की वइत के बाद उन्के अनशीन (नार्डब) को  
 मीलती है. सडेदी दौर में ये कुंज शेअ अमीन के पास थी.  
 उसके बाद शेअ ताडा के पास आई लेकीन शेअ ताडा ने अपनी  
 सेडत की अराणी की वजड से ये जम्मेदारी संबालने से  
 मअजूरत कर दी. तो ये कुंज मेरे सुपर्द डुई और अब में का'बा  
 के मुतवल्ली आनदान का सरबरड (मुन्तजीम) डुं.

सवाल : का'बा का गिलाइ उतार कर जब आपको दीया जाता है तो  
 क्या उसके इरोप्त कर दीया जाता है या तोडके के तौर पर  
 तकसीम कर दीया जाता है ?

जवाब : पडेले शैबी आनदान डी का'बा पर गिलाइ यढाया करते थे.



જાતા. કુર્આન હદીસ મેં સાબેરીન ઉન્હી લાંગોં કા લકબ હે જાે તીનોં તરહ કી સબર મેં સાબિત કદમ હો.

એસી સબર કરનેવાલોં કો કયામત મેં યે કેહકર પુકારા જાયેગા કે સાબેરીન કહાં હે ? તો વો લોગ જાે તીનોં તરહ કી સબર પર કાયમ રેહ કર છંદગીસે ગુજરે હે વો ખડે હો જાયેંગે. ઓર ઉન્કો બગેર હિસાબ કે જન્મત મેં દાખિલ હોને કી ઈજાઝત હો જાયેગી.

કુર્આનમજીદ મેં અલ્લાહતઆલા કા ઈશાદિ હેં કે અલ્લાહતઆલા સબર કરને વાલોં કે સાથ હે. ઓર યે જાહિર હે કે જીસ શખ્સકે સાથ અલ્લાહતઆલા કી તાકત હો ઉસ્કા કૌન સા કામ રૂક સકતા હે ? ઓર કૌન સી મુસીબત ઉસ્કો આજીઝ કર સકતી હે. ? (મ-કુ-૧/૩૩૮)

### સબર એક ઈબાદત :-

નમાઝ કા વકત આને પર ઈમાનવાલે નમાઝ અદા કરકે સવાબ હાસિલ કરતે હે. ઈસી તરહ જબ રમઝાન કા ચાંદ નજર આતા હે તો વો રોઝા રખકર અપને આપકો સવાબ કા મુસ્તહીક બનાતે હે.

ઈસી તરહ એક ઓર બડી ઈબાદત હે જીસ્કો શરીઅત મેં સબર કહા જાતા હે. સબર એક ઈબાદત હે. બલકે ઈબાદતોં મેં બડી ઈબાદત હે.

નમાઝ ઓર રોઝોં કે લીયે અવકાત કી પાબંદી જરૂરી હે. વકત આને સે પેહલે ઉન્કી અદાયગી સે સવાબ હાસિલ નહી કર સકતે. યહી મામલા સબર કા હે. સબર કી ઈબાદત સબર કે હાલાતમેં અંજામ દી જા સકતી હે. સબર કા મોકા ઉસ વકત પેશ આતા હે. જબ કે કોઈ નાપસંદ બાત પેશ આ જાયે યા કોઈ તકલીફ પહુંચે યા ઈબાદત કી અદાયગી મેં તકલીફ બરદાશત કરના ઓર મુજાહીદા કરના પડે તો યે ઈન્કે લીયે સબર કી ઈબાદત કા મોકા હે. લિહાઝા સબર કે વકત સબર કા ઈસ તરહ ઈસ્તિકબાલ કરે જીસ તરહ નમાઝ રોઝે કે વકત ઉન્કા ઈસ્તિકબાલ કરતે હે.

સબર કા મોકા ઈબાદત કા મોકા હે. એસા મોકા આને પર આદમી કો યકીન કરના ચાહીયે કે વો વકત આ ગયા હે કે સબર કા સુબુત દે કર વો ખડે સવાબ કે મુસ્તહીક બન જાયે. (દીને ઈન્સાનિયત-૧૪૮)

### બડા બદલાં આખિરત મેં :-

તફરીરે મઝહરી મેં લીખા હે કે મોમિન અગર યે દુનિયા કી ફલાહ કા

व्ही प्वाडीशमंद खोता ले मगर आगिरत का र्शरादा गाविन रेलता ले. एंस वीये उस्के दुनिया ब कदरे न्जरत ही भीलती ले. और बडा बदला आगिरत वी में पाता ले.

डजरत उमर (रही.) डुजुर (स.अ.व.) के मकान पर तशरीक ले गये. तो घर में कुछ गीनी युनी डुई (थोडी) रीजों के सिवा कुछ न देपा. तो अर्ज किया. या रसुलुल्लाह (स.अ.व.) हुआ इरमाईये के अल्लाहतआला आपकी उम्मतको दुनिया की वस्अत (कुशाहगी) नसीब इरमा दे. क्युं के डम इरस और इम को देपते है. के वो दुनिया में बडी वस्अत और इराफी में है. डालां के वो अल्लाहतआला की एंभाहत नहीं करते.

डुजुर (स.अ.व.) तकीया से कभर लगाये डुअे थे. डजरत उमर (रही.) की ये बात सुन कर सीधे बैठ गये और इरमाया. अय उमर ! तुम अबतक एंसी भ्यावमें पडे हो ये तो वो लोग है अन्की नेकीयों का बदला उन्हे दुनिया में दे दीया गया. (म.कु.-४/६०५)

### सबर की तालीम :-

कुरानिमअह में बार बार सबर की तालीम की गई ले.

✽ जे मुसीबतें तुम्हारे उपर पडे उन पर सबर करो.

(सुरअे लुकमान-१७)

✽ सबर करो अल्लाहतआला सबर करनेवालों के साथ ले.

(सुरअे अन्फाल-४६)

✽ घाटे (नुकशान) से मडेकुज रेलने वाले लोग वो है जे अेक दुसरे को डककी नसीहत करे और अेक दुसरे को सबर की नसीहत करें.

(सुरअे अस्स-३)

एंसी तरह डहीसमें कसरत से सबर की अडमियत बताई गई ले.

डुजुर (स.अ.व.) ने एंशई इरमाया :-

✽ सुनो और मानो और सबर करो.

(मस्नदे अडमद)

✽ अल्लाहने सबर और माफी और दरगुजर का डुकम दीया है.

(अबुदावुद)

✽ अेक सडाबी (रही.) इरमाते है के रसुल (स.अ.व.) और सडाबा (रही.) इंमेशा एंजाओं पर सबर करते थे.

(बुपारी)

उकीकत ये हे के सभर ईस्वामी अमल की बुन्याद हे. इतिनों और आजमाईशों की ईस दुनिया में सभर के बगैर कोई आदमी ईस्वामी किरदार पर कायम नहीं रहे सकता. जस आदमी में सभर की सिद्धत हो उसके अंदर तमाम सिद्धत होगी. और जस्के अंदर सभर की सिद्धत न हो वो आभिरकार तमाम सिद्धतें कमाव से मेहड़म हो जयेगा.

### सभर जउरी :-

कुआन मज्जद की तकरीबन दौसो आयतें बराबे रास्त तौर पर सभर से तअल्लुक रખती है. और बाकी आयतें ईशारतन सभर के मुतअल्लीक है. गोया कुआन मज्जद की तमाम तालीम सभर पर ताकीद करती है. ये केडना सही होगा के कुआन सभर की किताब है.

कुआन मज्जद के मुताबिक ईन्सान को कबद (मशककत) में पैदा किया गया है. ऐसी डालत में कीसी के लीये ये मुम्कीन नहीं है के वो यहाँ भुशीयों और मसरतों की जंघगी बना सके.

मिसर में बनी ईसराईल से तअल्लुक रખनेवाला अक शप्स काइन नाम का था. वो डजरत मुसा (अल.) के जमाने में था और आपका रिशतेदार था. उसने दुनियादारी और मस्लेहत पसंदी के जरीये बडोत जयादा दौलत जमा करली थी. कुआनमज्जद में ईस्का बयान किया गया है के अक बार वो पुरी जीनत और नुमाईश के साथ अपनी कौम के सामने नीकला. बनी ईसराईलकी कौम के कुछ लोगों को उस पर रशक आया. उन्होंने कडा के काश ! डम को भी वही भीलता जे काइन को दीया गया है. बेशक वो बडी किस्मतवाला है. (अल कसस-७८)

उस्के बाद कुआनमज्जद में ईशाई डुवा है के बनी ईसराईल में कुछ ईल्म वाले लोग थे. उन्होंने कडा के तुम्डारा बुरा हो. अल्लाड का ईनाम जयादा बेहतर है. उस शप्स के लीये जे ईमान लाये और नेक अमल करे और ये ईन्डी को भीलता है जे सभर करनेवाले है.

وَمَا يُلْقَاهَا إِلَّا الصَّابِرُونَ (پ २०. ११)

यहाँ ईस आयत से क्या मुराद है? तइसीरों में नीचे लीपे गये अकवाल आये है:

ईस कौल की तौईक उन्डी को भीलती है जे सभर करनेवाले है.

आमावे सावेला को वोली पाते है जे सबर करनेवाले है. जन्मतको वोली पाते है जे सबर करनेवाले है.

ईमान और अमल और जन्मत के साथ सबर क्युं ईत्ना जयादा जुडा हुआ है. उसकी वजह ये है के मौजूदा दुनिया आजमाईश की दुनिया है. ईस बीनापर यहाँ तरल तरल की रूकावटे पेश आती है. कभी कोई लडकाने वाला उसको लडकाता है. कभी कोई मामला ईत्ना बढ़ता है के वो उसके वीचे ईज्जत का सवाल बन जाता है. जैसे तमाम मौको पर अपने आपको सीधे रास्ते पर कायम रखने के वीचे सबर की ताकत की जरूरत होती है. सबर नहीं तो ईमान नहीं. सबर नहीं तो आमावे सावेला नहीं. सबर नहीं तो जन्मत नहीं.

सबर दुनिया व आगिरत की तमाम काम्याबीयों की कुंज है.

(दीने ईन्सानियत-६१-१३४)

हर तजुर्बे कार अकलमंद जनता है के दुनिया में हर बडे मुकसद के वीचे बलौत सी बातें तबीयत के खिलाफ बरदाश्त करनी पडती है. जिस शप्स को मेलनत और तकलीफ उठाने की आदत और तबीयत के खिलाफ चीजों का बरदाश्त करने की हिम्मत हो जये वो अकसर बडे मुकसदों में काम्याब होता है.

इदीस में रसुले अकरम (स.अ.व.) का ईर्शाद है के सबर ऐसी नेअमत है के उससे जयादा बडी नेअमत कीसी को नहीं मीवी.

(अबुदावुद)(म.क.-४/४१)

## दुनिया ईम्तिहान की जगा है :-

आलमी तारीख की किताबें पढने से ऐसा मेलसुस होता है. जैसे पुरी दुनिया खंगामों की तारीख है तारीख में बलौत कम जैसे लम्हात मीवते है जहमे सुकुन वाले माखोल में ईन्सान को खने का मौका मीला हो. तारीख के ईस मंजर को देखकर कुछ लोग खुदा की खुदाई पर रशक करते है. वो केहते है के खुदा अगर अहलो ईन्साइ करनेवाला है तो उसकी बनाई हुई दुनिया में ईत्ना बिगाड क्युं है ?

ईस मामले को समजने के वीचे कुर्आनिमजहद के मुताबिक काईनात का ये नकशा ईम्तिहान के उसुल पर बनाया गया है. मौजूदा दुनिया में

पुदाने ईन्सान को ईसवीये नही बसाया के वो यहाँ ऐश करे. ऐश की छंदगी ईन्सान को उसके अमल के मुताबिक आभिरत में भीवेगी. मौजूदा दुनिया का तमाम निजाम ईस ढंग पर बना है के हर ईन्सान और हर पार्टी ईम्तिदान की कसौटी पर आ सके.

इकीकत ये है के दुनियामें जन्नती छंदगी का भीवना मुम्कीन नहीं. ईस दुनियामें याहे किन्ती ही जुबसुरत जगा बनाई जाये मगर वो ईन्सान को इकीकी पुशी न दे सकेगी लजुर (स.अ.व.) ने ईसी इकीकत की तरफ ईस तरफ ईशारा इरमाया है. **الَّذِينَ لَا عَيْشَ إِلَّا عَيْشَ الْآخِرَةِ.**

तजुरबा बताता है के दरम्यानी डालातमें कीसी ईन्सानकी असल इकीकत का पता नहीं चलता. लोग जुबसुरत लइओ और पुशनुमा कपडोंमें अपने आपको छुपाये रहते है. ऐसी डालतमें लोगों को अकसपोज करने के लीये जरूरी होता है के उन्की छंदगीमें बेयेनी (disturbance) लाया जाये.

ईस मामले में ईन्सान की मिसाल अंडे जैसी है. उपर से देखने में हर अंडा अरखा ही मालुम होता है जब अंडो को तोडा जाये उस वकत ये मालुम होता है कौनसा अंडा अरखा था या कौनसा भराब.

अल्वाइ तआला को ईस दुनिया में सबसे जयादा जे यीज मतलुब है वो ईम्तिदान है. और ईम्तिदान के लीये गेर मामुवी डालात का पेश आना लाजमी है. ईस लीये बार बार हर आदमी और पार्टी की छंदगीमें गेरमामुवी डालात पैदा कीये जाते है ताके ये मालुम हो के इकीकत के अतिआर से कौन कैसा था. वो सही माअनोंमें डकक परस्त था या उसने सिर्फ जहरीरी तौर पर डकक की नुमाईश (दीजलावेका) गिलाइ अपने उपर डाल लीया था.

### मुश्कील के बाह आसानी :-

कुर्आनमज्जद सुरअे ईन्शराइ (पा-३० आयत-५-६) में ईशदि है. मुश्कील के बाह आसानी है. बेशक मुश्कील के बाह आसानी है.

ईस आयतमें इतिरत का अक कानुन बताया गया है. जइस्को पुदाने अबदी तौर पर दुनिया में कायम कर रखा है. आदमी याहे कीसी भी मुल्क में लो. याहे वो कीरी जमाने में लो. याहे वो कीरी डालत में लो हर

જગા ઓર હર હાલ મેં વો ફિતરત કે ઈસ કાનુન કો મૌજુદ પાચેગા.

મૌજુદા દુનિયા ઈસ ઢંગ પર બની હે કે યહાં કીસી ભી શખ્સ કે લીયે હંમેશા એક જૈસે હાલાત નહીં હોતે. મગર કુઆન મજહદ કે ઈશાદિ કે મુતાબિક યહાં ખુદા કા યે કાનુન યે બતાતા હે કે કીસી ભી હાલ મેં ઈન્સાનકો બદદીલ યા પસ્ત હિમ્મત નહીં હોના ચાહીયે.

કયુંકે હર મુશકીલ, હર મેહરૂમી ઓર હર હાદેસા મેં હંમેશા એક નયા ઓર બંહતર ઈમ્કાન છુપા હુવા હે. ના મુવાફિક હાલાત ચેલેન્જ બનકર આદમીકો ઝીંઝોડતે હે. વો ઉસ્કી છુપી હુઈ સલાહીયતોં કો બેદાર કરતે હે. ઈસી તરહ હર ના મુવાફિક ઝટકા આદમી કે લીયે તરકકી કા સબબ બનતા ચલા જાતા હે. યહાં તકકે વો એક ગેરમામુલી ઈન્સાન બન જાતા હે.

હકીકત યે હે કે જંદગી કે મસાઈલ ઈન્સાનકે લીયે મુશીબત નહીં. વો ઈન્સાન કે લીયે તરકકી કા સબબ હે. યે મસાઈલ ઈન્સાનકો બેદાર કરતે હે. વો ઉસ્કી સોયી હુઈ સલાહીયતોં કો હરકત મેં લાતે હે.

મસાઈલ જંદગીકા એક લાઝમી હિસ્સા હે. યે એક મુકીદ હિસ્સા હે. ન કે નુકશાન કા હિસ્સા. જે લોગ ઈસ હકીકતકો જાન લે વો બે ફાયદા ચીઝોં મેં અપની તાકતકો બરબાદ નહીં કરેંગે. વો જંદગી કી આલા તા'મીર મેં યકીની તૌર પર કામ્યાબ રહેંગે.

### બે સબરી - બે બરકતી :-

ઈકબાલ મુસલમાનોં કે મેહબુબ શાઈર ઓર રેહનુમા હે. ઉન્હોંને અપને એક શેઅર મેં મુસલમાનોં કો મુખાતબ કરતે હુએ કહા કે તુમ કુઆન કો છોડને કે નતીઝે મેં જલીલ ઓર રૂસ્વા હુએ. મગર અપની નાસમજીસે તુમ ઝમાને કી ગરદીશકી શિકાયત કર રહે હો.

ખવાર અઝ મેહજુરી એ કુઆનશુદી- શિકોહે સન્જ ગરદીશે દૌરા શુદી મુસલમાનોં કે તમામ ઉલ્મા ઓર દાનિશવર પીછલે ૭૦ સાલસે ઈસ શેઅરકો દોહરા રહે હે. કીસી એક કો ભી ઈસસે ઈખ્તિલાફ યા એઅતિરાઝ નહીં. અબ ગૌર કીજીયે કે કુઆન છોડને કા કયા મતલબ હે ?

ઈસ કા યે મતલબ નહીં હો સકતા કે કુઆન મુસલમાનોં કે ઘરોં મેં મૌજુદ નહીં. યા ઉસ્કી તબાઅત ઓર ઈશાઅત બંદ હો ગઈ હે. યા ઉસ્કી

તિલાવત કરનેવાલે દુનિયામં નહીં રહે.

ઈસ્કા મતલબ યેભી નહીં કે મુસલમાનોં ને નમાઝ રોઝા, હજજ ઓર ઝકાત કે અહકામ છોડ દીયે હે. ઈબાદતેં એક હદ તક મુસલમાનોં મેં પાથી જાતી હે. મકામી મસ્જીદોં સે લેકર મકકા ઓર મદીના કી મસ્જીદ તક હર જગા બડી બનાઈ જ રહી હે. ઉસ્કે બાવજુદ મસ્જીદે નમાઝીયોં કે લીયે તંગ હો રહી હે.

ઈસ્કા મતલબ યે ભી નહીં કે ઈસ્લામી ઈદારે, ઈસ્લામી જમાઅતે, ઈસ્લામી તેહરીકે, ઈસ્લામી કોન્ફરન્સે આજ કી દુનિયામં નહી હો રહી હે. યે સબ કામ આજ હંમેશાસે ઝયાદા હો રહે હે. ઈસ્લામ પર આજ જીત્ના લીખા ઓર બોલા જ રહા હે. ઈત્ના પહેલે ન લીખા ગયા ન બોલા ગયા થા.

ફીર કુર્આન છોડને કા કયા મતલબ ? ગૌર કીજીયે તો કુર્આન કી એક હી તઅલીમ એસી હે. જીસ્કો મૌજુદા ઝમાને કે મુસલમાનોં ને પુરે તૌર પર છોડ રખા હે. ઓર વો સબર કા હુકમ હે. મૌજુદા ઝમાને કે મુસલમાન સબર કે શુઉર સે ઈત્ના ઝયાદા બેગાના હો ચુકે હે કે વો સબર કો બુઝદીલી ઓર હાર કે હમમાઅના સમજતે હે. હાલાં કે કુર્આનમં તમામ ઈબાદત ઓર અહકામ સે ઝયાદા સબર પર જર દીયા ગયા હે.

મુસલમાનોં ને તમામ કુર્આન કો નહીં છોડા - ઉન્હોંને કુર્આન કી સિફ એક તાલીમ (સબર) કો છોડ દીયા. (૧૧૯. ૨૩) وَمَا يَنْفَعُ الْإِنْسَانَ صِرْفًا

ઓર ઉસ્કા નતીજા યે હુવા કે વો કુર્આન કી તમામ બરકતોંસે મેહઝમ હો ગયે.

### તંગી કા હલ :-

હુઝુર (સ.અ.વ.) ને ઈર્શાદ ફરમાયા કે “કુશાદગી કા ઈન્તિઝાર કરનાં એક અફઝલ ઈબાદત હે. (તિર્મીઝી)

હર ઈન્સાન ઓર હર કૌમ કો એસે હાલાત પેશ આતે હે જીન્મં વો અપને આપકો તંગીમં મેહસુસ કરતે હે. એસે મૌકે પર અકસર લોગ તંગી કો એક મુસ્તકીલ હાલત સમજ લેતે હે. ઓર ઉસ્કો ફૌરન દુર કરને કે લીયે હાલાત સે લડના શરૂ કર દેતે હે. ઈસ કીસ્મ કી લડાઈ હંમેશા બે ફાયદા સાબિત હોતી હે. ઉસ્કા નતીજા તંગી ઓર મુશકીલાત મં ઈઝાફા કે સિવા

कुछ नहीं होता.

तंगी लंमेशा के लीये नहीं आती वो सिर्फ़ वकती तौर पर आती है. ऐसी डालतमें तंगीके मस्अवेका डल ये है के उसमें इन्तिज़ार की पोलीसी इप्तिथार की ज़ये. और गेर बड़री डालातको न छोडा ज़ये. बल्के इन्तिज़ार करो और देखो. (wait and watch) की पोलीसी इप्तिथार की ज़ये. ईस्का नतीज़ा ये डोगा के आदमी के जेडन का सुकुन बरबाद न डोगा. और जे कुछ डोनेवाला है. वो अपने आप वकत पर डो ज़येगा.

नज़र कोइ मस्अवा पेश आता है तो आदमीये आडने लगता है के डौरन उसका डल नीकल आये. यही असल गलती है. अगर आदमी उसको इन्तिज़ार के जानेमें डालदे तो कोइ मस्अवा नहीं.

### जामोशी की ताकत :-

डजरत उमर ड़ाडक (२.डी.) ईस्लामी तारीफके दुसरे भलीफ़ा है. उनका डोल है के “तुम लोग आतिल को डल करो उसके बारे में युप रेड कर”.

इतिरतके कानुन के मुताबिक़ ईस दुनियामें डकक को खंडगी भीलती है. और आतिल के लीये मौत मुकददर है. ऐसी डालतमें आतिलकी डलाकतके लीये सिर्फ़ इत्ना काफ़ी है के उसके बारेमें जामोशी इप्तिथार कर ली ज़ये. आतिलके ज़िलाइ भोवना या उसके ज़िलाइ डंगामा करना उसको खंडगी देना है. और आतिलको नज़र अंदाज़ करके उसके बारेमें युप रेडना उसकी मौत का सबभ बन ज़ता है.

आतिलके बारे में युप रेडने का मतलब ये है के उसके ज़िलाइ कोइ कारवाइ न की ज़ये. उसके मुकाबले में हलील बाज़ी का तरीका इप्तिथार न करीगा ज़ये. और जोशा करना सिर्फ़ उन लोगों के लीये मुम्कीन है. जे भुदाकी ताकतको ज़ने और उस पर लरोसा करे. जे लोग भुदाकी कुदरत को नही ज़नते वोही लोग आतिल के ज़िलाइ मुकाबला करके उसको खंडगी देने का सबभ बन ज़ते है.

### बरदाश्त का शायदा :-

बरदाश्त न करने का नतीज़ लडाई ज़घडा है. और बरदाश्त करने का नतीज़ अमन है.

जुस समाज में बरदाश्त करने की सिद्धत हो उस समाजमें अमनका माहोल रहेगा. और जुस समाजके लोगीमें बरदाश्तका निजाम न होगा वहां लडाईं जगडे होने लगेगे.

बरदाश्त करना अेक उम्हा अण्वाक और धन्सानी सिद्धत है. और बरदाश्त न करना अेक दुयवानी सिद्धत है. बरदाश्त करना मन्बुरी नहीं है. बरदाश्त करना अेक बहोत आवा अमल है.

कोई नागवार डालत पेश आ जये और आदमी उस्को बरदाश्त न करे तो वो अपने आपकी मुकाबले के लीये कमजोर कर लेगा. लेकीन अगर बरदाश्त से काम लेगा तो वो अपनी तमाम ताकतको मडेकुज रणता है. और वो जयादा अरछे अंदाजमें पेश आने वाली डालतका मुकाबला कर सकता है. और वो धन्ना ताकतवर हो जाता है के कीसी के लीये उस्को डराना मुम्कीन नहीं.

### अमन का हायदा :-

दुनिया के तमाम काम अमन की डालत और अमन की कोशीधसे लुअे है. सण्ती और लडाईं जगडे से कभी कोई अरछा काम नहीं लुवा. कोई पुल, कोई सडक कभी लडाईं जघडे की ताकतसे नहीं बने. सायन्सकी धन्हे और टेकनोलोजी की तरककीयां कभी सण्तीकी ताकत से लुलुदमें नहीं आयी. तावीमगाडे और रिसर्च के धंदारे कभी सण्ती के कारनामोंसे नहीं बने. लोतेका मशीनमें दलना या शीटी प्लानिंग जैसे काम अमन के ऊरीये अंजम पाये है. समाज से लेकर अवाम तक डर काम डंभेशा अमन की तदबीरों से पुरे लुअे है.

लडाईं जघडा और सण्ती अेक बुरा अमल है. और बुरे अमलसे कभी कोई तामीरी वाकेआ लुलुदमें नहीं आ सकता. ये कुदरत का कानुन है. और कुदरत के कानुनमें तण्दीली मुम्कीन नहीं.

(अल रिसाला-११/२००२/३५)

डजरत डसन बसरी (२.अ.) ने इरमाया के न्ब धन्सान का मुकाबला कीसी जैसे शण्श या न्बमाअतसे हो जुस्का मुकाबला करना उस्की कुदरत (बश)में न लो. तो जैसे वकत काम्याबी का शाडी तरीका गदी है के मुकाबला न करे. बल्के सन्न करे.

જબ કોઈ આદમી ફીસી મુકાબલેમોં તકલીફ પહુંચને પર બદલેમે તકલીફ પહુંચાતા હે યાની ખુદ બદલા લેને ફી ફિક કરતા હે તો અલ્લાહતઆલા ઉસ્કો ઉસીકે હવાલે કર દેતા હે. ફીર ચાહે વો કામ્યાબ હો યા નાકામ. ઓર જબ કે વો શખ્સ લોગોંકી તરફસે પહુંચનેવાલી તકલીફોં કા મુકાબલા સબર ઓર અલ્લાહકી મદદ કે ઈન્તેજર સે કરતા હે. તો અલ્લાહ તઆલા ખુદ ઉસ્કે લીધે રાસ્તે ખોલ દેતા હે.

(મ.કુ.૪/૫૩)

### બીવી કે સતાને પર સબર કા અજર :-

હુઝુર (સ.અ.વ.) ને ઈશાદિ ફરમાયા. જે શખ્સા અપની બદમિજાઝ બીવી ફી તકલીફ કે બરતાવ કો બરદાશત કરેગા ઉસે અલ્લાહતઆલા અંગુબ (અ.વ.) કે સબ્ર કે બરાબર અજર દેગા. જે ઉન્કો સખ્ત આજમાઈશ પર મીલા યા. ઈસી તરહ જે બીવી અપને શૌહર ફી ના ગવાર હરકતોં પર સબર કરેગી. ઉસે ફીરઓન જૈસે જાલીમ ફી મુતકી બીવી હઝરત આસીયા (ર.દી.) કે બરાબર અજર મીલેગા. ઈસ્કે બાદ ઈમામ ગઝાલી (ર.અ.) ફરમાતે હે. કે

અચ્છે અખ્લાક સે બરતાવ કા જે હુકમ શરીઅતને દીયા હે. વો સિર્ફ ઈત્ના નહીં હે કે આદમી અપની બીવીકો તકલીફ ન દે. બલકે મતલબ યે હે કે અગર બીવીકી તરફસે તકલીફવાલી બાત પેશ આવે તબબી ઉસે બરદાશત કરે. નીઝ ઉસ્કે ગુસ્સે ઓર નાગવાર હરકતકો સબ્રકે સાથ બરદાશત કરલે. અલ્લાહ કે રસુલ (સ.અ.વ.) ફી સુન્નત ફી ઈત્તિબાઅ ફી નિમ્યત ઓર જઝબેસે.

(અહયાઉલ ઉલુમ-૨/૩૭)

### બિમારી મેં સબર કા સવાબ :-

બિમારી મુસલમાનોં કે ગુનાહોં કા કફફારા હે. બિમારીયોં ફી વજહસે મુસલમાન કે ગુનાહ ઈસ તરહ ઝડતે (સાફ હોતે) હે. જીસ તરહ પતઝડ (પાનખર મૌસમ) કે ઝમાનેમેં દરખ્તોં સે પત્તે ઝડતે હે.

હુઝુર (સ.અ.વ.)કા ઈશાદિ હે કે અલ્લાહતઆલા જીસ્કો દોસ્ત રખતા હે. ઉન્કો મુસીબતોંમેં મુબ્તલા કરતા હે. ઈન સખ્ત તકલીફોં પર સબ્રે જમીલ પર બસ ન કરે. બલકે શુક ગુજર રેહતે હુએ અલ્લાહતઆલા ફી યાદસે ગાફિલ ન હો. ઉસસે હંમેશા માફી ઓર આફિયત કે તલબગાર

रहे.

उजरत ज्वाला बज्ज्यार काकी (२.अ.) अगर कीसी दीन कोठ मुसीबत नही आती थी तो रोते थे. और इरमाते थे के ऐसा मालुम होता है के आज मेरा रब मुजसे भङ्गा है. (सुलुके तरीकत-१६३)

### जोनेवाला पाता है :-

अगर आप बम्बई में है और कलकत्ता जना याहते है तो पेहले आपको बम्बई कोठ छोडना होगा. उसके बाद ही आप कलकत्ता में मौजूद हो सकते है. जे आदमी जुदा को याहनेवाला हो वो भी गोया अक कीस्म का मुसाफ़ीर है. अगर वो अपनी मंजील पर पहुंचना याहता है तो उसकी अक ही शर्त ये है के वो अपनी अगली जगा को छोडने पर राज़ हो जये उसके बाद ही वो अपनी मतलुब जुदाई मंजीलपर पहुंचने की जुशी लासिल कर सकता है.

दुनिया का निजाम कुछ ईस तरह बना है के यहाँ लेने के लीये देना पडता है. यहाँ जोने में पाने का राज़ छुपा हुआ है.

अगर आप अक नफ़ा बज्जश तिज्जरत के मालिक बनना याहते है तो पेहले अपनी पुंज उसमे अपना पडेगी. अगर आप अपने भेत में डरी भरी इंसल देभ कर अपनी आप ठंडी करना याहते है. तो पेहले अपने जीज के ऊपरीको मीट्रीमें मीला देना होगा. अगर आप दौलतमंद बनना याहते है तो ज़रूरी होगा के आप अपने आपको कुजुल अर्यसे दूर रभे.

जे दाना अपने आपको इना न करे वो दरज्जतकी सुरत ईप्तिहार नही करता. यही मामला जुदा का भी है. कोठ शज्स जुदावाला उस वक़्त बनता है जब के वो जुदा के भातिर अपने को मिटा दे. जे शज्स अपना जुदुद मिटानेके लीये तैयार न हो वो कभी जुदावाला नही बनता.

जुदाको पाने के लीये अपनेको जोना पडता है. यही अक लइज़में जुदा को पाने का राज़ है. जे शज्स अपने आपको भी पाना याहे और जुदा को भी. वो सिई अपने आपको पायेगा. ऐसा आदमी कभी जुदाको पानेवाला नही बन सकता. सबर अक बड़ादुरी की सिइत है. ईस्का मतलब ये है के दीनके अलकाम पर चलने के लीये अगर तकलीफ़ उठाना पडे तब भी उस से न डटना. नइस और शयतान का मुकाबला

करते लुअे. हीनी तकाजों पर नमे रहेना. मुआलिक उरकतों के बापुनुद पुदार्थ रास्तेको न छोडना.

उअरते उमर (रही.) का कोव ले के उमने अपनी छुंदगी का सभसे बेखतर (बलाध) सभर के अरीये पाया. (हीने ईन्सानियत-१५१)

### मोमीन का मामला :-

ईस दुनिया में दुःख और रंज भी है. आराम और ખुशी भी है. मीठासभी और कडवापन भी है. शरही भी है गरमी भी है. सब कुछ अल्लाहतआला की तरफसे है. और उसी के इरेले और लुकम से डोता है. ईस लीये ईमानवाले बंदोका ये डाल डोना याहीये के नबभी कोई मुसीबत और दुःख पेश आ जये तो मायुसी और बहदीली का शिकार नडो. बल्के ईमानी सभर और लिम्मत के साथ उसका ईस्तिकवाल करे और यकीन करे के ये सब कुछ अल्लाहतआलाकी तरफसे है. जे उमारा लकीम और करीम रब है. और वो ही उमको ईस दुःख और मुसीबतसे नजत देनेवाला है.

ईसी तरल नब डालात अकफे डो और हीली याअतें पुरी डो रही डो और ખुशी के सामान डालिख डो तो उसको भी अपना कमाल और कुव्वने गाअंफा नतीज न रागळे. बल्के ईश वफत आपने हीलमें ये यकीन ताजा करे के सब कुछ सिर्फ अल्लाहतआला का इजल और उसकी बख्शीस है. और वो नब तक याडे बाकी रहेगी. और नब वो याडे बख्शी लुई उर नेअमत छीन भी सकता है. ईस लीये उर नेअमत पर उसका शुक अदा करे. ये ईस्लाम की भास तावीम है और रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने तरल तरल शे ईस्की तरगीब और तगलीम ही है. ईश तरल तावीम पर अमल करने का नतीज ये डोता है के बंदा उर डाल में पुदा से वाबस्ता रंलता है. और दुसरा क्वापदा ये डोता है के वो कली गुशीबतों और नाकामीयों से डारता नही और रंजे गम से भी उसकी जन नही धुलती. और मायुसी उसकी अमली कुव्वतको अत्म नही कर सकती.

लुअुर (स.अ.व.) का ईशार्ह है. बंद अे मोमीन का मामला भी अखब है. उसके उर मामले और उर डाल में उसके लीये ખैर ही ખैर है. अगर उसको ખुशी और राहत पलुंये तो वो अपने रबका शुक अदा करता

है. और ये उसके लीये ज़ैर ही ज़ैर है. और अगर उसे कोई दुःख और रंज पहुंचता है तो वो (उसको भी अपने लकीम और करीम रब का इस्वा और उसकी मरज़ यकीन करते हुए) उस पर सन्न करता है. और ये सन्न भी उसके लीये सरासर ज़ैर और बरकत का सबब है.

दुःख और सुख, भुशी और गमी जैसी चीज़ें है के ज़न्से इन्सानकी ज़ंदगी कीसी वक़्तभी भावी नहीं रहती इस लीये भुदा के बंदो के दीवली सन्न और शुक्र की कैफ़ियत से इमेशा मअमुर (भरे हुए) रहते है.

(मआरिफ़ुल उदीस-२/२८८)

उज़रत अब्दुल्ला इब्ने अब्बास (रही.) दुखुर (स. अ. व.) का इश्राह नफ़ल इरमाते है के ज़े बंदा कीसी ज़ानी या माली मुसीबत में मुब्तला हो और कीसीसे उसको ज़लीर न करे और लोगोसे शिकायत न करे तो अल्लाह तआला की ज़म्मेदारी है के उसको बप्श है. (तिबरानी)

सबर का आवा इर्ज ये है के अपनी मुसीबत और तकलीफ़ की कीसी से ज़लीर न करें. और सबर करने वालो के लीये इस उदीस में मग़ज़ीरतका पक्का वाअदा फ़ीया गया है. और अल्लाहतआलाने उन्की बप्शीश का ज़म्मा लीया है. अल्लाहतआला उसपर यकीन कर के इयादा उठाना आसान इरमाजे.

(मआरीफ़ुल उदीस २/३०१)

**कौनसी तकलीफ़ रहमत और कौनसी अज़ाब ..?**

**वो तकलीफ़ ज़े रहमत है :-**

अगर तकलीफ़ आने के बाद अल्लाहतआला की तरफ़ इन्तुअ कर रहा है और दुआ कर रहा है के या अल्लाह ! मे कमज़ोर हुं, इस तकलीफ़ को बरदाश्त नहीं कर सकता, मुंजे इस तकलीफ़ से नज़ात दीजिये और दीवमें इस तकलीफ़ की शिकायत न हो. अगर ये तकलीफ़ का अहसास तो हो रहा हो और रो भी रहा हो और गमभी होता हो. लेकिन इन्तुअ अल्लाहकी तरफ़ हो और नमाज़ और दुआओ में दीव ज़यादा लगाये तो ये इस बातकी अलामत है के ये तकलीफ़ अल्लाहकी तरफ़से दरज़तकी तरक़की के लीये है. और ये तकलीफ़ अज़रो सवाब का ज़रीया है. और उसके लीये रहमत और अल्लाहके साथ मोहब्बतकी दलील और अलामत है.

**वो तकलीफ़ ज़े अज़ाब है :-**

इन्सान अगर तकलीफ़ में अल्लाहकी तरफ़ इन्तुअ करना छोड दे और अल्लाहकी शिकायत करने लगे तैसा के ये कले के इस परेशानी और तकलीफ़ के लीये मैं ही रह गया था. मेरे उपर ये तकलीफ़ क्युं आ रही है ?

ये परेशानी मुंजे फ़ुं दी ज़रही है ? वगैरह.

और अल्लाह तआला के अलकाम पर अमल करना छोड दे यानी पहले नमाज पढता था अब तकवीक़ की वजह से छोड दी. पहले जिंक और मामुलात की पाबंदी थी अब छोड दी और उस तकवीक़ को दुर करने के लीयें दूसरे ज़ादीरी असबाब तो इफ़्तियार करता हो लेकिन अल्लाह तआला से तौबा और इस्तिज़्कार नही करता और दुआये नही करता तो ये दरकतें इस बात की अलामत है के ज़े तकवीक़ उसपर आई है ये अल्लाह तआला की तरफ़ से उस पर अज़ाब और सज़ा है.

**इलाज गम और मुसीबत :-**

इजरत डालो इम्हादुल्लाह सालम (र.अ.) ने इश्राफ़ि इरमाया दुनियामें कोई चीज़ मुसीबत नही है. बल्के नेअमत है. मुसीबत भी अेक नेअमत है इससे भंटे को अजर मीवता है. आदमी को यादीये के मुसीबत पर निगाह करने के बज्जे गुनाहों के माइ होने और अजरो सवाब पर नजर रखें.

- (१) मुसीबत को कम करने का अेक नुरागा ये है के इस मुसीबत को गुनाहों का क़ुइरह और दरजत की तरक़की का ज़रीया समजें.
- (२) दूसरा नुरागा ये है के मुसीबत के वक़्त अपने नफ़्स से कहे के तुंजे इस मुसीबत पर भुदा का शुक अदा करना यादीये. अगर अल्लाह तआला यादता तो और ज़यादा मुसीबत डाल सकता था अभी तो सिई अेक डाय लीया है वो यादता तो दोनों ले सकता था.
- (३) तीसरा नुरागा ये है के कीसी अल्लाहवाले की सोलबत में वेठे उनकी सोलबत की बरकत से अल्लाह तआला की मोलबत भडेगी. इीर तकवीक़ को मखेबुण की तरफ़ से अेक नेअमत समजकर कुबुल करेगा.
- (४) चौथा नुरागा ये है के अपने गम को ज़यादा न सोये ज़त्ना ज़यादा सोयेगा इत्ना ही भडेगा.

जब तुज पर कोई मुसीबत नाज़ीव हो तो उस पर करीम लोगों की तरह सबर कर, फ़ुं के अल्लाह तआला तुमसे बेख़तर ज़नने वाला है. 

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ

وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

(५) जब दुआ और कोशिश से बात नकने तो फ़ुंइला अल्लाह तआला पर होइ हो. सिईक़! अल्लाह अपने बंदी के आरे में ख़ैर करे ला करता है-

